खिलतोड़ भूमि

खिलतोड़ भूमि

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

KHILTOR BHUMI (खिलतोड़ भूमि)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88421-90-4
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रम:

फकीरबा स्थान

चारि बजे भोरगरे अनुपलाल काका रस्तेपर सँ टाँहि देलैन-

“सिंहेश्वर छह हौ?”

ओना, नीन टुटैयेपर रहए मुदा नीक जकाँ टुटल नहि रहए। कहब जे से केना सुतलमे बुझबै जे ‘नीन टुटैपर अछि आकि अखन रहैबला काँच अछि?’ से तँ सभ बुझिते छी जे जखन एक्के आवाजे नीन टुटैए तखन ओ टुटैये-टुटैपर भेल आ जखन दू-चारि हाके वा हकवाहिसँ नीन टुटै, ओ भेल काँचोमे खिंचा काँच। कहैले ते ईहो कहल जाइए जे केकरो नीन मोट होइ छै आ केकरो पातर। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब ईहो छैन जे जगलो रही आ जँ कियो बाहरसँ नाम धऽ कऽ सोर पाड़ए तँ एक्के बेरमे उतारा नइ दिऐ। ओ भूतो-प्रेत रहैए आ मलो-मलेछ रहिते अछि। ओना, सियनगर चोरो नइ रहैए सेहो बात नहियेँ अछि। गुँहचोरा सिनकट्टा ने पछुआरमे सीन काटि घर पैसि घरक समान चोरा लइए मुदा सियनगर चोर तँ से नइ करत। ओ तँ यएह ने करत जे एक दिस पूजी विहीन लोक जे मिथिला सन धरतियो आ माटियो-पानिकेँ–जे दुनियाँमे सभसँ नीक अछि–छोड़ैले तैयार अही दुआरे अछि जे पूजी नइ अछि जे गुजर चलत आ दोसर दिस जे किछु जीवनक मुख्य अंग अछि ओकरा कपैट-छपैट असली-नकली नहि बुझि एजेन्टक भाँजमे पड़ि अपन पाइक संग अपन जिनगी सम्हारैक बाट छोड़ि, सभ किछु ओकरे सभकेँ दइए जेकर ओ नोकरी करैए। एहने-एहने जाल-फाँस लगौनिहारे ने

सियनगर चोर भेल।

ओछाइनेपर पड़ल रही। किए तँ दू दिनक कोर्टक तेहेन थकान बुढ़िया फुसि केसमे भेल जे देह चुरम-चूर भऽ गेल रहए, तँए ओछाइनपर सँ उठैक मने ने हुअए। कहब जे 'एहेन अहाँ काबिले किए छी बुढ़िया-फुसि केसमे फँसल छी?' मुदा से बात नहि अछि अपनो इच्छा अछिए जे जेते जल्दी सम्भव हुअए तेते जल्दी कोर्टसँ फारकती ली मुदा से कोर्टो बुझए तखन ने। तहूमे बुढ़िया-फुसि केस जे तीस साल पुरान अछि। बुढ़िया-फुसि केस ऐ दुआरे कहलौं जे एकटा जमीनक–माने तीन कट्ठा जमीन अछि जइमे घर-दुआरसँ बाड़ी-झाड़ी धरि अछि–रगड़ाक-झगड़ा अछि। दखल-दिहानीक बात अछि। दुनू पक्ष गामसँ बहरा बंगलोरमे नोकरियो करैए आ ओत्तै घर-दुआर सेहो बना लेलक। जहिया गाममे छल तहिया विवाद भेल, मुदा आब तँ दुनू अपने छोड़ि बंगलोर चलि गेल आ तैयो कहैए हमरा दखलमे अछि। ओइ बाड़ी-झाड़ीमे फुलबारियो लगौने छी आ तीमनो-तरकारी उपजबै छी। से दुनू कहैए।

ओछाइनेपर सँ बजलौं-

"हँ, हँ काका...।"

ओना, हुनको बुझल छैन जे जहिना अपने तीन बजे भोरे उठि जाइ छी तहिना सिंहेश्वर सेहो उठि जाइए। तँए जँ किछु गप-सप्प भेल तँ ओ शुभे मुहूर्तमे भेल। भोरका टोकब सन शुभ मुहूर्ते की हएत। अपन दुख-बेथा घरेसँ बजैत निकलए लगलौं-

"काका, की कहब! दू दिनक जे कोर्टक लफड़ामे पड़लौं आ भीड़ भेल से ओछाइनपर सँ उठैक मने ने होइ छल। किमहर-किमहर टहलबै?"

सोगाएल कही आकि बिनु सोगाएल, बुझि पड़ल तही क्रममे

अनुपलाल काका छैथ। बजला- “टहलबै नइ, जिज्ञासा करए जेबइ।”

एकाएक मनमे ठनका जकाँ खसल। ठनका जकाँ ई खसल जे अनुपलाल काका जिज्ञासा करए जा रहल छैथ आ अपने केहेन सुतनमा छी जे जिज्ञासाक जिगुतो ने अखन धरि बुझि पेलौं..! तँए, दुखताहोमे सेसर दुखताहक दर्द अपन देहमे घोंसियबैत बजलौं-

“काका, की कहब! अपने बेथे तेना बेथाएल रहै छी जे अनकर बेथा की सुनब..!”

जेना हमर विचारकेँ अनुपलाल कक्काक मन माइन रखलकैन तहिना अपन प्रवाहमे प्रवाहित होइत पुन: बजला-

“सिंहेश्वर, अखने कनी पहिने भाँज लगल जे फकीरबा बाबा दुनियाँ छोड़ि देलैन। अपने ने चलि गेलाह, मुदा...।”

अनुपलाल कक्काक विचारकेँ स्वीकारैत बजलौं-

“चलू, जखन ओछाइन छोड़ि देलौं तखन तैयारे-तैयार छी।”

दुनू गोरे संगे विदा भेलौं। कनियेँ आगू बढ़लौं कि अनुपलाल काका बजला-

“सुनैमे आएल अछि जे शुभ मुहूर्तमे फकीरबा बाबाक मृत्यु भेलैन अछि।”

अखन तक अपने ‘मुहूर्त’ नइ बुझै छेलौं, ओना खगतो ने कहियो भेल। तैठाम ‘शुभ’ आ ‘अशुभ’ केना बुझब? बजलौं-

“की ‘शुभ मुहूर्त’ कहलिऐ काका?”

अनुपलाल काका बजला- “बारह बजे रातिक पछाइत आ एक बजेक बीच प्राण तियाग केलैन।”

अखन तक अपने यएह बुझै छेलौं जे मरण-हरणमे की ‘शुभ’

हएत आकि अशुभ हएत! यमराजक घरसँ जखने रसीद कटत कि दूत पहुँच निलामी जमीन जकाँ ढोल्हो दऽ देत। ओना, अखन धरि अनुपलाल कक्काक प्रति जे बिसवास मनक भीतर रहल अछि ओ एहेन रहल अछि जे समाजक भातिजकेँ पित्तीक प्रति हेबा चाही। अपनो मन सदिकाल कहैले तैयार रहैए जे अनुपलाल काका नीक छोड़ि अधला कहियो ने केलैन अछि। चाहे ओ विचारक क्षेत्र हो वा जीवनक कोनो आनो क्षेत्र...। बजलौं-

"काका, की कहलिऐ 'शुभ मुहूर्त'?"

'शुभ मुहूर्त'केँ शुभ विचारमे रंगैत अनुपलाल काका मने-मन हँसबो करैत रहैथ आ हँसपनसँ बजबो केलैन-

"सिंहेश्वर, जहिना स्वाति नक्षत्रक बून बाँसमे बंशलोचन, सितुआक मुँहमे मोती आ केरा मुँहमे पड़ने कपूर होइए तहिना मनुक्खोक जन्म पनिगर समुद्रमे लाल होइए। आ तहिना चोरो-चहार घरक सीनसँ लऽ कऽ पॉकेट होइत गरदैन काटै तक पहुँचते अछि। यएह प्रभाव ओ मुहूर्त छी। केकरो शुभ, केकरो अशुभ। मुदा समय[1] तँ अपना गतिये अपना घुरीपर चलैत रहल अछि आ आगूओ चलत।"

अपना जनैत अनुपलाल काका एकसूरे बाजि गेला मुदा अपने बुझलौं साढ़े बाइस। मुदा तैयो महराइ गौनिहार महराजकेँ जँ एकटा देवानजी–माने पलगाँइ–नइ रहत तँ महराइक राग केना मिलत। भलेँ ओ राजा-रजबारक देवानजी जकाँ नै हुअए जे हिसाब जोड़ै काल 'एकानबे'केँ 'एक' लिख हाथमे जे 'नब्बे'केँ 'नअ' बना रखै छला ओ हाथेमे रहि जाइ छेलैन, तेहेन नहि। तेकर कारणो अछि जे ओ राजा-रजबारमे रहै छला आ महराइक महराजक मुँह-लगुआ

[1] दिन-राति

देवानजीक संगे-संग सूर-मे-सूर सेहो मिलैबते छैन। जे महराज महि कऽ महि-महि मथनीमे घोरै छैथ..! रागमे तान मिलबैत बजलौं-

“हँ, से ठीके किने!”

अनुपलाल काकाकेँ जेना सह भेटलैन तहिना सहठूल होइत बजला- “बौआ सिंहेश्वर, अद्-भुद बेक्तपन फकीरबा बाबाक छेलैन!”

‘अद्-भुद बेक्तपन’ सुनि अपनो अचंभा भेल। अचंभा किए ने होइत, एक पड़ोसी रहितो अखन धरि फकीरबा बाबाकेँ नहि बुझि पेलौं। पुछलयैन-

“की ‘बेक्तपन’ कहलिऐ काका?”

अनुपलाल काका बजला- “ताबे रसे-रसे चलबो करह आ कहितो चलै छिअ।”

मनमे भेल जे जखन अनुपलाल काका घरसँ चारि बजे भोरे निकैल जिज्ञासा करए विदा भेला आ रस्तामे जेते बाधा-रूकाबट होइत जेतैन ओ तँ रस्तेक भेल किने। तँए रस्तामे जेतेकाल संगे रहता ओइसँ बेसी लाभ अपने हएत।”

ओना, भीतरसँ अपनो मनमे दुनू छल, पहिल जे एकटा मृत्यात्माक स्मरण, आ दोसर- हेराएल बौस भेटत। आग्रह करैत बजलौं- “काका, भोरुका समय छी, जखन फकीरबा बाबाक जिज्ञासा करए चलिये रहल छी तखन ओइमे केतेक समय लागत से ठीक नहि अछि। तँए आग्रह करब जे अखन घरपर छीहे, पहिने चाह पीब लिअ।”

अनुपलाल कक्काक मनमे की छेलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मुस्कियाइत बजला- “सिंहेश्वर, शुभ-मुहूर्तक सभ काज शुभे-शुभ होइए मुदा तइले अपनो शुभे-शुभ बनए पड़ैए। ओना, अशुभकेँ शुभ

बनाएब ओतेक असान नहि अछि जेतेक शुभकेँ शुभ बनब वा अशुभकेँ अशुभ बनब अछि।”

टोकारा दैत बिच्चेमे बजलौं-

“हँ, से ठीके ने?”

बजला- “अखन भोरगर समय अछि, चाह बनबैमे बेसी तरद्दुत ते ने करए पड़तह।”

बजलौं- “काका, कहुना छी तँ मिथिलाक किसान परिवार छी किने। सालो भरि लोक घरमे चूरा-मुरहीसँ लऽ कऽ अदौरी-तिसियौरी आ अँचार धरि रखिते छैथ तैठाम तँ चाह चाहे भेल किने।”

ओना, अनुपलाल काकाकेँ सभ बात बुझल छैन जे अखनो–किसानक जिनगी केतबो धक्का खा धकियाएल मुदा तैयो–अपन माटि-पानिक इज्जत रखनहि अछि। भरिसक ओ भोरुका समय देखि पत्नीपर कटाक्ष केलैन। फेर लगले मनमे भेल अपन कटाक्ष करितैथ तँ थोड़े चेततौं। किएक तँ चेतबोक क्रिया मनुक्खक अपने भाँजमे अछि, जइसँ चेतनताक संग-संग चिन्तनशीलता सेहो बढ़ैए। मुदा पत्नीक कटाक्ष सुनि, नइ रहल गेल, बजलौं-

“से की?”

अनुपलाल काका बजला- “बौआ, मनमे दुख नइ करिहह! आँखि जे देखैए, मुँह सएह ने बजैए। जहिना कोनो गाम मुर्खक नइ होइए तँए कोनो गामो तँ एहेन नहियेँ अछि जइमे मूर्ख नइ अछि। जाबे तक समाजमे मुरुखपना अछि ताबे तक केहेन-केहेन मुरुखपना अछि से तँ..?”

‘केहेन-केहेन मुरुखपना’ कहि अनुपलाल काका रूकि गेला। मुँह बन्न भऽ गेलैन, मुदा लगले विचारकेँ अतीत-भविसकेँ छोड़ि जमीनपर–माने वर्तमानमे–अपनाकेँ ठाढ़ करैत अनुपलाल काका

बजला- “बौआ, अखन शुभ मुहूर्तक जइ शुभ काजे विदा भेलौं, ओकरा अशुभ बनाएब उचित नहि, तँए घरपर सँ विदा भेला पछाइत जाबे तक हुनकर- माने फकीरबा बाबाक- दर्शन नइ हएत तैबीचक समय हुनकर भेलैन तँए अखन दोसर-तेसर बाते-विचार करब ने अशुभ भेल।”

दुनू गोरे गपो-सप्प करैत रही आ डेगे-डेग रस्तापर सँ दरबज्जो दिस बढ़ैत रही। तैबीच जेना पत्नियोँ रच्छ रखलैन। गैसक जुग छीहे, चाह बना नेने छेली। ओसारक चौकीपर अनुपलाल काकाकेँ बैसा जहाँ पाछू दिस तकलौं कि पत्नीक हाथक चाहपर नजैर पड़ल, एकाएक अपन मनक खुशीक चक्की नाचि उठल। नाचि ई उठल जे आखिर केतबो मिथिलाक माटि-पानिकेँ लोक दुइर केलक तैयो मिथिलाक रीति-रिवाज नीक छोड़ि अधला नहि भेल। रिवाजक रूप सुधारि रीति बना चलिते अछि आ आगुओ चलिते रहत। ओना, लाभो अपने भेल, किए तँ चाह जाबे बनैत ताबे अपनो दरबज्जे-अँगना करैत रहितौं। तैसंग ईहो तँ भेबे कएल जे अनुपलाल कक्काक मन सेहो कोठीमे राखल अन जकाँ लगले फ्रेस सेहो भइये जेतैन जइसँ गप-सप्पक क्रममे रस बनले रहत। ओना, चाह देखि अनुपलाल काका वाह-वाहीक जस पत्नीकेँ दए देने रहथिन।

चाहक घोंट कण्ठसँ निच्चाँ उतैरते जेना अनुपलाल कक्काक मन सर्रास भेलैन तहिना सरस भऽ बजला-

“बौआ, अखन फकीरबा स्थान विदा भेल छी तँए फकीरबा स्थानो आ फकीरबा बाबा छोड़ि दोसर स्मरणो करब उचित नहि।”

सूर-मे-सूर मिलबैत बजलौं-

“निसचिते किने!”

हमर समर्थन देखि अनुपलाल काका मने-मन जेना समर्थवान

भेला तहिना कलशल मन बुझि पड़ल। ओना, हुनका अपना मनमे ईहो आबि गेल छेलैन जे आब फकीरबा बाबा रहला नहि, तँए जँ आब हुनकर जिनगीक तीत-मीठ बजबो करब ते ओतेक अवघात हुनका नइ करतैन, जेते जीबैतमे कऽ सकै छेलैन। मुदा जखन समय अनुकूल भेल तखन मुहोँ बन्न राखब उचित नहि। अनुपलाल काका बजला-

"बौआ सिंहेश्वर, जहिना तूँ भातिज छह तहिना कनियोँ ने छथुन, तँए कहै छिअ। फकीरबा बाबाकेँ अखन तक नीक जकाँ लोक नहि चिन्ह पेलकैन।"

अनुपलाल कक्काक विचार सुनि मनमे खोद-वेद उठने जिज्ञासा बढ़िये रहल छल, तैबीच पत्नी दिस नजैर चलि गेल। अपनोसँ बेसी आतुर विचार सुनैले ओ बुझि पड़ली। बजलौं-

"से की काका?"

अनुपलाल काका बजला-

"बौआ, रंग-बिरंगक गप-सप्प फकीरबा बाबाक सम्बन्धमे लोक बुझितो अछि आ हवोमे अछिए। जइमे किछु नीको अछि आ किछु अधलो अछि। मुदा अपन गूढ़ बात सेहो मनमे गुड़ घाव जकाँ, जे जीवनमे होइतो अछि, नहियोँ होइए आ हेबो करैए ते एके-आधे बेर होइए। हौहैट-कलकैल दिनाए जकाँ नहि, जे बरहमसिया-सँ-बरहबरखा होइए।"

बिच्चेमे बजलौं-

"दुनियाँदारीकेँ मारू मुँह, अखन विदा भेल छी बाबाधाम आ चलि जाएब जगरनाथ, से कहूँ हुअए। की कहलिऐ फकीरबा बाबाक?"

अनुपलाल काका बजला- "हम बेसीकाल हुनका लग जा

गप-सप्प करै छेलौं। ओ अफीम खाइ छेला। एकठाम बैसने जखन कुत्तो-बिलाइ चिन्हार भऽ अपन चिन्ह-पहचीन दइते अछि तखन तँ मनुक्ख मनुक्खे भेला किने..!"

हमरो मुहसँ बजा गेल- "ठीके किने!"

ओना, अनुपलाल काका फकीरबा बाबाक जीवन-वृतान्त जड़िसँ नहि उठा ओहन कथाकार जकाँ उठौलैन जे पहिने कथा नहि कहि कथ-फले कहि दइ छैथ, तहिना अनुपलाल काका बजला-

"बौआ, फकीरबा बाबा एक दिन कहलैन जे...।"

आगू सुनैले मन जेते अपन धड़फड़ाइत छल तइसँ बेसी पत्नीक बुझि पड़ल तँए दुनू सूरकेँ मिलबैत बजलौं-

"की कहलैन फकीरबा बाबा?"

एक तँ अनुपलाल काका जड़ि नहि पकैड़–माने पएर दिससँ नहि– टीके दिससँ विचार उठौने छला, तहूमे छीपे दिससँ छिपियबैत बजला-

"फकीरबा बाबा कहलैन जे बौआ अनुप, किछु गूढ़ एहेन गप[2] होइए जेकरा लोक दाबि कऽ राखए चाहैए मुदा हम दुनियाँक सोझ से नइ छिपाएब। मुदा...।"

'मुदा' सुनि अपन मन आरो धड़-फड़ करैत धड़फड़ा गेल जइसँ अनेरे मुहसँ निकैल गेल-

"मुदा की?"

अनुपलाल काका बजला- "कहलैन जँ कोनो ओहेन गूढ़ गप रहै तँ सुननिहारकेँ पहिनहि चेता दिऐ जे ऐसँ जीबैतमे बेसी अवघात हएत, तँए जिनगीक अन्त भेला पछाइत बजिहह। आइ मौका भेटल

---

[2] काज रूपी गप

तँए बजलौं।”

भाय! होइतो वएह ने नीक छै जे, जे फल, फूल, अन वा तीमन-तरकारी बेसी नीक लगै ओकरा जँ अपने हाथे जीवन दान करैत ओकर जीवनक दान खाइ वा उपयोग करी, तँ ओ नीकोमे नीक भेल। माने नीकतम भेल।

फकीरबा बाबाक जीवन दर्शन-ले मन एते उताहुल भऽ गेल जे आवेशमे बजा गेल-

“काका, अखन फकीरबा स्थानपर फकीरबा बाबाक अन्तिम दर्शन करैले लोकक ढवाहि लगि गेल हएत, ओतौ जाएब तँ कातेमे बैस कऽ गप-सप्प करब, तइसँ नीक जे अहीठामसँ हुनकर स्मरण किए ने करिऐन।”

ओना, अनुपलाल कक्काक मन दोहरी काजमे तेना ओझरा गेल छेलैन जे मुहेँ बन्न भऽ गेलैन। ओझरेलैन ई जे जँ सिंहेश्वरकेँ संगे-संग चलबो करैले आ रस्ते-रस्ते गपो-सप्प करैत चलैले कहबै तँ पत्नी दरबज्जेपर रूकि जेतैन जइसँ अपनो एकटा बिसवासू सुननिहारि छुटिये जेती। जँ ऐठाम बैस गप-सप्पमे समय लगा देब तँ स्थानपर पहुँचैमे देरी हएत। जेते देरी पहुँचैमे हएत, तेते पछाइत ने मुइलो मुँह देखबैन।

असमंजसमे अनुपलाल काका पड़ले रहैथ कि एकाएक हमर कहल विचार मनमे जोर मारलकैन जे ठीके अखन लोकक ढबाहि लागल हएत। बजला-

“बौआ सिंहेश्वर, अपना बुझि पड़ैए जे अपन जिनगीक सच बात ओ हमरेटा कहलैन, किए तँ जँ दोसरकेँ कहने रहितैथ तँ जरूर ओ बजबे करैत आ रंग-बिरंगक बात जे फकीरबा बाबाक सम्बन्धमे हवामे उड़ैए ओ जरूर रोकाइत। मुदा से नइ देखै छी, तइसँ बुझि

पड़ैए।"

मनमे भेल जे जहिना लटकल वा टुटल घरमे सोंगर लगौलासँ घरक माथी तेज भऽ जाइए तहिना जँ विचारोमे सोंगर लगा देबैन तँ ओहो तेज गति पकैड़िये लेत। बजलौं-

"ऐंह, अहाँ छोड़ि दोसर लग ओ किन्नहु नइ बाजल हेता।"

अनुपलाल कक्काक मन जेना कनी हल्लुक भेलैन तहिना बजला-

"बौआ, एक दिन नअ बजेमे हुनका स्थानपर गेलौं, खाटपर पड़ल आहि-आलम करैत रहैथ। पहुँचते बजलौं- 'बाबा, किए खाटपर पड़ल कुहरै छी?' जहिना भूखसँ भुखाएल मनसँ लहरैत-जरैत विचार निकलैए तहिना फकीरबा बाबाक मुहसँ निकललैन- 'सभ दिन सात बजे भिनसर आ सात बजे साँझमे अफीम खाइ छी, आइ देखहक जे अननिहार अखन धरि अनबे ने केलक हेन। गेल अछि मुदा अखन तक आएल हेन नहि।' तैबीच अफीम अननिहार पहुँच गेल। बदाम कहियौ आकि मटर बरबैर अफीमक गोली खेलैन। दसे मिनटक पछाइत फुरफुरा कऽ खाटपर सँ उठि कुड़हैर पकैड़ जारैन फाड़ैले विदा भेला। तैबीच बजलौं- 'बाबा, दस मिनट आरो आराम कऽ लिअ, पछाइत ते दुनियाँ-दारीकेँ चीर-फार करैयेक अछि।"

जहिना कहलयैन तहिना मानि गेला। खाटपर बैसैत बजला-

"तोहूँ कियो आन भेलह। देखिते छहक जे सौंसे गाममे तोरा ऐठाम छोड़ि हम केतौ मुहों ऐंठबै[3] छी।"

आइये नहि, जहियासँ अपना ज्ञान-पराण भेल तहियेसँ

---

[3] खेनाइ खाइ छी

फकीरबा बाबाक संग अपन परिवारक सम्बन्ध देखैत आबि रहल छी। खेबो-पीबो आ हबो-गब होइत आबि रहल अछि। बजलौं-

"अपना आँखिये तँ हमहूँ ने केतौ हुनका खाइत देखलयैन।"

फकीरबा बाबा हृदय खोलि बजला-

"बौआ, आब तँ हम चल-चलौएपर छी, दुनियाँ केहेन उनैट गेल जे पहिने नंगपन अभावमे छल आब भावमे आबि गेल अछि।"

कहलयैन-

"हँ, से तँ आबिये गेल अछि।"

हमर बात सुनि फकीरबा बाबाक मन जेना अकछल-अकछल सन भऽ गेल रहैन मुदा तैयो बजला-

"छोड़ह दुनियाँ जहानक गप-सप्पकेँ जेहने जन रहत तेहने ने जहाँन बनत। अपन जिनगी कहै छिअ। जखन तीन बर्खक रही तखन बाबू मरि गेला। बेसी मनो ने छैथ। मात्र एतबे मोन अछि जे जखन अछियापर सुता आगिमे जरौलकैन। माइये हाथे आगियो पड़लैन। पछाइत माए कहुना-कहुना कऽ पोसए लगल। अपना खेत-पथार नहि। सात बर्खक पछाइत जखन माइयो मरि गेल तखन गाम डेरौन लगए लगल। संजोग बनल, तीन-चारिटा लंगोटा-कोपीन पहिरने केश-दाढ़ी बढ़ौने महात्मा सभ रस्ते-रस्ते जाइत रहैथ। कखनो काल 'सतनाम' सेहो जोरसँ बाजैथ। आवाज सुनि हमहूँ रस्तापर आबि पुछलयैन- 'केतए जाइ छी यौ बाबा महराज?' एकगोरे बजला- 'तीन दिनक कबीरपंथीक सन्त सम्मेलन छी, तहीमे भाग लइले जा रहल छी।' हमहूँ संगे विदा भेलौं आ सम्मेलनमे पहुँच कण्ठी सेहो लेलौं। तीन दिन सम्मेलन चलल। जहिना सभ खेलैन-पीलैन, तहिना हमहूँ खेबो-पीबो केलौं आ बातो-विचार सुनलौं।"

कनीकाल रूकि अनुपलाल काका बजला- "सभटा तँ मन

नहि अछि मुदा एकटा बात मन जरूर अछि। कहलैन जे 'कबीर साहैब जखन मुइला तखन हिन्दू-मुसलमान दुनू संगो रहैन आ दुनूक विचार एते एकबट्ट छेलैन जे एक आवाज बनि ठाढ़ छला। मुदा कबीर दर्शनक विपरीत हिन्दू-मुसलमानकेँ मजहवी बेवहारकेँ बीचमे ठाढ़ कऽ एकटा बखेरा रचल गेल। जेकर बेवहारिक विचार एतए आबि अँटकल अछि जे हुनकर लहास[4]केँ आधा-आधा काटि हिन्दू-मुसलमानक बीच बाँटल गेल।' कहैत-कहैत आँखिमे नोर ढब-ढबा गेलैन।"

ओना, फकीरबा बाबाक आँखिमे नोर बजैत-बजैत ढबढबाएल छेलैन मुदा हुनकर बात दोहरा कऽ बजैत-बजैत अनुपलाल कक्काक आँखि सेहो ढबढबा गेलैन जे सुनि अपनो आँखि नोरसँ कड़ुआ लगल। बजलौं-

"पछाइत की भेलैन?"

अनुपलाल काका बजला-

"सन्त सम्मेलन समाप्त भेला पछाइत सभ अपन-अपन स्थानक–माने स्थायी घरक रस्ता पकड़लैन आ फकीरबा बाबा अपन गाम नहि जा दुनियाँ दिस विदा भेला।"

बजलौं-

"बिना कोनो ठौरे-ठेकाने विदा भेला?"

अनुपलाल काका बजला-

"हँ, घुमैत-घामैत अपना गामक स्थान, जेकरा फकीरबा स्थान कहै छिऐ, ऐठाम एला। ऐठाम गौरीदास महंथ रहै छला आ एकटा सेवक जीवन दास छेलैन। जीवन दास सोल्होअना लोहाक मनुक्ख

[4] कबीरक लहास

छला। लोहाक मनुक्खक माने भेल जेतबे गौरीदास अढ़बै छेलखिन तेतबे ओ करै छेलैन। अपन उकिते किछु ने करै छल। फकीरबा बाबा ताबे छौड़हरे रहैथ। अबिते गौरीदासक पएर छुबि गोड़ लगि आगूमे ठाढ़ भेला। गौरीदास असीरबाद दैत पुछलकैन- 'तोरा के सभ छह?' तैपर फकीरबा बाबा जवाब देलखिन- 'कियो ने अछि। बाबू-माए दुनू मरि चुकल छैथ।' गौरीदास बजला- 'ऐठाम रहबह?'

तैपर फकीरबा बाबा जवाब देलखिन- 'हँ, रहब।' ओइ दिनसँ ओ अही स्थानमे रहि गेला। गौरीदास रमौत पंथ माननिहार छला। ठकुरवारी सेहो छेलैन। राम-जानकीक मूर्तिक पूजा करै छला। ने फकीरबा बाबकेँ ओतेक होश रहैन जे कबीर-पंथ आ रमौतकेँ बुझि पेबितैथ जे दुनू दू सम्प्रदाय छी, आ ने गौरीएदास पुछलखिन जे कोन सम्प्रदायकेँ माननिहार छह। ओही दिनसँ फकीरबा बाबा ऐ स्थानमे रहि गेला। स्थानक सभ काज करए लगला। गौरीदास बिआह नइ केने छला, जइसँ परिवार नहि छेलैन। ओना, स्थानमे मात्र एके बीघा खेत छल। दूटा घर गौरीदास बनौने छला, जइमे एकटामे ठकुरवारी छेलैन आ एकटामे भानसो-भात करै छला आ ओहीमे रहबो करै छला।"

❑ शब्द संख्या : 2759, तिथि : 14 दिसम्बर 2018

रंगमे भंग

ओछाइनपर पड़ले रही, ओना नीन अधटुटु भऽ गेल रहए, मुदा ओछाइन छोड़ैक मन नइ होइ छल। एक तँ अखाढ़ मास जे अपने गरमियाह होइए तैपर रातिकेँ छोट भेने नीक जकाँ नीन पुड़लो ने रहए। ओना, मौसम खुशनुमा भइये गेल छेलै, किए तँ काल्हि बेरू पहर तेहेन निम्मन बरखा भेल जे खेत सभमे सेहो पानि लगि गेल आ वायुमण्डलमे जे उम्मस छल सेहो मेटा गेल। ओछाइनपर पड़ले-पड़ल मन गाम दिस वौआए लगल। सघन गाम सुन्दरपुर अछिए। ओछाइनपर पड़ल-पड़ल रतिरमण दोस काकापर नजैर पहुँचल।

साल भरिसँ ओछाइनपर पड़ल-पड़ल रतिरमण काका काहि काटि रहल छैथ। ने अपना देहमे ओते शक्ति छैन जे अपनो तरद्दुत अपने करता आ ने लगुआ-भगुआ एकोटा रहलैन जे दोकानसँ दवाइयो आनि पानिक संग खुऐबतैन-पीऐबतैन। पत्नी सहलोले छथिन। ने एकोटा काज करैक उकिते छैन आ ने कहियो करबे केलैन जे काज करैक ऊहि रहितैन। ओना, बेर पड़लापर[5] हारि थाकि लोक किछु-ने-किछु करिते अछि, तँए भानसो-भात करै छेली आ बरतनो-बासन मैजिते छेली।

ओना, ओछाइन छोड़ैक मन नइ होइत रहए, मुदा तैयो जी-जाँति उठि कऽ बैसलौं। बैसला पछातियो हुअए जे एक नीन आरो सुती, मुदा रतिरमण दोस काकापर नजैर गेने (माने मोन पड़ने) मनमे

---

[5] समय पड़लापर

विचार जगि चुकल छल जे आइ सभसँ पहिने हुनकेसँ भेँट करए जाएब। जखन समाजमे छी तखन जँ दोसर-तेसरसँ सम्बन्ध नइ राखब तँ समाजे की भेलौं। चाह-ताह पीबैक अभियासे ने अछि जे बिनु चाह पीने घरसँ केना निकलब। जे चाह पीबै छैथ से ने जिनगीमे एकटा काज बढ़ा नेने छैथ आ जे चाह नइ पीबै छैथ हुनकर तँ एते जान हल्लुक छैन्हे जे ने घरेपर बरदाइ छैथ चाह पीबैले आ ने रस्ते-बाटमे, आ तैसंग चाहक चाहमे पाइयो-कौड़ीक खगता नहियेँ होइ छैन।

ओछाइनपर सँ उठि दतमैन केलौं, मुँह-हाथ धोइ भिनसुरका अहारमे एक लोटा पानि पीलौं आ रतिरमण दोस काकाकेँ देखैले तैयार भेलौं। बाहरक तैयारी देखि पत्नीक मनमे नव उत्कण्ठा सेहो जगलैन। पत्नीक मनमे उत्कण्ठा जगैक कारण छेलैन जे आन दिन केतौ जाइ छला तँ कहि दइ छला जे फल्लाँठाम जाइ छी, एते समय लागत। से सभ किछु ने कहला आ चुपे-चाप विदा भऽ रहल छैथ। एहेनठाम तँ ईहो सम्भव अछिए जे जहिना बुद्धदेव पत्नी यशोधराकेँ बिनु किछु कहने घरसँ पड़ा गेल रहैथ तहिना ने जा रहल छैथ। जँ तेहेन झगड़ो-दन भेल रहैत आकि कहे-कही भेल रहैत जे तूँ घरसँ निकैल जो आकि तूँ घरसँ निकैल जो, सेहो तँ नहियेँ अछि। तेहेन तँ यशोधरोकेँ नहि भेल रहैन, पत्नीक मन जेना थकथका गेलैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे बुद्धदेव तँ राता-राती यशोधरो आ राहुलोकेँ सुतले छोड़ि पड़ा गेल रहैथ। से तँ अपना नइ भेल अछि, आँखिक सोझमे बिना किछु कहने निकैल रहल छैथ। तँए किए ने हमहीं पुछि लिऐन जे 'भोरे-भोर केतए जाइ छी?' मुदा लगले फेर भेलैन जे जतरा (यात्रा) पहर टोकब उचित नहि। किए तँ एहेन दर्जनो खिस्सा-पिहानी बुझले अछि जे 'जतरा पहर' टोकबसँ केहेन टोकाइन होइए।

मने-मन सामंजस करैत पत्नी बजली तँ किछु नहि मुदा जहिना स्त्रीगण सभ अपन दायित्व बुझै छैथ जे जखन पुरुख (पति) घरसँ निकलए लगै छैथ तखन मुहसँ बोली फुटैन वा नहि फुटैन मुदा मनक फूलक कली जँ नइ फुटैन तखन विदा करब की भेल! रणभूमियोमे वीर जवानकेँ पत्नी अपन मांगक सिनुरक गुण-धर्म देखा मुस्की भरैत मनसँ विदा करिते छैथ। तहिना किए ने विदा करिऐन। सएह केली।

घरसँ निकैलते रतिरमण दोस काकापर मन खिरल। पिताजीक संग विद्यालयमे गामोक स्कूलमे पढ़ने छैथ। जे गुण दुनूक मनमे ओहिना जीवित छैलैन। ओना, पिताजी पाँच साल पहिने मरि गेला, मुदा दुनूक बीच–माने रतिरमण काका आ हमर पिताजीक–सम्बन्धमे कोनो तरहक खलल तँ नहियेँ पड़ल अछि।

रतिरमण दोस काका, जमीन्दार परिवारक फाँड़ी छैथ। गाममे माने सुन्दरपुरमे पहिने अढ़ाइ साए बीघा जमीन छेलैन मुदा आब से सभ नहि रहलैन। ओना, मोटा-मोटी अढ़ाइ साए बीघा कहलौं मुदा शुरूमे पचासे बीघा छेलैन। साले-साल जे गामक किसानक जमीन सभ मालगुजारीक अभावमे निलाम होइ छेलै ओ सस्तामे कीनि बढ़ोत्तरी होइत गेलैन आ अढ़ाइ साए बीघापर पहुँच गेल छेलैन।

अंगरेजी शासन बेवस्थाक खिलाप देशक जन-गणमे एतेक तँ आक्रोश बढ़िये गेल छल जे एक-एक जन देशक गुलामी मेटबैले प्राण न्योछावर करैले तैयार भऽ गेल छला। जइसँ अंगरेजी शासनक खिलाप जन-आन्दोलन बिकराल रूप पकैड़ नेने छल। ओना, जन-आन्दोलन एका-एक ओहन रूप नइ पकड़लक। पाछूसँ अबैत विचारधाराक रूप छल जे 1935 इस्वीक पछाइत पकड़लक। 1935 इस्वीक पूर्व अंगरेजी शासनक खिलाप जे आन्दोलन भुमहूर

आगि जकाँ सुनैग रहल छल ओइमे अंगरेजी शासनक जे पोषक तत्त्व छल–माने ऐठामक जमीन्दारी प्रथा–ओकरा खिलाप सेहो जन-जागरण भेल जइसँ ओहो–जमीन्दारी प्रथा–विरोधक मुद्दा बनल। जइसँ देशक राजो-रजबार आ जमीन्दारोक जे डारि-पात, माने फाँड़ी छल तेकरो खिलाप जन-उभार आएल जइसँ मालगुजारीक संग-संग, जइ मालगुजारीक चलैत, ग्रामीण किसानक जमीन नीलाम होइ छल, तेकरो खिलाप आन्दोलन तेज भेल। पूर्वसँ अबैत, माने सर्वेक समयसँ–जे 1892-93 इस्वीसँ शुरू भेल आ 1902-3 इस्वी धरि फाइनल भेल छल, सर्वेमे सिकमी बटाइक अधिकारक संग नामी-वेनामी जमीनक लड़ाइ सेहो अपन उग्र रूप पकैड़ नेने छल। जेकरा चलैत राजा-रजबारक संग जमीन्दारो आ ओकर फाँड़ियोक जमीन रंग-रंगक कारणे दखल करैक उत्साह छोट-छोट किसानक संग बँटेदारोक बीच आबिये गेल छल। जइसँ औना-पौना दाममे ओहो सभ–माने जमीन्दारो आ पैघ-पैघ किसानो सभकेँ–जेतए जिनका जे गर लगलैन सेहो बेचबे केलैन।

1940 इस्वीक पछाइत रतिरमण दोस कक्काक सेहो तीन-चौथाइसँ किछु बेसिये जमीन गौंआँ कब्जा कऽ लेलकैन। रतिरमण कक्काक संग पिताजीक सम्बन्ध गामेक स्कूलसँ बनि गेल छेलैन। ओना, ओइ समयमे हमरो परिवारमे, माने पिताजीकेँ सात बीघा जमीन छेलैन जे पैछला तीन पुस्तसँ आबि रहल छेलैन। अपन किसानी परिवारक जीवनकेँ बँचबैत, माने समयपर मालगुजारी दैत, अखन धरि ओहने आँट-पेटक परिवार बनल रहल जेहेन तीन पुस्तसँ आबि रहल छल। तइमे एकटा आरो अनुकूल कारण छल, ओ छल जे एक पुरखियाह परिवार सभ दिन बनल रहल। एक पुरखियाह परिवार भेल- असगर भैयारीक परिवार। जँ दू-चारि भाँइक भैयारी रहल तँ ओ भिन-भिनाउज भेला पछाइत बँटा जाइए, से नहि भेल।

रतिरमण काका आ पिताजीक बीच जे दोस्तियारे छल ओ सीमित रूपमे छल। दुनू गोरे–रतिरमणो काका आ हमर पितोजीक–बीचक सम्बन्ध ओतबे बनल रहल जे दुनू गोरे संगे-संग पढ़ने छी। जइसँ आर्थिक लाभ तँ रतिरमण काकासँ कहियो किछु ने भेलैन मुदा आफद-असमानीमे एक-दोसराक बीच जिज्ञासा-बात जरूर चलैत रहलैन। वएह विचार मनमे जोर मारलक तँए रतिरमण दोस काकाकेँ भेँट करए विदा भेलौं।

अँगनाक पूबरिया घरक ओसारपर रतिरमण काका ओछाइनपर मरनासन्न अवस्थामे पड़ल छैथ। आँगन पहुँचते गुलाब काकी (रतिरमण कक्काक पत्नी) कैँ देखलयैन जे ओही पुबरिये घरक ओसारपर मने-मन जेना अपन सुख-दुखकेँ सुमिरन कए रहली अछि। नि:सन्तान रतिरमण काका, तँए परिवारमे दोसर-तेसर कियो ने। गुलाब काकीकेँ किछु नहि कहि सोझे रतिरमण काका लग पहुँच बजलौं- “काका, गोड़ लगै छी..!”

हमर आवाज सुनि रतिरमण काका आँखि खोलैत बजला-

“के?”

कहलयैन- “हम छी, दीनानाथ।”

‘दीनानाथ’ सुनिते चिन्ह गेला। उठि कऽ बैसैक ओरियान करए चाहलैन मुदा शक्तिहीन शरीर रहने मुँह होइत दर्दक आवाज निकलए लगलैन। आवाज सुनि बजलौं-

“काका, अहाँ पड़ले रहू! उठि कऽ बैसैमे कष्ट हएत।”

रतिरमण काका बजला- “बड़बढ़ियाँ, तोहूँ ओछाइनेपर लगमे बैसह। जोरसँ ते नइ बाजि होइए, मुदा...।”

‘मुदा’ कहि रतिरमण काका चुप भऽ गेला। तैबीच गुलाब काकी सेहो सहैट कऽ लगमे आबि गेली। ओना, टुटैत जिनगीसँ

गुलाब काकी मरनासन जकाँ भइये गेल छैथ मुदा जहिना दुनियाँमे भीखमंगासँ लऽ कऽ राजा तक मरए नइ चाहैए, दुनियाँसँ एते सिनेह तँ भइये जाइ छै जे मुइला पछाइत लोककेँ नइ भेटै छै, जइसँ ओ दुनियाँ छोड़ैये नइ चाहैए भलेँ दुनियाँ ओकरा किए ने छोड़ि देने होइ, तेहने आशामे गुलाब काकी बुझि पड़ली। ओ ई नइ बुझि पेब रहली अछि जे दुनियाँ रहबे करत, अपने यात्री छी। तँए मनुक्खक जिनगी अनमोल अछि, जेकर कोनो मोल ने छइ। ओना, लोकमे एहनो धारणा बनले अछि, जे अनकासँ अपन सुखो छिपा कऽ रखए चाहैए आ किछु एहनो तँ छैथिये जे अपन दुखोकेँ छिपा रखिते छैथ, भरिसक तेहने गुलाब काकीक मनमे छेलैन।

जखन रतिरमण दोस कक्काक उठाइन छेलैन तखन गुलाब काकी अपने हाथे किछु ने करै छेली। अपने हाथे किछु नहि करैक दू रास्ता अछि, पहिल ओ जे अपन दैनिक जीवन–माने शारीरिक जीवन–अपने हाथे करैत बाहरी जीवन माने जैपर जीवन ठाढ़ अछि, से नइ करब..! दोसर, अपन शारीरिको जीवन जेना- भोजन बनाएब, उपयोगी वस्त्रकेँ खिंचब इत्यादि-इत्यादि नइ करब भेल। एहने जीवन गुलाब काकीक छेलैन। नोकर-चाकरपर जिनगी ठाढ़ छेलैन। तँए कहब जे किछु बजबो नइ करै छेली आकि जिनगीक सुख-भोगसँ दूर छेली, सेहो बात नहियेँ अछि, ओ सभ छेलैन्हे।

अपने हाथे किछु नहि करैक कारणे गुलाब काकीक मन जहिना अकर्यमण्य–अकरमक–भऽ गेल छेलैन तहिना शारीरिक–देहक गति विधि–क्रिया सेहो भऽ गेल छेलैन। जइसँ मनुक्खक चेहरा-मोहरा रहितो मनुक्खक गुण विलोप भऽ गेल छेलैन। ओना, बौधिक रूपमे गुलाब काकी बजितो नीक छेली आ पढ़बो-लिखबोक गुण अखनो धरि भरपूर छैन्हे। मुदा बेवहारिक रूपमे, माने जिनगी जीबैक कलामे, अनाड़ियो-सँ-अनाड़ी भइये गेल छैथ। दिन घटने

माने आर्थिक अभाव भेने, नोकर-चाकर सभ समापत भऽ गेल छेलैन, मुदा रतिरमण काका जाबे तक थेहगर छला ताबे तक गुलाब काकीक काजक सहयोगी बनि बुझए नइ देलकैन। जइसँ कोनो धरानी जीवन चलिये रहल छेलैन। जहिना कर्मक जिनगी मनुक्खकेँ नीचाँ-सँ-ऊपर दिसक बाट पकड़बैए तहिना अकरमक जिनगी सेहो ऊपर-सँ-नीचाँ दिसक बाट दिस धकेलबे करैए। जेकर फलाफल एक दिस स्वतंत्र विचारक स्वतंत्र जीवनक जिनगी भेटैए तँ दोसर दिस गुलाम विचारक संग गुलामी जिनगी सेहो बनैबते अछि। खाएर जे अछि ओइसँ गुलाब काकी आ रतिरमण दोस काकाकेँ कोन मतलब छैन। गनल कुटिया नापल झोर जकाँ दुनू परानी रतिरमण काका भइये गेल छैथ। डाहक बरियाती जकाँ जाइतो काल 'राम नाम सत् छी', आ घुमतियो काल तँ 'सत्' छीहे...।

रतिरमण दोस कक्काक दशा देखि मन विचलित भऽ गेल मुदा बाजब की से बोलती मुँहमे रहबे ने कएल। रहबो केना करैत? रतिरमण कक्काक जीवन तँ ओहन सगर-जालमे सगर जाल भेल अनेक समुद्रक बीचमे फँसि गेल छैन जैठामसँ निकालब हमरा के पुछैए जे जइ अभिमन्युकेँ अर्जुन सन पिता, कृष्ण सन मामा, युधिष्ठिर सन धर्मराज जेठ-पित्ती नइ बँचा सकलैन तैठाम हम कोन खेतक मुड़ै छी जे रतिरमण काकाकेँ बँचा पेबैन। रतिरमण काका अपन दोसक (दोस्त) माने पिताजीक, रूप जेना हमरामे देखि रहल होथि तहिना संगी-साथी जकाँ पुन: बाजए लगला-

"बौआ, जहिना परिवारक बीच भैयारीक भातीज समाजमे सामाजिक भातीज आ दोस्तीमे दोस्तियारेक भातीज होइए तहिना ने तोहूँ भेलह।"

ओना, आगू बजैक विचार रतिरमण कक्काक मनमे रहबे

करैन मुदा विचारक पाँतिकेँ पूर होइते माने पूर्ण विरामक बदला फुल स्टौपक प्रयोग हुअ लगल अछि तहिना बजा गेल-

“ईहो कोनो कहैबला बात अछि जे कहला पछाइत हएब। एहेन तँ चलैनिये चलैनमे अछि जे सभ जनितो छीहे।”

हमरा विचारमे रतिरमण काकाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा तत्-क्षण जेना मनक सभ रोग-पीड़ा मेटा गेल होनि तहिना मन हर्खित होइत देखलयैन। जे आँखि अखन धरि कखनो खोलै छला आ कखनो बन्न करै छला तइमे बदलाव एलैन। एकटक आँखि-पर-आँखि चढ़ा बजला-

“बौआ, रंगमे भंग भऽ गेल..!”

‘रंगमे भंग..!’ रतिरमण दोस काका मुहेँ सुनि किछु अरथे ने लागल जे की बजला अछि। दोहरा कऽ पुछैयोक साधन्त मनमे नइ होइत रहए। किएक तँ जखन निरोगो लोकक कोनो बात सुनला पछाइत दोहरा कऽ– बुझैक खियालसँ–पुछलापर अनेरे मन-मियादि उनैट जाइए तैठाम तँ रतिरमण काका सहजे मरनासन्न अवस्थामे छैथ। तहूमे अपना ऐठाम तँ सभ जनिते छी बुढ़ लोक तमसाह भइये जाइ छैथ। बाजी कि नइ बाजी, बाजी तँ की बाजी। कहीं जँ दोहरा कऽ रति रमणे काका पुछि दैथ जे की कहलियह तखन तँ आरो पहपैट हएत...।

मनमे विचार घुरियाए लगल जे दोहरा कऽ रतिरमण काकाकेँ पुछिऐन की नहि, जँ नइ पुछि कऽ बुझि लेब तखन तँ गेट परहक चपरासी जकाँ चपरासियेक पेंशनो ने लेब। मनमे घुरियाइत विचारकेँ रतिरमण कक्काक शिकारी बुधि शिकार पकैड़ लेलैन। माने ओ बुझि गेला जे दीनानाथ हमर बात नइ बुझलक। मुदा बजैसँ पहिने बकार रूकि गेलैन। रूकैक कारण भेलैन जे मनमे ठहैक गेलैन जे

विद्यालयक दोस्तियारे तँ दीनानाथक पिताक संग छल से रूप दीनानाथमे देखैक पाछू तँ जीबनो ने देखए पड़त। कहुना दीनानाथ बाल-बोध भेल, उचितो भेल, दीनानाथक पिताक स्कूलक संगी ने छल, तैठाम तँ हमर उचित छल जे दीनानाथकेँ लग रखि विचारधाराक एकरूपता बनाएब, से तँ हम नइ कऽ सकलिऐ, तैठाम हमरा संग दीनानाथकेँ केते उचित हेतइ से तँ दीनानाथे...।

विचारकेँ ठमैकते रतिरमण काका विचारमे मोड़ दैत दोसर दिस मोड़ि अपनेपर खसबैत बजला- “बौआ, दिनक फेर-फार छी। जखन जे ओकरा मन फुरै छै तखन से करैए। ओही दिनक फेरमे पड़ल छी।”

जेना सभ समाजमे बजबो करै छी आ सुनबो तँ करिते छिऐ जे ई ‘दिनक फेर छी।’ तइ हिसाबे रतिरमण काका सोल्होअना पाक-साफ भेबे कएल मुदा गंगा नदी पार केलाक पछाइत तीनू गोरे–राम-सीता लक्ष्मण आकि राम-लक्ष्मण सीता, जकाँ पाक साफ भेला, से तँ मलहबा जानए मुदा रतिरमण दोस काका तहिना हुअ लगला तँए मनमे ठहकबे ने केलैन।

मुदा अपन विचार ओइ सीमापर अँटैक गेल जे पिताक संगी ने रतिरमण काका छैथ, तँए...। दोसर दिस मन ओम्हरो वौआए लगल जे दिन-राति तँ सभ दिना छी, ओ किए केकरो नीक छोड़ि अधला करत। तैठाम रतिरमण काका अपन जिनगीक दोख अपने ऊपर नइ लैत, समय[6]केँ दोखी बना रहल छैथ। गैंची माछ जकाँ माइटिक तरे-तर सुरकुनियाँ मारि रहला अछि...।

अही गुण-धुनमे हमर मन औनाए लगल। जइसँ हरेलहा बेटोही जकाँ चेहराक रूप बदलए लगल छल, जे रतिरमण काका बुझि

---

[6] दिन-राति

गेला। चटसारक लोक रतिरमण काका सभ दिन रहला। मुड़ी डोलबैत बजला- “बौआ दीनानाथ, तों की कियो आन भेलह, रंगमे भंग भऽ गेल!”

ओना, सोझ-साझ विचार सुनि हमहूँ बुझि गेलौं जे जिनगीक रणभूमिक रणमे भंग भेलैन, मुदा एते तँ अपनो जिज्ञासा जगिये गेल छल जे ‘रंगमे भंग’ केना भेलैन।

पुछलयैन- “से की दोस काका?”

हमर जिज्ञासु मनक (पिपाशु मन) बोल सुनि रतिरमण काका बजला- “बौआ दीनानाथ, जुग बदैल गेल! की अपने छेलौं आ की समाज छल, से जखन मोन पड़ैए तँ आँखिसँ नोर झहरैए। केतए गेल ओ समाजक विचार आ समाजक चलैन! ओह..!”

ओना, ई बात रतिरमण काका छिपा लेलैन जे समयक गति-विधिसँ जेना अनुभुआर रहल होथि, मुदा कोनो जगहपर पहुँचैले एकटा सोझको रस्ता होइ छै आ दोसर घुमौन सेहो होइते छइ। रस्ता बनैए धरतीपर, जइ धरतीपर खेत-पथार, बोन-झाड़, धार-धुर, पहाड़-पहाड़ी सभ अछिए तैठाम जँ हवाइ मार्गक सोझ-साझ रस्ता हियेबै, तइसँ पहिने ने अपनोकेँ हिया लिअ पड़त जे अपने केतए छी। चपचपीक चपाड़ा दैत पुछलयैन-

“से की दोस काका?”

हमर बात सुनि एकाएक रतिरमण काका जिनगीक रणभूमिमे जेना मुहेँ भरे खसल होथि तहिना चेहराक रूप बदैल गेलैन। बजला किछु नहि मुदा...।

❑ शब्द संख्या : 2237, तिथि : 20 दिसम्बर 2018

खिलतोड़ भूमि

तिलासंक्रान्तिक भोर। भोर माने तीनबजिया भोर नहि बल्कि सूर्योदयपरक भोर। दरबज्जापर बैस मने-मन पाबैनक हिसाबक गर लगबैत रही। कहब जे जखन सभ किछु पाबैनक बुझले अछि तखन गर लगबैक की आतुर भऽ गेल?

आतुरक कारण भेल जे सालक जेतेक पाबैन अछि ओ एकरंगाह अछि, माने ई जे चाहे तँ सुर-सुर हएत, नहि तँ मुर-मुर हएत। मुदा तिलासकराँति तँ से नइ छी। ऐमे तँ दुनू हएत। सुर-सुरो हएत आ मुर-मुरो हएत। तहूमे खाली जँ खाइये-पीबैक रहैत तँ एकचकिया गाड़ी जकाँ असान रहैत मुदा से तिलासकराँति तँ छी नहि। तहूमे आन-आन पाबैनक महिना-तिथि निर्धारित अछि जे फल्लाँ तिथिमे फल्लाँ पाबैन हएत, से तँ तिलासकराँतिक रहल नहि। आन पाबैन जकाँ तीर्थक हेर-फेरसँ गोटे साल गोटे पाबैन आगुआ-पछुआ जाइए, मुदा फेर आगू चलि अपन धुरी पकैड़ लइए। से तँ तिलासकराँतिकेँ हएत नहि, चौदह जनवरीकेँ जे सभ साल पाबैन होइत आबि रहल छल ओ चौदहसँ आगू घुसैक पनरह जनवरी भऽ गेल जे आब कहियो ने चौदह जनवरी हएत..!

अही गुन-धुनमे विचार वौआइत रहने कोनो गरे ने बइसैत रहए। तैसंग घाट परहक लहकी बंशी जकाँ मनमे ईहो लहकए जे आजुक सूर्य मकर रेखा पेब अपने आइ दछिनायणसँ उत्तरायणिक दिशा घुमत, तहुमे बिनु झगड़ा-दन आ बिनु पनचैतीक। तँए जेना

पाबैनक दिन खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ मौज-मस्तीक होइए से भइये ने पेब रहल छल। तही बीच फुकना आबि बाजल-

“काका, चारि बजेमे बुझारत[7] छी, से कनी रहबै।”

बिना किछु पुछने-आछने फुकनाकेँ कहि देलिऐ- “ठीक छह, रहबह।”

मनमे कोनो एहेन बाते आकि विचारे उठबे ने कएल जे झोंझियाएल बुझारतमे फँसि जाएब। उठबो केना करैत, अखन धरिक जे अनुभव छल, ओ यएह ने छल जे या तँ कोनो पारिवारिक विवादक बुझारतमे जाइत रहलौं वा कोनो आन परिवारक संग विवादक बुझारतमे जाइत रहलौं अछि। तँए, कोनो ओहन समस्ये किए मनमे अबैत जेकर निमरजना नइ कएल हएत। बुझले अछि जे कियो माइट वा पाथरक बनौल शिवलिंग दर्शन करैए आ कियो ‘शिव-शिव’ समाज वा देश-दुनियाँक करैए। करै तँ दुनू शिवे-शिव अछि। केकर बातकेँ के सेवक बनि बुझए चाहैए आकि मालिक जकाँ आदेश करैए। लोको तँ लोके छी, हजार-दू-हजार बर्ख पहिनौं– जखन अपनाकेँ, आजुक नजैरमे जंगली वा पछुआएल बुझि जाति-सम्प्रदायक लड़ाइ-झगड़ा करै छेलौं आ आइयो जखन अपनाकेँ अगुआएल बुझै छी, अखनो नइ करै छी सेहो तँ सबहक सोझहेमे अछि।

ओना, फुकनाक अदम्य बिसवास हमरा ऊपर छइहे, तँए पूर्ण तुष्टिसँ खुशी होइत विदा भेल। अदम्य बिसवास फुकनाक ऐ दुआरे हमरा ऊपर छै जे अपन विचारे बुझू जे दोसराक मदैत करब मनमे अछि आ फुकनाक मनमे ई छै जे जहिया-कहियो जे किछु मंगलक वा पुछलक से नीक मानि जरूर देलिऐ वा कहलिऐ। मुदा एक्के

---

[7] पनचैती

बिसवासक कारण दुनू गोरेक मनक अपन-अपन अछि। अपना जगहपर दुनू नीके अछि, तँए जँ विचार-भिन्नताक कारण अछियो तँ परिणाम[8] एकरंगाहे अछि।

फुकना विदा भऽ केतौ ने गेल, सोझे अपना ऐठाम आबि पत्नीकेँ कहलक- "आइ तिलासकराँइत पाबैन छी, सुर-सुर, मुर-मुर दुनू हएत। ओकाइत ओहन अछि नहि जे अनकर देखौंस करब। लाइ-मुरही धिया-पुताक पाबैन छी, अदहा खर्च दिनुका खेनाइमे लगा देबै आ अदहा खर्चकेँ संचित सम्पैतमे लगा देबै तखन ने आनो-आन बुधियारो कहत। आ अपनो आगूक ठेकनगर ठौरो भेटत।"

सुग्गा जकाँ मनभावनी (फुकनाक पत्नी) पतिक बात सुनि पाबैनक तिल-चाउर-गुड़ मने-मन खाए लगली। किए तँ पतिक मुहेँ 'बुधियार' जे सुनि लेलैन..! भाय! अपना मने दुनियाँमे के बुड़िबक अछि, केकरा ने मन होइ छै जे हम अपन मनक बात अनका ऊपरमे नइ लादी। मुदा मनभावनीकेँ से नहि भेलैन, हुनकर अपन विचार छैन, जइ विचारानुकूल ओ बुझि रहल छेली जे अपन मनक मानि ताबे तक नइ हएत जाबे दोसर 'बुधियार' नहि बुझत। मुदा दोसर तँ तखने बुझत जखन अहाँक नीक बुधिसँ ओकरा नीक काजक फल भेटतै। खाएर जे से...। बिसवासनी पत्नी जकाँ–माने श्रद्धायुक्त पत्नी जकाँ–मनभावनी बजली-

"पाबैन रहौ कि नइ रहौ, अहाँक विचार हम कहिया नइ मानलौं जे अहाँ फरिछा कऽ बुझबै छी। पहिने अहाँकेँ खुआएब पछाइत ने अपने खाएब।"

जिनगीक बाटमे फुकना पत्नीकेँ मिसियो भरि अवरोधी अनका जकाँ नइ बुझलक...। बाजल- "अहाँ दुपहरिया-खेनाइक

---

[8] फल

ओरियानमे लगि जाउ, बीचमे हम बजारसँ एकटा कोदारि कीनने अबै छी। बेँटो[9] सुखा कऽ रखनहि छी, कोदारि हाथक ओजार भेल, ओजारे बले ने हाथ चलत।"

कहि फुकना पत्नीकेँ पाबैनक घर-आँगन सुमझबैत कोदारि कीनए बजार विदा भेल। आँगनसँ निकैलते फुकनाक मनमे उठल, ठकहरबाक बजार बनि गेल अछि, बेसी पाइयो लऽ लेत आ चीजो दब देत। दुनू हाथे बेपारी सभ ठकहरबा रोटी बना-बना रोटिपकामे सिझा-सिझा नून-तेल-मिरचाइ मिला-मिला खाइए। से नइ तँ जीयालाल काका चीज-वौस कीनब बेसी बुझै छैथ, हुनकासँ पुछि लेब नीक हएत। माने ठकाएब नहि...।

रस्ते कातमे जियालाल कक्काक घर, रस्तेपरसँ फुकना जीयालाल काकाकेँ शोर पाड़ैत बाजल-

"काका छी यौ, यौ कका..! डुमरी फूल जकाँ केतए हेराएल रहै छी जे...।"

एक तँ फूल फूले भेल, गुलाब कहने केहेन गुलबिया आँखि भेटैए से तँ बजनिहारे बुझत। मुदा तैठाम तँ 'डुमरी फूल' स्वर्गोमे नहि, ओ तँ अथाह समुद्रक समाजमे रहैए, सुनि जीयालाल काका मृदुहास हँस-हँसी हँसि आँगनसँ निकलैत बजला-

"फुकन! आइ तँ पाबैन दिन छी, भरि दिन लोक खेबो करत आ मलड़बो करत, तूँ सभ छोड़ि केतए विदा भेल छह?"

ओना, फुकनाक मनमे ई नइ उठल जे दुनियाँकेँ चिन्है-जानैक दू रस्ता अछि। एक अछि जेते दुनियाँक चीज वस्तुक रूप-गुणकेँ बुझब तेते भौतिक ज्ञानी हएब आ जेते ओकर रूप-गुणकेँ मने-मन

[9] कोदारिक बेँट

अड़ैज, खगता-बिनु-खगताक नजैरिये जेते देखैत छोड़ैत-पकड़ैत चलब ओते आध्यात्मिक हएब। फुकना किए बुझैत जे दान सभसँ मूल्यवान छी, जे देलासँ मनकेँ तुष्टि भेटै छइ। बुझबो केना करैत? वेचाराक मन परिपक्व रहितै तखन ने, से तँ छेलै नहि। जँ से रहितै तखन ने बुझैत जे उच्च कोटिक दान भेल- ज्ञान दानक चरम कोटिक आध्यात्मिक दान आ निम्न कोटिक दान भेल शरीरक सेवासँ लऽ कऽ चीज-वस्तुक दान धरि। ओना, शरीर दानमे श्रमदानक संग-संग प्राणदान तक अछि, आ चीज-वस्तुक दान भेल साधारण चीजसँ लऽ कऽ राज-पाट धरि। खाएर जे से...।

जीयालाल कक्काक बात सुनि फुकना बाजल-

“काका, अपने तँ कहियो कोदारि कीनलौं नहि जे ओकर तरी-घटी बुझब। अहाँकेँ सभ कथुक तरी-घटी बुझल-गमल अछि, तँए मन कहलक जे हुनकासँ बुझि कऽ कीनिहऽ।”

फुकनाक बात सुनि जीयालाल कक्काक हृदय धकधका गेलैन। धकधकेलैन ई जे यएह ओ जगह छी जैठाम लोक अपनाकेँ बिसवासपात्र सेहो बनबैए आ बिसवासघात सेहो बनैबते अछि। तँए एहेन गौ-कस्सी नइ करब जे फुकनाकेँ कोनो तरहक अवघात हेतइ। ओना, बजारक जे रूप-रंग बनि गेल अछि ओ बिसवासहीन बनि गेल अछि, मुदा अपनो जिनगीक तँ ठौर अछि। जेते बुझै छी तइमे मिसियो भरि छल-प्रपंच फुकनाक संग नइ करब। जइ बिसवासक संग फुकना पुछलक तही बिसवासक संग ओकरा बुझा देबइ।

जीयालाल काका बजला-

“फुकन! ओना, बजारमे केतेको लोहा-लक्कड़क दोकान अछि मुदा हमरा नजैरमे शिवनाथेक दोकान एहेन अछि जे एक दामो रखने अछि आ वस्तुओ नीक रखैए। तँए शिवनाथक ऐठाम पहुँच

कोदारि कीन लिहह।”

जीयालाल काकापर फुकनाक बिसवास जमले छल, चुपचाप सभ बात सुनि बजार दिस विदा भेल।

एक तँ ओहुना काजक प्रति बिसवास जगने फुकनाक मन मस्त छल, तैपर जीयालाल कक्काक मुहेँ सुनि आरो मस्तसँ मस्ती चढ़ि गेलइ। बजारसँ चौरासी रुपैआमे छ नम्बर कोदारि टाटा कम्पनीक कीनि फुकना एगारह बजेमे घुमि कऽ घरपर आएल।

ओना, तिलासकराँतिक हो-हा सौंसे गाम होइते छल मुदा संयासी जकाँ फुकना दुनियाँमे रहितो दुनियाँसँ अपनाकेँ अलग करैत घरपर अबिते विचार केलक जे नहाएब-खाएब पछाइत, पहिने कोदारिमे बेँट लगा लइ छी जे एकटा काज अगुआ जाएत। सएह केलक।

समयसँ किछु पहिनहि, माने पौने चारिये बजे हमरा ऐठाम फुकना आबि बाजल-

“काका, समय भऽ गेल। शिवसुन्दर काका घरेपर छैथ।”

फुकनक चाँकि देखि अपनो चौकन्ना रहबे करी। किए ने रहितौं, जखन फुकन मानि लेलक तखन जँ ओकर मान नहि रखिऐ, सेहो केहेन होएत। बजलौं-

“आरो केतौ जेबह आकि अहीठामसँ चलबह?”

फुकन बाजल-

“काका, जँ दुनियाँमे एकोटा समझदार आदमी इमानसँ अपन जिनगी निमाहैथ तँ देखा-देखी अनेको जिनगी सुधैर सकैए। अहाँ कियो आन छी जे दोसरो-तेसरोकेँ संग करब।”

फुकनाक अटुट बिसवास देखि विदा भेलौं। मुदा अखन तक

बुझारतक विषय बुझले ने छल। शिवसुन्दर भाय घरेपर छला। ओना, शिवसुन्दर भाइक पैछला केतेको पुस्तसँ गाममे प्रतिष्ठित परिवारक निमरजना करैत आबि रहल छला, जे अखनो छैन्हे। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैसल शिवसुन्दर भाय लग अपनो बैसलौं आ फुकनो बैसल। शिवसुन्दर भाय बजला-

"फुकन, भने आइ पाबैनक दिन सेहो छीहे, जे कहबह जेना कहबह हमहूँ तैयार छिअहे। देखिते छहक जे अपनो नोकरिया भेलौं आ बेटो दुनू नोकरिये भऽ गेल। गाममे रहलेपर ने कियो किछु कए सकैए। से तँ रहै नइ छी।"

ओना, अखन तक बुझारतक बिन्दु की छल से बुझबे ने केने छेलौं, तँए मन वौआइ छल जे किछु बजैसँ पहिने ओकरा बुझब जरूरी अछि। मनमे अनायास उठल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल..! जहिना साहित्य समाजक दर्पण रहितो समाजसँ गाइब रहैए तहिना भऽ गेल अछि। ओना, मनमे ईहो हुअए जे कोनो समाजकेँ बनला पछातिये ओकर साहित्य सृजित होइए। मुदा ईहो हुअए जे साहित्य तँ संसारमे पसरले अछि। नव-नव केतेको रंगक समाज दिन-दिन बनियोँ रहल अछि आ मेटाइयो रहले अछि। जहिना समाजक दशा अछि तहिना तँ साहित्योक अछिए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहऽ। अखन जे आगूमे विषय आबि रहल अछि, पहिने ओ ने बुझब अछि, मुदा बजा कऽ तँ फुकना अनने अछि, जे वेचारा भोला-भला सोलहन्नी सुधंग अछि। शिवसुन्दर भायकेँ आगू भऽ केना किछु पुछिऐन। मन अग-दिगमे पड़ले छल, मुदा ईहो मनमे उठिये रहल छल जे काजक चर्च[10] जखन उठत तखन विचार करैक बिन्दुपर किछु बाजब। तँए चुपे रही।

[10] बुझारतक चर्च

संजोग बनल, शिवसुन्दर भाय अपने मुँह खोलैत बजला-

“गौरी, हम तँ परदेशी भेलौं। नोकरी करै छी गुजर करै छी मुदा तूँ ते से नहि छह।”

शिवसुन्दर भाइक विचार सुनि मनमे सह भेटल। बजलौं-

“भाय, गाम तँ जत्ताक तरोटा जकाँ अखनो कीलमे ठोकले अछि, मुदा तेकरा तँ गामेक लोककेँ बुझौ पड़त आ ओकर निमरजनो करै पड़त।”

हमर विचार जेना शिवसुन्दर भायकेँ नीक लगलैन तहिना समगम होइत बजला-

“गौरी, भने तीनियेँ गोरे छी। तँए हमर की समस्या अछि आ फुकनाक की समस्या छै, ओकरा नीक जकाँ पकैड़ एक विचारमे अनलाक पछातिये ने कार्य रूप देल जा सकैए।”

बजलौं-

“हँ, से तँ देले जेबा चाही।”

अपन परिवारक पैछला चर्च करैत शिवसुन्दर भाय बजला-

“गौरी! बाबाक रोपल दू बीघाक गाछी-कलम छल, जे आब परती बनि पड़ल अछि। पुरान भेने गाछो-बिरीछ बिमरियाहो भेल आ सुखबो कएल। तैसंग अपनो गाछकेँ बेचबो केलौं। उपटैत-उपटैत सौंसे गाछी उपैट गेल। ओकरा चाहै छी तोड़ि कऽ उपजाउ खेत बनाबी।”

बजा गेल-

“ई तँ नीक विचार अछि!”

शिवसुन्दर भाय, की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मनमे हरियरीक उदय जरूर भेलैन। बजला- “फुकनाकेँ कहलिऐ अपने

सभ समांग बाहरे रहै छी, घरोमे तल्ले झुलैत रहैए, एते दिन दू मास गाममे रहै छेलौं। एक मास आमक समयमे आ एक मास अगहनी समटैमे। ओना, खेतो-पथार अपने नहियेँ करै छी, ओहो बँटाइये लगल अछि, मुदा तैयो अगहन बीतैत पूसमे सभ साल एक मास-ले अबिते छी। पाँचम दिन गामसँ चलि जाएब, तँए मनमे भेल गाछियोबला जमीनकेँ ठेकान लगा उपजाबी, सएह फुकनाकेँ कहलिऐ।”

नीक जकाँ तँ सभ बात नइ बुझलौं, मुदा अदहा-छिदहा तँ बुझबे केलौं। बजलौं- “फुकन, शिवसुन्दर भाय की बजला से बुझलहक?”

फुकन बाजल-

“काका! बुझलौं कहाँ, खाली सुनलौं। तँए ने अहाँकेँ बीचमे आनि बीचमान बना बुझारत करए चाहै छी।”

फुकनाक विचारमे केतौ छल-प्रपंच नहि बुझि पड़ल। ओना, शिव सुन्दरो भाइक विचारमे सेहो केतौ पेंच-पाँच नहियेँ बुझि पड़ल छल। मुदा दुनूक बीच सामंजस (सामन जस) केना हएत से तँ अछिए। बजलौं-

“शिव भाय, अहाँ अपने समझदार छी तँए केना दुनू गोरेक बीच सामंजस (समाज जस) हएत से तँ अपने ने विचार करब। फुकना तँ सहजेँ आगू-पाछूक कोनो बात बुझि नइ पेब रहल अछि, तँए ओकरा मनमे बिसवास पैदा करबे ने दुनू गोरेक लेल मूल भेल।”

सहमत होइत शिवसुन्दर भाय बजला-

“की फुकन, तोहर की विचार छह से तँ तोहीं ने बजबह।”

शिवसुन्दर भाइक विचार सुनि फुकना अग-दिगमे पड़ि गेल। एक तँ नव काजक सूत्रपात, दोसर बुधियोसँ फुकना पछुआएल

अछिए। बाजल- “शिव काका, अहाँ जे कहब से मानि हमहूँ काजमे भीड़ जाएब।”

ने शिवसुन्दर भाय खोलि कऽ बाजि रहल छला आ ने फुकने बुझि रहल छल जे आगू की हएत जैपर नजैर दैत किछु बजबो करैत। अपना मनमे हुअए जे जखन फुकना बुझारत करैले बजा कऽ अनलक तखन जँ कोनो निर्णयपर नहि पहुँच बिच्चेमे छोड़ि दिऐ सेहो नीक नहियेँ हएत। बजलौं- “शिवसुन्दर भाय, अहाँ-आगू हम बच्चे भेलौं किने, तँए जइसँ दुनू गोरेकेँ अधिक-सँ-अधिक नीक हुअए, हम तँ सएह ने चाहब।”

ओना, बजैक क्रममे बजा गेल। तैसंग अखन तक जे अनाड़ी जकाँ छेलौं–माने बिनु बुझल जकाँ–तहूमे कनी-कनी सुधार भेल। भलेँ सोल्होअना नइ बुझि पेलौं मुदा सोलहन्नी नहियेँ बुझि सकलौं सेहो बात नहियेँ रहल। मनमे ईहो शंका होइत रहए जे अखन धरिक एहनो तँ इतिहास अछिए जे गाम-गाममे एकाध गोरे एहेन होइत रहला अछि जे भगवानक भजन करैले ‘भजनियाँ मेड़’ सेहो बनौलैन, मनोरंजन लेल नाचो-गानक मेड़ आ साहित्य सर्जन लेल मेड़ सेहो बनौलैन मुदा सभ कारगरे भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। दुनू तरहक भेबे कएल। केतौ-केतौ भजनियोँ मेड़, नचनियोँ मेड़ आ साहित्य सरजकक मेड़ नीक जकाँ क्रियाशील सेहो भेले अछि आ केतौ-केतौ अपनामे झगड़ने टुटबो केबे कएल। तँए, एहेन परिस्थिति जइ समाजमे सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि तैठाम ओहन रस्ता पकैड़ चलब ने नीक हएत जइसँ सभ दिन आगू मुहेँ ससरैत नीक-सँ-नीक बनैत चलए। ओना, समाजक संग समैयोक प्रभाव पड़िते अछि तही बीचमे ने जीबोक अछि आ खुशी-खुशी आगूओ बढ़ैत चलैक अछि। अपन होशियारी देखबैत शिवसुन्दर भाय बजला- “गौरी, अखुनका जे परिस्थिति अछि तइ अनुकूल

अखन विचार करह। जेना-जेना समय अबैत जाएत तेना-तेना विचारो करैत चलब। अपना ऐठामक शास्त्रमे जे ‘स्मृति’ अछि ओहो सएह कहैए।”

शिवसुन्दर भाइक विचार नीक लगल। बजलौं- “भाय, जैठामसँ काज शुरू हएत तैठामसँ विचार करैत एक-एक पहलूकेँ समधानि कऽ समाधान करैत विचार करब बेसी नीक हएत।”

शिवसुन्दर भाय बजला-

“बढ़ियाँ विचार छह!”

शिवसुन्दर भाइक सहमत देखि मने-मन विचार केलौं जे हम किछु छी तँ तेहाला छी, असल हानि-लाभ तँ शिवसुन्दरे भाय आ फुकनेकेँ हएत। तँए नीक हएत जे वएह दुनू गोरे किए ने अपन-अपन पक्ष रखि एकमत होइथ। बजलौं-

“भाय! अपने तँ सभ किछु जनिते छी, तँए नीक हएत अपन विचार अहूँ रखू आ अपन विचार फुकनो राखह। तैबीच जँ कोनो ओझरी लगत ते गवाह जकाँ–माने तेहाला जकाँ–ओइ ओझरीकेँ सोझरबैक परियास हमहूँ करब।”

अपन काज जँ अपना विचारे समुचित ढंगसँ करैक लूरि जँ भऽ जाए तँ ओ सभसँ सुन्नर भेल। जे बात शिवसुन्दरो भाय बुझलैन। बजला-

“गौरी, अपने तँ जिनगी भरि नोकरीसँ उपारजन करैत एलौं हेन, गामक खेत-पथार बपौती सम्पैतक रूपमे अछि, तँए चाहै छी जे ओहो सम्पैत मरणशील नहि जीवंतता धेने रहए।”

बजलौं- “केतेको बर्खसँ जोत-कोरक अभावमे जमीन परती बनि गेल अछि। ओना, परती जमीनकेँ हरोसँ आ कोदारियोसँ तामि-कोरि उपजौले जाइए मुदा से होइए सालक परतीक। ऐठाम तँ से

नहि..!”

हमर बात जेना शिवसुन्दर भाय नीक जकाँ बुझि गेला तहिना बजला-

“सैयो बर्ख ऊपरेसँ जमीन परता भइये गेल अछि। आइ-काल्हिक जुगमे ने कियो-कियो गृहस्त सालमे एकबेर गाछी-बिरछीकेँ कोदारिसँ तमेबो करै छैथ आ पटेबो करै छैथ, मुदा हम तँ अखनो धरि पुरने ढाठी धेने छी, तँए माटि पथरा गेबे कएल अछि, जेकरा खेत बनबैमे दोबरोसँ बेसी भीर पड़बे करत। फुकनाक गरीबी देखि मन पसिज गेल जे किए ने मदैत कएल जाए।”

बजलौं-

“बुधियार लोकक जेहेन बुधिगर विचार होइए से तँ अपने बाजिये गेलौं। तँए किए ने ऐगलो विचार करैत अपनहि रस्ता निकालि ली।”

अपनाकेँ बीच सीमापर ठाढ़ होइत देखि शिवसुन्दर भाय बजला- “फुकन पेटबोनियाँ अछि, जखने बोनि छोड़ि अपन काजमे लागत तखने पेट चलब कठिन भऽ जेतइ, जइसँ ओ काज नहि कए सकतै।”

बिच्चेमे बजा गेल- “से तँ हेबे करत।”

हृदय खोलि शिवसुन्दर भाय बजला-

“जाबे तक खेतसँ उपज नइ हुअ लगत ताबे तक खाइ-पीबैक जोगार हम ओहिना–माने पैंच-उधारसँ मुक्त–कए देबइ।”

बजलौं- “की फुकन, विचार नीक लगलह की नहि?”

ओना, फुकनक मन पेटबोनियासँ गिरहस्त बनैक गिरहस्तीपर नाचि रहल छेलइ। मुदा तैयो अपनाकेँ सम्हारैत बाजल- “काका!

पंच परमेश्वर होइ छैथ, अहाँ दुनू गोरे कि हमर गरदैनकट्टी करब।”

अपन मनक बिसवास जगैत शिवसुन्दर भाय बजला-

“फुकनकेँ खेत बनबै आ उपजा उपजबैमे जे खाद-बीआ आ पानिक जरूरत पड़तइ सेहो मदैत करि देबइ।”

हँसैत फुकना बाजल-

“शिव काका, अहाँ तँ भगवानोसँ बेसी मदैत करैले तैयार छी..! हमरा तँ सोझे देहे-हाथटा ने अछि तइसँ जे सम्भव हएत तइमे फुकनाकेँ फुकना नइ बुझि मुकना बुझब। बेसी की कहब।”

शिवसुन्दर भाय बजला-

“खिल तोड़ि जमीनकेँ उपजाउ बना उपजा लेब, तोरे सन-सन पुरुषार्थ जेकरामे हेतइ सएह कए सकैए।”

‘पुरुषार्थ’ सुनि फुकन बाजल-

“काका, अपनेक दया-दृष्टि चाही।”

❑ शब्द संख्या : 2590, तिथि : 17 जनवरी 2019

बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह

माघी इजोरिया पंचमीक दिन। जहिना एकपुरखिया फड़क मिरचाइक गाछ होइए तेना नहि, घौदियाएल जकाँ जे फड़ैए तहिना आजुक दिन छी। अढ़ाइ मोड़ जोइत जहिना किसान हर ठाढ़ करैत जीवन जीबैक बिसवासक संग आइ पाबैन करता तहिना बाल-बोध बच्चा विद्यालयक संग अपन घरोमे सारस्वतक संकल्प लैत पूजनीय सेहो बनेबे करत। तँए-कि समय केकरो मुँह तकैत रहत आकि ओहो वसन्त-वसन्त करबे करत। पाँच कट्ठा भरिक बैगनक बगानमे अपनो आड़िक बगलमे–माने खेतमे–ठाढ़ भेल, जेते खुशी वसन्त-वसन्त करैत समयपर नाचि रहल छल तइसँ बेसी बैगनक गाछ देखि-देखि अपन मन सेहो नचनिया नटुआ जकाँ घघड़ा पसाइर नाचि रहल छल। नचबो केना ने करैत! मनुक्ख केतबो बुधियार आकि लूरिगर किए ने हुअए, मुदा जइ उमेरमे बैगन दोहरी जुआनी धड़ैए से थोड़े भऽ सकैए। माने ई जे बैगनक फलन दोहरा कऽ चैती होइए जे माघेमे फूल पकैड़ फुलाइए।

दच्छिनसँ उत्तर मुहेँ वा उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ जे चौरगर रस्ता अछि ओही बगलमे अपन चौमास अछि जे अपना चालिये कखनो वामी तँ कखनो दहिनी भाग रस्ता पकड़ैए। जइमे बैगनक बगान लगौने छी।

दच्छिनसँ उत्तर मुहेँ अपना ऐठाम जीवानन काका अबै छला। रस्तेपर सँ खेतकेँ हिया कऽ देखि बजला- “बैगन बगान बनरा गेलह

आ तूँ मुँह तकै छह!”

अखन तक अपन मन खुशीसँ भरल छल। भरल रहैक कारण ई छल जे जेठे मासमे बैगन रोपने छेलौं जे चढ़ैत सौनसँ ढेनुआर गाय जकाँ फल दिअ लगल। भाय, ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे केतौ दुदहे फल होइए, केतौ फुले फल होइए, केतौ फूलसँ फड़ होइए आ केतौ फड़े फूल सेहो होइए। तँए, से सभ नहि, ऐठाम बैगनक विषय अछि। ओना, बैगनक फड़ तोड़ैक पार आठ दिनपर अछि मुदा ओ निर्भर करैए खेतक उर्वर शक्तिपर। एहेन समय आबि गेल अछि जे आजुक एक बीतक सजमैन एक्के सूइया पड़ने भरिये दिन-रातिमे मोटाइयो कऽ आ बढ़ियो कऽ तेहेन तैयार फल जकाँ भऽ जाइए जे तोड़ि नहि लेब तँ अनेरे लोक कहए लगल जे फल्लाँ खेतमे सजमैन बुढ़ा-बुढ़ा दुइर करैए आ केकरो दानमे दइयो देत से नइ होइ छइ! भारी अदत गाममे जन्म लऽ नेने अछि...।

मुदा से सभ किछु ने, शुरू सौनसँ लऽ कऽ सौंसे भादो धरि चारि दिनपर पार लगा बैगन तोड़ै छेलौं आ आसिनक दुर्गापूजासँ पाँच दिनपर तोड़ए लगलौं जे दिवाली तक तोड़लौं। जेना-जेना ठण्ढक आवाहन हुअ लगल तेना-तेना समय बढ़बैत तिला-सकराँइत अबैत-अबैत आठ दिनपर बैगन तोड़ैक पार लगेने छेलौं। पैछला छह मासक आमदनी देखि मनमे एते खुशी उपजब तँ सोभाविके ने अछि। देखिते छी जे चीनी मिलक हाकिमसँ लऽ कऽ श्रमिक तक जखन छबे मासक दरमाहासँ सालो भरि खेप सकै छैथ तखन छह मासक आमदनीपर साल भरि अपने किए ने खेप सकै छी, तँए छ-मसिया खुशी नहि बरह-मसिया खुशी मनमे तनतनाइये रहल छल। जीवानन कक्काक बात सुनि मनमे ओहिना घटना जकाँ घटल जहिना कोनो विद्यार्थी दिन-राति किताबक कीड़ी बनि कोनो विषयकेँ चाटि परीक्षामे फेल ई कहि होइए जे फल्लाँ किताबे अशुद्ध

अछि। मन सकपका गेल। मुदा जीवानन काकामे ओहन गुण सभ छैन्हे जे केकरो मुहेँपर चेतौनी दैत बजै छैथ। ओना, चेतौनीक अर्थ दू तरहेँ लोक बुझै छैथ, पहिल कोनो विषय वा काजकेँ चेतनशक्ति दैत आगू मुहेँ धकलै छैथ, तँ दोसर एहनो अर्थ तँ अछिए जे चेतौनीक माने लोक अपन प्रतिष्ठासँ जोड़ि ढंग बदैल बुझै छैथ। मुदा ऐठाम से नहि अछि। जीवानन काका ओहन उपकारी लोक छैथ जे अपन जिनगीक क्रियाकेँ गीता जकाँ रटिकऽ भरि दिन गबैत रहै छैथ। जहिना ठनका सन बज्रो जेतए खसैए तहूठामक लोक जखन चुन-तमाकुल आ सिगरेटे-बीड़ी सुनगा-सुनगा ओहनो चोटकेँ मिझैबते अछि तहिना बजलौं-

“काका, तमाकुल खा लिअ तखन जाएब।”

ओना, अपना मनमे ईहो छल जे अपन छह मासक खुशीक भण्डार सेहो देखा देबैन आ कोन रूपमे बजला सेहो बुझि लेब।

तमाकुलक नाओं सुनि जीवानन कक्काक मन ओहिना पसिज गेलैन जहिना कोनो अन्हराएल परिवार–माने जे परिवार सभ तरहेँ अन्हारमे अछि–तेकरा देखि कोनो साधु-सन्यासीकेँ होइ छैन, तहिना मनमे भेलैन। मुस्की दैत जीवानन काका पुछलैन-

“तमाकुल टीपगर छह किने?”

जीवानन कक्काक खुशी-मनमे अपन जिज्ञासु मनकेँ मिलबैत कहलयैन-

“काका, जहियासँ बैगन महरानीक आगमन भेलैन तहियासँ अपने सकरी-कट तमाकुल छोड़ि सरैसाक बड़की तमाकुल खाए लगलौं अछि।”

जे खुशी जीवानन काकाकेँ तमाकुलक सकरी-समस्तीपुर केलाक पूर्व छेलैन तइमे चेहरा देखि अपनो कमी बुझि पड़ल। तैबीच

धरियाएल मनक धारीमे मनकेँ बैसबैत जीवानन काका बजला-

“अहिना ने जेना-जेना लोकक मन जुड़ाइत जाइए तहिना-तहिना जुड़सँ फुर-फुर करैत फुरफुराइत जाइए।”

ओना, मनमे भेल जे दोहरा कऽ पुछिऐन जे से की काका? मुदा लगले औगुतेलहा विचारकेँ दबैत मन कहलक जे एकरे ने लोक बताह-भंगबताह आ बुड़िबलेल बुझैए जे विदा भेल कोनो गाम आ चलि गेल कोनो ओहन गाम जेतए चिन्हारए नइ रहने रातिक कोन बात जे दिनोमे रहब कठिन भऽ जाइ छइ। तँए मनकेँ समटैत बजलौं-

“काका, छह माससँ ई चास ओहन गाय जकाँ बास बनौने अछि जे अपन समयपर तेना तैयार होइत गेल जेकरा पेब कहियो मुँह मलिन नइ रहल।”

ताबे तमाकुलो तैयार भऽ गेल छल जे दुनू गोरे अपन मुँहमे लऽ नेने छेलौं। तमाकुलक रसे आकि अपन मनक रसे जीवानन काका केना रसिएला से ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे अपन जे गिरैत जीवन–माने बैगनक खेती–देखि रहला अछि तइसँ द्रवित होइत रसिया गेल छैथ। बजलौं-

“हनुमानजी-बानरक की गप भेल छल काका?”

बानरक नाओं सुनिते जीवानन काका जेना रामायण दिस थुसैक गेला कि की से ओ जानैथ मुदा अमल पाबि–माने तमाकुलसँ अमलाएल–मनक जेहेन ऊर्जशक्ति होइ छै तेहने शक्तिशील होइत बजला-

“गाछपर जे बच्चाकेँ छातीसँ सटौने बानर-बनरनी जकाँ नहि जे एक डारिपर सँ दोसर डारिपर कुदैत निच्चाँमे दुनू खसि जान गमबैए, बल्कि ओहन बानर जकाँ जे अपन पारिवारिक जीवन

तियागि असगरूआ जिनगीक संकल्प लैत राम-दरबारमे छाती फाड़ि हृदयमे बैसल रामकेँ देखा देलैन तेहेन। तेतबे नइ देखौलैन, देखौलैन ईहो जे हृदयसँ हाथ धरि एकबट्ट होइत केना चलैए से बानर।”

जीवानन कक्काक व्याख्याणक अन्त भाग अबैत-अबैत मन एतेक रसिया गेल जे हुअए जे आरो किछु सुनी मुदा सबहक मन कटे अन्न-पानि लकड़ी। तँए अपन मनकेँ समेट अपना लग आनि बैगनक चर्च करैत बजलौं-

“काका, फड़ल बैगन जे बानर-बनरनी खा-खा अपन हिस्साक अधिकार छिनैए से आकि कोनो दोसर बानर आबि गेल अछि?”

हाथ पकैड़ जीवानन काका खेतमे उतैर पहिलुके गाछ देखबैत बजला-

“ऐ गाछकेँ देखहक, ने गाछक रंग-रूप बिगड़ल अछि आ ने डारिक निचला पात–माने शुरूआती पात–मुदा ऊपरका पातकेँ अपनो निचला पातसँ मिला कऽ देखहक।”

ओना, अपना जनैत धाराक प्रवाह जकाँ जेना जीवानन काका बाजि गेला तेना अपने बुझबे ने केलौं। धार-कातक खेत जकाँ जेकर कोनो बिसवास नहि जे कखन पानिमे दहाएत आकि रौदमे रौदियाएत, तहिना भऽ रहल छल। बजलौं-

“काका, जहिना अहाँक आँखि बैगनक गाछ देखि रहल अछि तहिना हमरो आँखि देखि रहल अछि, मुदा अहाँ की देखै छी आ हम की देखै छी से बुझिये ने पेब रहल छी।”

‘बुझिये ने पेब रहल छी’ सुनि वाण जकाँ जीवानन काकाकेँ ई लगलैन जे एक भेल ज्ञाता, दोसर भेल सज्ञाता–माने एक ज्ञान दोसर अज्ञान, दुनूक बीच जे सामंजस हएत ओ एक प्रक्रिया वा प्रणाली छी, जइक माध्यमसँ सामंजस स्थापित होइए। दोसर शब्दमे ईहो

कहि सकै छिऐ जे दू जीवनक वा दू विचारक संक्रमण काल। एहेन दुनूक जीवनक दायित्व बनैए जे बौधिक आ बेवहारिक रूपमे सामंजस केना हएत। सामाजिक जीवन सबहक अपन माटि-पानिक अनुकूल अछिए। तँए, बिहार–जइमे मिथिला सेहो अछि, बंगाल आ मद्रासक समाजक बनाबटमे किछु बुनियादी तत्त्व अलग रहने, अलग-अलग प्रणालीसँ पारिवारिक सामाजिक गठन सेहो भेबे कएल अछि। मुदा से सभ अखन नहि, अखन एतबे जे अज्ञान-सज्ञानक बीच बौधिक आ बेवहारिक स्तरपर केना सामंजस हएत।

जीवानन कक्काक मनमे उठलैन- ओना ई रोग–बैगनकेँ बनराएब–एहेन अछि जइसँ ओकर प्रजनन शक्ति विदूषित भऽ गेल तँए कृत्रिम ढंगसँ उपचार केलो पछाइत, जापान जकाँ एटमी बमक प्रभावसँ बेसी लूल्हे-नाँगरक जन्म सइयो-साए बर्ख धरि हेबे करत। तँए एहेन रोगकेँ मेटबैक उपाय एतबे अछि जे बनरेलहा गाछकेँ उखारि कऽ कातमे रखि रौदमे सुखा ओकरा जारन बना ली आ जे गाछ खेतमे बँचल रहत ओकर आगू-पाछूक हिसाब जोड़ि जे नीक हुअए से करी। मुदा जहिना अपने बेवहारसँ बुझै छी तहिना कमलनाथ केना बुझि पौत जइसँ काज करैमे–माने जिनगीक क्रिया संचालित करैमे–बेसी विघ्न-बाधा उपस्थित नइ हएत। देव-दानव आकि काया-मायाक बीच जहिना जिनगी चलैए तहिना नीक-बेजाए केर मझधारमे जीवन-मरण सेहो अबिते अछि। तही बीच ने लोको अपन इच्छाकेँ किछु जगैबतो आ किछुकेँ सुतैबतो दिन-रातिक समय बितबैए। जीवानन काका सभ माया-मोह तियागि बजला- “कमल, सौंसे चास जखन हिया कऽ देखै छिअ तँ बुझिमे अबैए जे नीक हेतह जे बगाने उपटा दोसर चास-बासक ओरियान करह। ने रहत बगान आ ने औत बनरान।”

जीवानन कक्काक बात सुनिते मनमे जेना अट्ठा-बज्जर खसल

हुअए तहिना भेल। एकाएक अपन पैछला छह मासक लक्ष्मी महरानीक बास मनमे नाचि उठल। यएह चास छी जे अपन जिनगीक सभ जरूरतकेँ पूर्ति करैत हँसबैत आएल अछि। ओना, अखन जेहो नीक गाछ अछि तहूमे फलक नीक बढ़बारि सेहो नहियेँ अछि, जेना पछातिक लगौल बगानक होइए, मौसमी किस्मक फल रहने मौसमसँ प्रभावित रहिते अछि। मुदा एते तँ चासक बास अछिए जे माघक पछाइत नव सिरासँ अपन जुआनिये जकाँ एक तोर फड़बे करत जेकरा चैती फड़ सेहो कहल जाइए।

तरे-तर जीवानन कक्काक मनमे सेहो तूफान उठि रहल छेलैन जे कमलनाथक मनमे ईहो तँ उठिये ने सकैए जे हमर नीक देखि जीवानन बुधियारीसँ जरबए वा नष्ट करए चाहैए। मुदा बारह बजे दिन-रातिक जे आनन्दक फल भेटैए ओ भोर-साँझमे केना भेटत। तँए भोर-साँझमे आनन्दे नहि अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

दुनू गोरेक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। ने अपने बकार फुटै छल जे जीवानन काकासँ आगू किछु पुछिऐन आ ने जीवानने काका किछु बाजि रहल छला। दुनूकेँ दुनू दिससँ तेहेन वाण हृदयकेँ बेध रहल छल जे फुटैत तँ बहुत छल मुदा वाणी बनियेँ ने रहल छल। मनमे ईहो होइत रहए जे जेना लोक बजैए तहिना कहीं औगताएल कुमहैन जकाँ ने हुअए..! जहिना कोनो खाधिमे पानि सुखैत-सुखैत माटिक तरो चलि जाइए आ ऊपरो उड़ि जाइए तैबीचक एक अवस्था किचराएल सेहो होइते अछि जे पहिने खिचराइए पछाइत किचराइत सुखैत मटिआइए, तहिना अपनाकेँ मटियबैत ओहन बेना पकैड़ बजैक परियास केलौं जेहेन बेना पकैड़ बिमार अस्वस्थ पति पत्नीक लेल बजै छैथ वा पत्नी पतिक लेल बजै छैथ, तही अविस्थित अवस्थामे बजलौं- "काका, जीवन हारि रहल अछि..! तँए बीचमे जीतक कोनो क्षीण धारो जँ होइ तँ...।"

मने-मन विचार करैत जीवानन काका सेहो ओइ धरा-धाममे पहुँच गेल छला जैठाम पहुँच लोक निष्कपट बनि कपटपूर्ण धारसँ अपनाकैँ कात करैत अपन सृजित निर्मल-निष्कपट विचारक धारसँ छानि-छानि फेकैए वा छानि कऽ फेक दइए, तहिना जीवानन काका बजला- “कमल! चास देख[11] मन कहैए जे तूँ भरिसक चासक रोगकैँ नीक जकाँ नहि बुझि रहलह हेन, तँए मन भ्रमित छह जे पैछला जिनगी[12] जीवानन नष्ट करए चाहि रहला अछि।”

जीवानन कक्काक ठोकल विचार सुनि तन-मन दुनू काँपि उठल। तन-मनकैँ कँपैक कारण भेल जे जइ जीवानन कक्काक विचार अखन धरि अमृत स्वरूप[13] मानियोँ रहल छेलौं आ ओही अनुकूल भोगियो रहल छेलौं, तैठाम ओ केना धोखा देता माने अधला करता..?

बजलौं- “काका, पहिने सौंसे घुमिकऽ देखि लियौ तखन की नीक हएत से विचार दिअ।”

ओना, अखन तक जीवानन कक्काक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे हो-न-हो अपन टुटैत आमदनी देखि कमल विचार नहियोँ मानि सकैए, मुदा से भेल नहि। जीवानन काका बजला- “चलह, तोहूँ संगे-संग चलह। निरोग गाछ आ रोगाएल-बनराएल गाछमे केहेन लक्षणक दूरी बनि गेल अछि सेहो देखा देबह। पछाइत जे मनमे आबह सएह करिहह।”

जीवानन कक्काक विचार सुनि मन मानि गेल जे ओ अपन सिर अजश किए लेता। सिरमे सिरजैक जे विचार सदिकाल रहै छैन,

---

[11] माने बैगनक बगान देख

[12] छह मास पैछला जिनगी

[13] मृत्युक विपरीत

से कहए चाहि रहला अछि। बजलौं- “काका! ओना आइये नहि, पाँच बर्खसँ निसचिते बैगनक परसादे जिनगी हल्लुक भइये गेल अछि, मुदा आइ जे समस्या सामनेमे आबि ठाढ़ भेल अछि से नइ बुझै छी।”

दहिना हाथ पकैड़ जीवानन काका आगू बढ़ैत दोसर-दोसर बैगनक गाछकेँ देखबैत तुलनात्मक दृष्टिये बजला-

“कमल, ई जे गाछ छह–दोसर गाछ–से निरोग छह, ऐमे फूल-फड़ सेहो निरोग लागत, मुदा तेसर जे अछि ओ रोगाएल अछि–माने बनरा गेल अछि वा बँझिया गेल अछि। तैसंग ऐ रोगमे ईहो आफद होइए जे अपन प्रभावक हवासँ निरोगोकेँ रोगबैत रहतह।”

जीवानन कक्काक विचार सुनि जेना मनक भक्क थोड़ेक कमल। भक्क् कमिते मन हलुकाएल। बजलौं-

“काका, सौंसे खेतक की रंग-रूप बुझि पड़ैए?”

सौंसे खेतक बैगनक चास देखि जीवानन काका बजला- “कमल, हम जे कहै छिअ ओ कोनो मनगढ़ंत नहि छी, जे तोहर अधला करैत अपना मनकेँ जुड़ाएब। अपना ऐठाम जीवन जीबैक जे कला परम्परागत वा सनातन अछि ओकर किछु विशेष गुण सेहो अछिए।”

बैगनक चासक दृश्य मनमे जेना कमए लगल आ परम्परागत जे परिवर्त्तनशील विचार अछि ओइ दिस बढ़ए लगल। बजलौं-

“की विशेष गुण अछि काका?”

जीवानन काका बैगनक खेतीक चौहद्दी बान्हब छोड़ि जीवनक जे चौहद्दी अछि ओकरा बन्हैत बजला- “कमल, तोरा तँ बुझले छह जे वैष्णवो-बेरागी आ सन्तो-संयासी सभदिन रट लगबैत लोकोकेँ चेतैबते छैथ जे जिनगीक लेल तियागो एकटा अनिवार्य तात्त्विक गुण

छी, तँए हर मनुक्खमे एहेन भावक विचार रहके चाही। जइसँ ओकर जिनगी सुदृढ़-सुडौल, सुबल-सुन्दर बनल रहत।"

अपने अखन तक तियागक माने एतबे बुझै छेलौं जे बिमार भेल रोगीकेँ डॉक्टर चेतबै छैथ जे बीड़ी पीबै छह तँए दम्मा भेलह। आबो जँ ओकर तियाग करह तँ एकजुग[14] डाक्टरीक दबाइयो बले जीब सकै छह। एहेन परिस्थितिमे ओ बीड़ी पीब तियागबे करैए वा केकरो परिवारमे आपसी झगड़ा भेने केतौ-केतौ महिला आ केतौ-केतौ पुरुखो घर छोड़ि एक-दोसराक तियाग करिते छैथ। अदहे जीबे बजलौं- "की तियाग कहलिऐ काका?"

जहिना कोनो गाछ-बिरीछमे मौसमक प्रभावे एकाएक सौंसे गाछ फूलक कोढ़ी निकैल फूल-फड़ दिस अग्रसर होइए तहिना आकि की, जीवानन कक्काक मनमे पनपलैन से ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे जहिना धारक समूह[15]मे एककेँ टपला पछाइत एकक अन्त होइए तँ दोसरक शुरू होइए, तहिना भरिसक जीवानन काकाकेँ सेहो भेलैन अछि। धारक प्रवाह जकाँ बजला-

"बौआ कमल, हमरा तोरासँ किए कोनो द्वेषे वा विद्वेषे रहत जे तोरा ओहन बाटपर चढ़ा देबह जेकरा आगू कटारिये-कटारि रहल, माने जेकर कोनो निसचित भविष्ये ने रहत।"

जीवानन कक्काक विचार सुनि मन दहैल गेल। दहलाइत मने बजलौं- "काका, आब की करी?"

साधनासम्पन्न भक्त जकाँ सुनिते जीवानन काका, मुस्की दैत बाजए लगला- "बौआ कमल! अखन तँ अपना सभ मात्र बैगनक

---

[14] बारह बर्ख

[15] एकसँ अधिक धार

बनरपनपर विचार कऽ रहल छी, मुदा बनराएल एतबे नहि ने अछि। साग-पात, तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ फल-फलहरीक गाछक संग मालो-जाल आ मनुक्खो-बनमनुक्खमे सेहो होइते अछि।”

ओना, जीवानन कक्काक बात नीक-नहाँति नहि बुझलौं, मुदा उपकल मनक धुनिमे मुहसँ खसि पड़ल-

“से केना काका?”

अद्वैतवादी जकाँ जीवानन काका बजला-

“बौआ कमल, जिनगीमे तियागक असीम महत् अछि। तेकरासँ जाबे सीमाबद्ध होइत अपन जिनगीकेँ नइ बढ़ेबह तँ ओ जिनगी दुनियाँक चाक-चिक्यमे जिनगीक तेहेन प्रेमिका भऽ जेतह जे अपनो बाट अपनो नइ सुझतह।”

बजैक क्रममे जीवानन काका धुरझार बाजि रहल छला मुदा सिनेमाक पर्दापर जहिना अप्सराक नृत्यक पछाइत फिल्मकार जहिना कोनो जिनगीक सार तत्त्वक दृश्य देखबए लगै छैथ आ देखनिहारक नजैर पाछू-मुहेँक अप्सराक नाचपर नचैत रहैए तहिना भेल आकि की, से तँ बुझबे ने केलौं मुदा बजा गेल-

“काका, दुनियाँमे अहिना रंगो-रभस अछि आ रेलो-पेल तँ अछिए। प्रशान्तो महासागरसँ गहींर जे लोकसागर अछि वा मानसोमन तँ अछिए जे हमरा बुते सभटा थोड़े उपछल हएत। अपन जीवनसँ जुड़ल बैगनक खेती अछि, तइले...।”

ओना, जीवानन काका बुझि गेला जे कमल आब निर्णायक मोड़पर आबए चाहैए, मुदा बीचमे जे एकटा आरो झुटकियाह विचार अछि से बिना कहने निर्णायक विचार राखब अगुताएल जकाँ हएत। तँए किए ने पहिने वएह बाजि ली। जीवानन काका बजला-

“बौआ कमल, जीवनक कोनो काज जे अनवरत चलैबला

अछि ओ एके दाबिये थोड़े सिझैए, बेर-बेर ओइमे दाबि तँ चलबै पड़ैए किने।”

अपना मने जीवाननो काका बाजि रहल छला आ अपना मने हमहूँ सुनै छेलौं, मुदा मनक दूरी कोनो बातकेँ एकमनिया बुझैये ने दिअ चाहै छल। दू मनिया केना एकमनिया हएत से तँ बीचमे छेलैहे। जइसँ मनक ओझरी तेना आरो ओझरा गेल जे मने अकैछ गेल। बजलौं-

“काका आब अपन भाभट समटू। हमरा की करैक अछि से कहू।”

हमरा ऊपर चौबगली नजैर खिरा, मने-मन जीवानन काका की सोचलैन से ओ जानैथ मुदा जेना हमर टीक पकैड़ टिक-टिक करैत टिकियाबए चाहलैन तहिना बजला-

“बौआ, हमरा बुझने नीक हेतह जे बारहअनासँ बेसी चास बिगैड़ गेलह तँए चारिअनाक आशा छोड़ि उपटा दहक। मौसमो बदैल रहल अछि शीत बसन्तक बाट पकैड़ नेने अछि, तँए नव चास लगा वसन्ती खेती करह।”

ओना, मरैकाल जहिना लोककेँ माया घटए लगैए जइसँ मुँहमे पटपटी आबि जाइ छै, तहिना अपनो माया छुटिये रहल छल, मुदा तैयो अपन आगूक जिनगी देखि बजलौं-

“बड़ बेस काका।”

❑ शब्द संख्या : 2590, तिथि : 22 जनवरी 2019

मटरक अजोह दाना

ओछाइनपर नीन टुटिते बिहारी बाबाक मनमे एलैन- “ऐबेरक समयकेँ केहेन समय कहब?”

अन्तिम माघक समय, दोसर मकरक मेला बीत चुकल छल, तेसर काल्हि हएत। आन साल चारिटा मकरक मेला हरड़ी, बिदेश्वर, कुसेश्वर इत्यादि स्थानमे होइ छल, ऐबेर तीनियेँटा हएत। पहिल मक्कर फोंक गेल तँए माघ मासक चारि मकरक जगह तीनियेँ हएत। जे काल्हि छी। ओना, सिंहेश्वर स्थानमे मास दिनक मेला होइए, तँए ओइठाम मक्करो आ बिनुमक्करोक मेला रहिते अछि।

ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल बिहारी बाबाक मन समैयक सघन बोनमे ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे समयानुसारे समैयक जे गति अछि, तइ हिसाबे अखन घोर-घोर भेल शीतलहरी रहैत, पानिक जट्ठरपनमे बिसबिसी रहैत मुदा से नहि भऽ, वसन्त-बहार जकाँ खुशनुमा समय अछि। माने ई जे माघ रहितो भिनसरसँ साँझधरि (सूर्योदयसँ सूर्यास्त धरि) रौदक जे प्रखरता रहैत अछि तइसँ दिनक कोन बात जे रातियोमे एक्के चद्दैरक ठण्ढ पड़ैए। से कोनो अखने अछि से बात नहि। ऐबेर अगहन-पूसमे सेहो आन साल जकाँ ठण्ढ नइ पड़ल। ने शीतेक प्रकोप बेसी भेल जइसँ पाला बनि पलाइत, आ ने कहियो मेघौने लगल जे सुरुजक रौदमे कमी होएत...। बिहारी बाबाक मन ठमैक गेलैन।

ठमकला पछाइत लगले बिहारी बाबाक मनमे उठलैन जे

जखन आन सालक हिसाबे समय दोसर रंग अछि तखन एहेन समयकेँ केहेन समय कहब? की विपरीत समय कहब आकि बदलल समय कहब? ओना, बदलबोक दू रूप अछि, पहिल- आगू मुहेँ सुधैर-बढ़ैत बदलब आ पाछू मुहेँ बिगड़ैत घटैत बदलब। तहिना विपरीत समैयक रूप सेहो तँ दू-मुहेँ अछि। पहिल- नीकक विपरीत आ दोसर अधलाक विपरीत। खाएर जे अछि बिहारी बाबाक अपन पारिवारिक जिनगी छैन, अपन विचार छैन आ अपना बाटो-घाट तँ छैन्हे, जेकरा पकैड़ चलि रहला अछि। किए मनमे कनियोँ उठतैन जे दुनियाँमे तेते ने छक्का-पंजा बढ़ि गेल अछि जे ठाढ़ो रहब कठिन भइये गेल अछि, मुदा हवा-जहाजक एक्सिडेन्टमे घरमे बैसलाहा मनुक्ख थोड़े मरत। ओ तँ मरत जे जहाजसँ शैर-सफर करैबला अछि, से।

बिना कोनो निसचित निर्णयपर पहुँचने बिहारी बाबा अपन दुनियाँक जीवनमे पुन: लौट अपन आजुक क्रियापर नजैर देलैन। नजैर दइते मनमे खुशीक संचार भेलैन। संचार होइते जगलैन जे दुनियाँमे केतौ किछु हुअ आकि समैयेमे किछु हौ, मुदा अपन जिनगीक प्रवाह तँ सुदृढ़ होइत प्रवाहित भइये रहल अछि। अपन जिनगीक प्रवाह देखि शुभ-लक्षणक भान भेलैन, जइसँ शुभ-दिनक आभास सेहो भेबे केलैन।

बिहारी बाबा एकटा साधारण किसान। साधारण किसानक माने ई नहि जे आन-आन किसानसँ दबल पारिवारिक स्थिति छैन। साधारण किसानक माने ई जे खेत-पथारक रकबा कम छैन। माने बिहारी बाबाकेँ तीन बीघा पाँच कट्ठा मात्र भू-सम्पैत छैन। ओना, बीघा-कट्ठा तँ जमीनक नाप-जोख भेल मुदा जमीनक बीच जमीनक महत् सेहो कम-बेसी होइते अछि। कोनो जमीनमे नीको आ बेसियो (बेसी माने सालक फसलक हिसाबे) उपज होइए आ कोनोमे कमो

तँ होइते अछि। जइसँ कम रकबा रहनौं बेसी उपज होइए आ बेसी रकबा (जमीन) रहितो कम उपज होइए। परिवारक निरभरता खेतपर नहि, खेतक उपजपर करैए। खरीद-बिक्रीक समय ओ निरभरता भलेँ खेतक रकबेपर किए ने करैत हुअए।

बिहारी बाबा कम आँट-पेटक किसान होइतो किसानी जिनगीकेँ पूर्णताक रूप बना अपनाकेँ पूर्ण किसान मानि जीब रहला अछि। किसानी जिनगीक पूर्णता भेल किसानी वस्तुक खगता जे परिवारमे होइए, ओकर पूर्ति करब। ओना, किसानियोँ जिनगी ओहन बटवृक्ष[16] जकाँ अछिए जेकरा धरतीसँ अकास धरि सिरो-बड़ू होइ छै आ सघन पातो तँ छइहे। किसानियोँ जीवन तँ ओहिना अछि जैबीच खेती-पथारी–माने अन्नक खेती–सँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, फल-फलहरी, दूध-दही-घीक संग माछ-मौसक अतिरिक्त दवाइ-दारू-मर-मसल्ला धरिक पैदावार अछिए। एतेक वृहत्त क्षेत्र रहने कियो अन्नक खेती, तँ कियो तीमन-तरकारीक खेती, तँ कियो गाए-महींसक पालन, तँ कियो माछक, तँ कियो भेड़-बकरी पोसि मौसक उत्पादन सेहो करिते छैथ। तेतबे किए, कलकारखाना-ले सेहो विभिन्न तरहक फसिलक सेहो खेती अछिए। जेना कुशियार उपजा किसान अपनो गुड़ बनबै छैथ आ चीनी मिलकेँ सेहो चीनी बनबै-ले देबे करै छैथ। तहिना पटुआक उपजसँ अपनो परिवारक जरना-जौरक[17] काज करै छैथ आ बोरा-कपड़ा बनबैले मिलोकेँ दइते छथिन। तहिना सेरसो-तोड़ीसँ अपन मसल्लाक संग खाइले कौल्हुमे तेलो पेड़ा लइ छैथ आ मिलोकेँ दइते छथिन। खाएर जे जेतए अछि से तेतए अछि, ऐसँ बिहारी बाबाकेँ कोन मतलब छैन जे दुनियाँ दिस

[16] बरक गाछ

[17] डोरीक

तकैत-तकैत अपने रस्ता भोथिया जाइन। तँए अपन जिनगीक पूर्ण अवस्थाक नक्शा[18] बना अपन जीवन व्यतीत कइये रहला अछि।

तीन बीघा पाँच कट्ठा जमीनमे पाँच कट्ठा बिहारी बाबाक घराड़ी छैन, जइमे चौबगली घरक आँगनक संग दुआर-दरबज्जा, मालक घरो[19] आ आगूमे थैरियो छैन, तैसंग घास-पात रखैक जगहक संग नारक टालो बनबैक जगह छैन्हे आ बीचमे पाइनिक लेल चापाकल सेहो छैन। मोटा-मोटी यएह बुझू जे पाँचो कट्ठा बासे भूमि भेलैन। ओना, चारपर[20] लत्ती-फत्ती पसारि तीमनो-तरकारीक उपज होइते छैन मुदा से धरतीसँ ऊपर रहैए।

माछो पोसैले आ पाइनिक आनो-आन काज करैले आठ कट्ठाक पोखैर सेहो छैन। जेकर चारू महारमे, घाटक जगह छोड़ि केराक खेती करै छैथ। पोखरिक आँट-पेट कम रहने माछो कम्मे पोसै छैथ, मुदा ओते कम्मो नहियेँ पोसै छैथ जे परिवारोक खर्च नहि पुरा सकैथ। परिवारक खर्चक अतिरिक्त दू-अढ़ाइ क्वीन्टल बेचबो करिते छैथ। एक बीघा ओहन चपगर जमीन छैन, माने चौरी, जेकर उपजाक कोनो गारंटी नहि छैन। जइ साल अधिक बरखा भेल वा बाढ़ि आएल, तइ साल दहा जाइ छैन आ जइ साल रौदी भेल तइ साल उपज हाथ लगै छैन। ओना, जोत-कोरक संग धानक रोप चाहे बाउगो सभ साल करिते छैथ, भलेँ मालगुजारियो[21] आकि अबादैक खरचो किए ने दहाइये जाइ छैन। एक बीघा तेरह कट्ठा छोड़ि बाँकी बत्तीस कट्ठामे बारह कट्ठामे कलम-बाग लगौने छैथ। ओना, जाधैर

[18] रूप-रेखा

[19] गाइक घर

[20] घरक चारपर

[21] जमीनक टैक्स

बागक उपजकक आधुनिक[22] ढंगक जानकारी नइ भेल छेलैन ताधैर कलमो-बागक बिसबासू पैदावार नहियेँ छेलैन। मुदा दस साल पूर्व जखन फलक उपजक नव ढंगक तकनीकक बोध भेलैन तखन पुरना गाछ-बिरीछकेँ उपटा नव-नव किस्मक गाछ लगौलैन, जइसँ सोलहन्नी बिसवासू तँ नहि, मुदा बारहअना[23] पैदावारक बिसवास भइये गेल छैन। भइये नहि गेल छैन, होइतो छैन।

एक बीघा जमीन बिहारी बाबाक ओहन छैन, जेकरा तीन-फसिला कहल जाइए। ओना, तीन-फसिला कोनो ओहन जमीनकेँ कहल जाइए जइमे मौसमक अनुकूलता रहने होइए। प्रतिकूलता रहने वएह जमीन एक-फसिलो, दू-फसिलो भइये जाइए। तीन-फसिलाक माने भेल जे सालमे तीन बेर खेतमे फसल उपजल। तइ हिसाबे किसान धान-गहुम आ खेरही वा तेबखाक[24] क्रम मिला चक्र बनबै छैथ। बरसातक समय धान भेल, जाड़क समय गहुम भेल आ जाड़ उतरैत-चढ़ैत गरमीक बीच जे मौसम बनैए तइमे दलिहन[25] होइए। फसलचक्र अनुकूल रहने भोजनक अनुकूलता आबिये जाइए। माने ई जे अखन जे किसानक भोजनक-प्रक्रिया बनि गेल अछि ओ मात्र अन्नाहार धरि अछि। फल-फूल वा दूध-दही भोजन-प्रक्रियामे नइ जुटल अछि। अपवाद सभठाम होइ छइ। ओना, सभ दिन जँ पौष्टिक तत्त्व मिश्रित भोजन–सन्तुलित भोजन– भेटै तँ ओ सभसँ नीक भेल। ओना, पाबैन-तिहार वा कोनो अवसरपर भेटिते अछि।

---

[22] वैज्ञानिक

[23] पचहत्तैर प्रतिशत

[24] उड़ीद

[25] खेहरी वा उड़ीद

फसल-चक्र सेहो प्रभावित होइए मौसमसँ। जइ साल अधिक बरखो भेल आ अधिक बाढ़ियो आएल तइ साल चक्रक चक्रपन अलग होइए। तहिना जइ साल मध्यम बरखो भेल आ बाढ़िक सेहो उपद्रव कम रहल तइ सालक चक्र दोसर कोटिक होइए। तहिना जइ साल बरखा-बाढ़ि बहुत कम भेल वा आएल तइ सालक चक्र तेसर रंग होइए। तहूसँ कम, जँ बरखा-बाढ़ि साफे नइ भेल माने सोलहन्नी नइ भेल वा आएल तइ सालक मौसमक अलगे रूप होइए। खाएर जे होइए आकि हएत, से दुनियाँ आ दुनियाँक लोक जानए, तइसँ बिहारी बाबाकेँ कोन मतलब छैन।

अपन जीवनचक्र आ अपन क्रिया चक्रकेँ बिहारी बाबा कृष्ण जकाँ अपना हाथे बनबैक लूरियो आ बुधियो तँ अपना अधीन रखनहि छैथ। भलेँ रावणकेँ सेहन्ता किए लगल रहि गेल हो जे किसानकेँ अपना अधीन पानि देबइ। मुदा आब तँ ओ ने देवी रहली आ ने ओ कराह तखन चलत केना। दुनियाँकेँ देवी नहि बुझि कियो मनक देवीकेँ पूजबे करता तँ पुजौथ, हुनकर अपन मनक मरजी छैन आ मनक संसार छैन। भलेँ ओ किए ने 'ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या'क अर्थ आँखिक सोझमे जे दुनियाँ अछि जइमे बास करै छी, तेकरा मिथ्या कहि, मिथ्येकेँ सत् मानि लैथ तँ मानि लौथ। 'जनिहेँ मियाँ धुनै बेरिया' से तँ धुनकी जखन हाथमे औतैन तखन धुनै बेर बुझि पड़तैन।

पचास बर्खक बिहारी बाबाक परिवार देखि टोल-पड़ोसक लोक जरबो करै छैन आ लड़बो तँ करिते छैन। जरैक कारण छैन जे आन-परिवार जकाँ बिहारी बाबाक परिवारमे बरो-बेमारी कम होइ छैन आ स्त्रीगणक बीच झगड़ो कम होइ छैन। जइसँ भैयारीमे कहियो रक्का-टोकी नहि होइ छैन। बुझले अछि जे जखने तीनटा स्त्रीगण एकठाम हेती कि थुकम-थुक्काक संग झोंटो-झोंटौबेल भइये

जाइए। जखने स्त्रीगण झगड़त तखने पुरुखक मुँह-पुरखी जगबे करत। एहेनठाम स्त्रीगणक उद्धारक बाट ताकैसँ पहिने ने बुझि लिअ पड़त जे स्त्रीगणक बीचक बकवास केना रूकत आ शान्त चित्तक आगमन केना हएत। जइसँ एक-दोसराक बीच प्रेमाश्रुक धार केना प्रवाहित हएत। ओना, मेला-ठेला हुअ आकि हाट-बजार, जखने सम्बन्धित[26] स्त्रीगण सोझ पड़तैन आकि गरदैन-मे-गरदैन जोड़ि नोरक धार बहेबे करै छैथ। की अंगरेजी शासन ऐठामक लोककेँ (मर्दकेँ) सिखौलैन जे 'फूट डालू मुँह पुरखी करू' आकि ऐठामक लोकक रक्तेमे एहेन रोग केंसर जकाँ घुलल-मिलल अछि।

आखिर एहेन सोभावक जन्म मनुक्खक बीच केना भेल? तइले एक दिस जहिना वेद, उपनिषद, वेदान्त, स्मृति, पुराणसँ पुस्तकालयक आलमारी भरल अछि तँ दोसर दिस रोमिला-थापर, रामशरण शर्मा आ राधाकृष्ण चौधरीक इतिहास भरल अछि। मुदा ओइ सभ पोथीक विचार केतए नुकाएल अछि से विचार तँ देखए पड़त। तहिना दोसर दिस, गाम-घरमे अखनो ओ दृश्य आँखिक सोझे अछि जे बाधक रखबारक[27] जिनगी एक दिस अछि तँ दोसर दिस महान-महान वैज्ञानिक, डॉक्टर, प्रोफेसर, वकील आ पण्डितक विचारसँ भरल समाज नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। शास्त्र-पुराणक बीच एहेन प्रश्न तँ अछिए जे ओ सभ संस्कृत भाषामे लिखल अछि जे सबहक अध्ययनसँ भाषाक चलैत विचार समाजसँ दूर बनल अछि। आइ ओ जँ जनभाषामे रहैत तँ बेसी-सँ-बेसी लाभ होइत। बेसी-सँ-बेसी लोकक बीच ओ रहस्यमय विचार बेवहारिक रूपमे रहैत। ऐठाम दूटा प्रश्न उठैए। पहिल जे जे रहस्यमय विचार

[26] परिवार-समाजसँ जुड़ल सम्बन्ध

[27] बाधमे फसिल ओगरनिहारक

शास्त्र-पुराणक जीवनसँ जुड़ल अछि ओ संस्कृत भाषामे अछि जइसँ पैघ बाघा बीचमे भाषा अछि। तैसंग ईहो तँ अछिए जे बीचक जे व्याख्याकार सभ छैथ ओ जरूर भावक संग छेर-छार केने छैथ, जइसँ विचारकेँ बेवहारिक रूप गढ़ैमे भारी मोइन फुटले अछि। तँए, डरे पड़ा जाएब सेहो तँ कायरते ने भेल। कायरक माने ई नइ बुझब जे ऊर्जाहीन भऽ गेल छी, कायरताक माने विचारकेँ सामाजिक ढंगसँ बुझैमे कमी...। ओना, हमरा सबहक बीच महान्-महान् पथ-प्रदर्शक भऽ चुकल छैथ जे संस्कृत शास्त्रक भावकेँ जनभाषामे समुचित व्याख्या केलैन अछि। जँ केतौ कम-बेसी नजैरपर अबैए तँ तइले अहूँ स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक छीहे किने, तँए स्वतंत्र ढंगसँ ओकर व्याख्या करैक अधिकार तँ अहूँकेँ अछिए। मुदा तइले तँ रामानुज, बुद्ध, महावीर जैन, कबीर ने बनए पड़त। नारीक कल्याणक विचारकेँ नारीक बीच ताधैर नहि मजगुती आबि सकैए जाधैर नारीक चेतनशक्ति ओहन चेतनशील नहि भऽ जाएत जे अपन नारी-समाजक मुक्तिक उद्धारक बाट जोहैक शक्ति पाबि लेती। ओना, प्रसादजी ‘कामायनी’मे कहने छैथ जे ‘सभ भेद-भाव भुल कर, मुदा...। खाएर जेतए जे अछि से तेतए रहह।

..बिहारी बाबाकेँ तइसँ कोन मतलब छैन। अपना आँखिक सोझ अपन परिवारजनकेँ समैयक संग आगू बढ़ैत देखिये रहला अछि, तँए मनमे चैन छैन्हे। अपनो विचार चाणक बाबाक विचारमे तेना सटि गेल छैन, जे कखनो बेलाइग ओइसँ होइते नइ छैथ। कहिया ने कहिया बिहारी बाबाकेँ चाणक बाबाक विचार- ‘पुत्र कुपुत्र तँ किए धन संचब, आ पुत्र सुपुत्र तँ किए धन संचब।’ मनमे तेना घोंसिया गेलैन जे अपन मन दोसरक विचारकेँ अबै नइ दइ छैन। अनका जकाँ ओहन मनमे अबिते ने छैन जे एकैसमा पीढ़ी तक-ले धन-सम्पैत ओरिया कऽ रखता। अपन दुनू प्राणीक–माने पति-

पत्नी–बीच अखन ओहन परिवार छैन, जे जुगक सोलहन्नी विपरीत नहि तँ आठअना विपरीत लोककेँ बुझिये पड़ै छैन। दस बर्ख पूर्व माता-पिताक जिनगी निमाहि दुनू परानी बिहारी बाबा मातृ-पितृ ऋृण चुका चुकल छैथ। अपने दुनू बेकती, भूत-भविसक बीच सीमापर बैस ऐगला-पैछला पीढ़ीक झूला लगा कृष्ण जकाँ कदमक गाछमे झुलि रहला अछि। बामा आस लगिते बिहारी बाबाक मन ऐगला पीढ़ीक चारू बेटा आ चारू बेटी–जेकर अपन जीवन धारणकर्ताक पूर्वक ऋृण छेलैन तहूक ऋृणसँ उत्ऋृण भइये गेल छैथ। जहिना चारू बेटा अपन-अपन जिनगी बना जीब रहल छैन तहिना चारू बेटियो अपन-अपन परिवार सम्हारि बच्चाक सेवा आ मृत्यु दरमे समाजक अपेक्षा कमी लइये अनने छैन। ओना, चारू बेटा अपन किसानीए परिवारक सीख-लीखक आधार रूपमे जुड़ल छैन, मुदा अपन मनुक्खपनक जे विरटपन पबैक दिशा अछि तइसँ अपनाकेँ बान्हि आगू मुहेँ ससरिये रहल छैन। ऐठाम एकटा प्रश्न उठैए जे आगू मुहेँ तेज गतिये बढ़ि रहल छैन आकि मन्द गतिये? तेज मन्द गति तँ जीवनधारमे ओइठाम अबैए जैठाम रस्तो बेठेकनाएल रहल आ राही सेहो बेठेकान रहल। मुदा जे कालक गतिक क्रममे चलैक बाट जोहि नेने छैथ वा जोहि-जोहि चलि रहल छैथ तैठाम तेज वा मन्द गति हेरा जाइए आ चलनिहार कामक संग राम-धाम पहुँचैक आशा मनमे रखनहि रहैए।

अपन निसचित समयपर बिहारी बाबा हाँसू-खुरपी नेने बाड़ी दिस विदा भेला। माघ मास, तँए छोट-छोट बच्चा, जेकरा माए ठण्ढसँ बँचबै दुआरे सुर्जक बाट तकैत रहैए जे जखन रौद प्रखर-सँ-तीखपन हुअ लगत तखन दूधमुहाँ बच्चा सभकेँ घरसँ निकलए देब। बैशाख-जेठ तँ छी नहि जे उघारो देहो भोरे घरसँ निकैल अपन जीबन-लीला शुरू कए सकैए। माघ मासक सात बजेक सुर्ज बाँससँ

ऊपर उठि चुकल छल। जेरगर परिवार तँए जेरगर धियो-पुतो तँ छैन्हे। कचबच-कचबच करैत कचबचिया जकाँ अँगनामे करए लगल। अँगने होइत बाड़ीक रस्ता बिहारी बाबाक सेहो छैन्हे। डेढ़ बर्खक एकटा पोती हँसुआ-खुरपी बाबाक हाथमे देखिते पाछू लगि गेलैन। दू लग्गा जखन बाड़ी दिस बढ़ला, जे बाड़ी आँगनसँ चारि-पाँच लग्गीपर छैन। बीचमे कोलखीनुमा चौमास अछि, पाछू उनैट कऽ नहि देख, ओना आँगनसँ निकलैये काल बिहारी बाबा देखि नेने छला जे बच्चा पछोर लगि रहल अछि। मुदा रस्तामे केतौ विघ्न-बाधा बच्चाक लेल नहि बुझि पड़लैन, तँए अपन बाड़ी दिस बढ़ैत रहला। बाड़ी पहुँचते नजैर पड़लैन मटरक कियारीपर। फूलसँ चक-चक करैत लत्ती, जइमे निच्चा दिससँ दू-तीन छीमी निकैल गेल छल, जेकरा हिया कऽ देखि बिहारी बाबाक मन थीर भऽ गेल छेलैन। मटरक कियारीपर सँ नजैर उठा पोतीपर देलैन। आधा रस्ता पोती टपि चुकल छेलैन। दुधमुहाँ बच्चा आ दुधिया छीमी देखि बाबाक मन मानि गेल छेलैन जे जहिना छोट-छोट चुनमुनिया[28] कनैल फूलक रस चुसि अपन दुधमुँहकेँ अमृत दूधपान करैए तहिना अजोह छीमी, जे पानिक बीच बनैत धरती वा गर्भ बीच अथिर जल थीर होइक प्रक्रियामे बच्चाक रहैए, तहिना बुझि पड़लैन। लत्तीक निचला छीमी, जे पहिल छीमी लत्तीक छल, तँए पुष्ट-पोरगर छेलैहे। तैबीच पोतियो खेतक आड़ि–माने चौमासक आड़ि–पर पहुँच गेल छेलैन। बिहारी बाबाक मन एक दिस प्रकृत्ति प्रदत्त मटरक चकचक करैत फूल-फड़पर छेलैन, तँ दोसर दिस मनुक्ख प्रदत्त पोतीपर नजैर छेलैन जे मनुक्ख वंशक ओहन फूल छी जे किछु भऽ...।

विस्मित होइत बिहारी बाबाक मुहसँ निकललैन- "हमरा केते

[28] छोट चिड़ै

फूल अछि!”

तैबीच पोतीक नजैर मटरक फड़पर तँ नहि मुदा चकचक करैत उज्जर-लाल फूलपर गेलइ। ऐठाम एकटा शंका अछि। शंका ई जे मटरक फूल उज्जर होइ छै, मुदा मटरेमे एकटा किस्म ‘स्वीट पी रेड’ एहनो तँ अछिए जे जेकर फूल तँ लाल होइए मुदा छीमीयो आ दानो उज्जरे मटरक सीख-लिखक होइए। बिहारी बाबाक मन जनकपुरक फुलवारीमे सीताकेँ देखि जहिना द्रष्टा सबहक मन बोहिया गेलैन तहिना बोहियाए लगलैन। मनमे सोल्होअना चैत-बैशाखक मधुमास मधु-फलक बीच नचैत मधुमाछीक गुन-गुनाइत स्वरपर जाइये रहल छेलैन। तैबीच पोती सेहो एकटा फूल हाथसँ पकड़लकैन।

अपन दुनू हाथसँ माने एक हाथसँ लत्तीक फूल आ दोसर हाथसँ मनुक्खक फूलकेँ पकड़ैत बिहारी बाबा बजला-

“हमरा मीठहा छीमी अछि!”

नव ध्वनिक आवाज सुनि आकि बच्चाक मनक मनुआँ जगल, से बिहारी बाबा नहि बुझि पेला। मुदा पुष्ट छीमी देखि बच्चाक आँखि सेहो उज्जर-लाल फूलपर सँ हरियर-हरियर फड़ देखए लगल। बच्चा बिसैर गेल मटरक उज्जर-लाल फूल। ओना, ऊपरमे जे फूल अपन जीवन त्यागि मरनासन अवस्थामे उदीयमान फड़क अपन रूप पकैड़ नेने छल, बच्चा नजैरक संग हाथो ओइठाम पहुँच पकैड़ नेने छल। एकक जान बँचबै दुआरे दोसरक हाथ पकैड़ अपन दुधियाएल फड़ दिस पहिने नजैर बिहारी बाबा अपना दिस खिंचलैन। जखने ओकर नजैर माने पोतीक नजैर पुष्ट छीमीपर पड़ल आकि नवकलित कली–ओना, कली फूलोक होइए, मुदा ऐठाम फड़क कलीसँ अछि–पर पड़िते आगू बढ़लैन। तैबीच बिहारी बाबा फड़क डन्टी तोड़ि नेने

छला। मटरक फड़ जोड़ा छेलए। जोड़ो भरि छीमी पोती हाथसँ झपैट आँगन दिस माए लग भागल। अपन जान हल्लुक होइत देखि बिहारी बाबाक नजैर अपन चारि कट्ठा चौमासमे औनाए लगलैन। औनाइत मन जखन बाढ़िक पानि जकाँ थीर भेलैन तखन चारू कट्ठा चौमासकेँ गुनगान करैत मुँह फुटि पड़लैन-

"हे भूमि! अहाँ हमर जीवनक संग ओहन संगी छी जे भरि दिन संगे रहबो करै छी आ जीवनो-यापन तँ करिते छी। तँए हृदयमे अहिना सटल दुनू संग मिलि चलैत रहू।"

बौका-बौकी भगवान जकाँ चौमास खेत सुनलकैन आकि नइ सुनलकैन से तँ चौमास जानए, आकि ओ खेत जानत मुदा बाजल किछु ने। बिहारी बाबाक मन बिहाड़िमे बिहड़ाइत चौमासक कोणपर पहुँच फुटलैन- "चारि कट्ठा चौमास[29] बारह मासक श्रमो लइए आ बारहो मासक फलो ओते दइए जे हँसैत जिनगी गुदस केलाक पछाइत किछु बँटबो-बिलहबो तँ करिते छी।"

जहिना जीवन तृप्त जीवनामृत छी तहिना स्वर्गक अमृतो तँ छीहे। यहए ने देव-दानवक बीचक संघर्ष-भूमि भेल जेकरा रणभूमि, युद्धभूमि वा समुद्र मथन जे कहिऐ मुदा ओहो तँ एहने ने होइए! रूपक गुण जे होइ मुदा रूपक रूपबनित तँ छीऐहे किने। मुदा जे जेतए दुनियाँमे अछि से तेतए रहह। तइसँ बिहारी बाबाकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एते तँ छैन्हे जे जँ चारू कट्ठा जीवित रहत तँ अपनो जरूर जीबैत रहब।

बिहारी बाबाक परिवारक जे ढँचगर बुनब छैन, तेकरा साँचपर बिहारी बाबाक अपने गढ़ि-गढ़ि बनौने छैथ, से गाम-समाजसँ किछु मिलितो छैन आ किछु नहियोँ मिलै छैन। ओना, कहब जे सोल्होअना

---

[29] खेत

नहियेँ मिलै छैन, सेहो बात नहियेँ अछि। भलेँ ओ फराक-फराक चरित्रसँ मिलैत हुअए। जहिना आन्हर हाथी देखि हाथीक अंग[30] तँ बुझलक जे नाँगैर जकाँ हाथी होइ छै, तँ सूप जकाँ होइ छै, केराक थम जकाँ होइ छै, तँ नाक सूढ़ जकाँ होइ छइ। मुदा ई बुझै काल आन्हरक आन्हरे रहि गेल जे सभ मिला देबै तँ एकटा हाथी बनि कऽ चलए लगतै।

गाम-समाजमे जहिना काजक ठेकान नहि अछि तहिना खाइ-पीबै-जीबैक ठेकान सेहो नहियेँ जकाँ अछि। जइसँ कियो हाइ ब्लड प्रेशरक शिकार तँ कियो लो ब्लड प्रेशरक शिकार छथिये। मुदा से नहि, बिहारी बाबा अपने सभ बापूत मिलि कऽ विचारि नेने छैथ जे गाममे देखिते छी- गामसँ काज[31] निपत्ता भेल जा रहल अछि, शरीर रोगक मुइलहा धार दिस बढ़ि रहल अछि। किछु दिन पूर्वसँ शरीरक योग शुरू भेल हेन, मुदा पतंजलि तँ आइयेक तँ नहि छीया। बीचक जे समय बीतल ओइमे ओकर माने योगक की मांग रहल। खाएर जे से.., बिहारी बाबा अपन पाँचो बापूत किसानी जिनगीक बीच अपनाकेँ स्थापित करैत अपन-अपन कारोबार करै छैथ जइमे निर्धारित समय माने छह घन्टा निसचित रूपसँ सभ कियो–मर्द-औरत–प्रतिदिन श्रमशील बनबे करै छैथ। जीवन पद्धतिकेँ सामाजिक रूपमे अँटाबेस करैत चलैत रहब, बेसी गरूगर नहियेँ अछि, तँए सभ समांगक चित्त शान्त बनले छैन।

चारि कट्ठा चौमासकेँ बिहारी बाबा, बारहो मास उपजशील बनौने रहिते छैथ। जहिना गाममे तरकारी खेती केनिहार किसान, पान उपजौनिहार किसान अपन बारहो मासक काजक सृजनकर्ता

---

[30] सिरखार

[31] जिनगीक काज

होइ छैथ तहिना श्रमण बनि भोक्ता सेहो होइते छैथ। तेहने परिवारक बीच बिहारी बाबाक परिवारक जे ढँचगर बुनब छैन, जइ साँचपर बिहारी बाबाक परिवार छैन।

जहिना नीक परिवारमे अभिभावकक ईहो दायित्व तँ अछिए जे अपन काजकेँ सम्हारैत आनो-आनो समांगक काजकेँ बीच-बीचमे देखबो तँ अछिए। कारण बौधिक स्तरपर काजक रूप बदलैक सम्भावना रहिते अछि। किए तँ कखनो मन बेसी खुशी रहल तँ काज धधा जाइए आ जँ मन बेसी पीड़ित रहल तँ काज पझा जाइए, तँए ओइमे जीवनामृत देब अभिभावकक दायित्व बनिते अछि। अही खियालसँ आकि बीचमे कोनो काज मोन पड़ि गेलैन तँए आकि की से तँ बिहारी बाबा जनता, मुदा बाड़ीसँ टहलैत-टहलैत अँगना एला कि देखलैन जे जइ पोतीकेँ छीमी देने छेलखिन ओ माए लग बैस अपन छीमीकेँ सोहा रहल अछि। ओना, एकटा छीमीकेँ अजोहक कारणे खोंइचा लगले दानाक मीठासक संग चीबा कऽ खाइत रहए कि माइयक नजैर पड़ने ओकरा सोहि कऽ दाना निकालि बच्चाकेँ देबाक विचार मनमे जगि चुकल छेलैन।

अजोह दुधिया दाना, छीमीक भीतर नअ दानामे पाँचटा सोहिते-सोहिते फुटि गेलैन, जइसँ दानाक पानिक संग रसो (मिठासो) हाथेमे लगल रहि गेलैन। अदहोसँ कम दाना–माने नअमे चारि दाना–बच्चाक हाथमे दइते रहथिन कि मनमे खीझ उठलैन। खीझक कारण ई नइ भेलैन जे अजोह छीमी केना सोहल जाए, तइले खीझ भेलैन जे बुड़हाकेँ[32] छीमी तोड़ैक लूरिये ने छैन! बच्चाकेँ सुनबैत माए बजली- "बुड़हाकेँ छीमियो तोड़ैक लूरि नइ छैन!"

तही बीच बिहारी बाबा आँगनक मुँहथैर लग पहुँच चुकल

---

[32] माने अभिभावक पिताकेँ

छला। तैबीच घरक आवाज–माने पुतोहुक आवाज–जे घरसँ निकैल मुँहथैर लग पहुँच चुकल छल। बिहारी बाबा अपना काने पुतोहुक बात, 'बुड़हाकेँ छीमी तोड़ैक लूरिये ने छैन' सुनलैन। मुदा तरसेला नहि जे तरसा जकाँ तरतरा गिरगिरैतैथ। मने-मन शब्दवाणकेँ परबा-पौरकी जकाँ घुट-घुट घोंटए लगला। जइसँ मनमे वस्तु स्थितिक बोध होइते एलैन जे, जे मटरक गाछ अखन फुलक अवस्थामे फल सिरैज रहल अछि ओ तँ दुधिया हेबे करत। अपन मन विचारसँ तृप्त बिहारी बाबाक भऽ गेलैन। मुदा जहिना चुट्टी आ बिसपीपरी काटि कऽ चलि जाइए मुदा बिसबिसी देने जाइए, तहिना बिहारी बाबाक मनो आ विचारोमे आबिये गेल रहैन। जँ आगियो आ खढ़ो गरमी मासमे एकठाम रहत आ कनियोँ हवा-बिहाड़िक सिहकी पौत तँ लहरबे करत। मनक भीतरे-भीतर बिहारी बाबाकेँ तहिना भेलैन। मुँह तँ नहि खोललैन मुदा मनक ढोल बजबजेबे केलैन-

"जा रे अलपुरिया ढोल! खेसारी छीमी सोहनिहारि मटरक दुधिया छीमी सोहि लेत!!"

बिहारी बाबाक परिवारमे रंग-रंगक पुतोहु सभ छैन्हे। किएक तँ उत्तरमे लहान, दच्छिनमे मध्य समस्तीपुर आ पूबमे सिंहेश्वर सुखासन (मधेपुरा) तकक छैन्हे। जइसँ लूरियो-बुधि आ बोलो-चालिमे दूरी छैन्हे। मुदा तेकरा बिहारी बाबा समेट नेने छैथ।

पुन: बिहारी बाबा घुमि कऽ अपन चौमास पहुँचला। चौमासमे पहुँचते समस्तीपुर वाली पहुतोहुक विचार मनमे नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे एक दिन खाइते काल बिहारी बाबाकेँ अपन लूरि प्रदर्शित करैत, चाउरक खुद्दीक हलुओ खुऔलकैन आ कहबो केलकैन जे हमर बाबू–माने जन्मदाता पिता–सघन खेती करै छैथ। माने तीन-चारि-पाँच फसल एक संग करब।

ओना, बहारी बाबाक मनमे देखल विचार छेलैन जे जइ औरतकेँ एक सन्तान होइए आ एक संग दू-तीन-चारि सन्तान होइए, दुनूमे बढ़-बाड़िक अन्तर होइते अछि। तँए, मनमे दृढ़ता छैन जे, जे फसल लगौने छी ओइमे जँ दोसर नीको चीजक गाछ जँ जनैम गेल अछि तँ ओ ओइ फसलक लेल रोग भेल, तँए ओकरा घास बुझि कमा देबाक चाही।

अजोह दाना देखि-देखि मन तरसए लगलैन। तरसाक ताल जकाँ मनमे उठलैन जे जहिना अखन मटरक अजोह दाना दुधिया अछि, तहिना ने समाजो आ समाजक रस्तो-बाट अही अजोह दाना जकाँ अजोहे अछि।

❑ शब्द संख्या : 3473, तिथि : 03 फरवरी 2019

फुइसिक रग्गड़

परसू गिरिधारी भायसँ भेँट करबाक मन भेल। ओना, कहब जे बिनु काजे भेँटे करब केहेन हएत। मुदा से नहि, अपन बैसारी भऽ गेल तँए गप-सप्प करैक खियालसँ विचार भेल। अहाँ पुछि सकै छी जे अपन बैसारी रहत आ जिनकासँ गप-सप्प करए जाएब ओ जँ काजमे लागल होथि, तखन हुनका काजकेँ क्षति करब हएत की नहि? हँ हएत। मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, एक पालतू कुत्ता ओहन होइए जे बिनु छान-पगहाक सिरमे लग बैसल रहैए आ एक पालतू ओहनो तँ अछिए जेकरा पिजरामे बन्न करि कऽ राखए पड़ैए। मुदा से सभ किछु ने, असल बात ई अछि जे गिरिधारी भाय अपन नियमित जीवनानुसार चारि बजे बेरूपहरसँ सबजाना लोकक रूपमे चलैत आबि रहल छैथ। कहब जे तखन बिनु काजो जखन एकठाम बैस जीवनामृत पीब सकै छी तखन सभ दिन किए ने जाइ छी? भाय हम की अहाँ सभसँ हटल छी, अहीं सभ जकाँ जँ माघ मासक चारि बजे भोरमे झोरा-झपटा टाँगि, मोटर साइकिल पकैड़ देश-दुनियाँमे वौआइले नइ जाएब, जेठ मासमे जीन्स शर्ट-पेन्ट नइ पहिरब, पसेना पचबैले देहमे मशीन नइ लगाएब, तखन अहीं कहू जे हम एकैसमी सदीक लोक भेलौं? खाएर.., सभ लोकमे हमहूँ एकटा लोक भेलौं तँए अपन पनचैती अपने कऽ लेब। एहने धुमसाहीक जिनगी अछि जे पत्नी अरिआति कऽ डेराक गेट टपा कहि दइ छैथ जे आगू अपने जानब। अही घोड़-दौड़क दुआरे ने परिवारमे केकरोसँ भरि मुँह, भरि

पोख बाजि पबै छी आ ने अपन बाले-बच्चाकेँ ओ बोध दऽ पबै छिऐ जे 'बौआ हमरो ऐगला जिनगी तोंही छिअ, तँए केना मन रहबह से तँ तोहीं ने जनबह!'

पलखैतिक अभावमे गिरिधारी भायसँ भेँट नहि भऽ पबैए। ऐमे अपने दोख कहक चाही, ओ तँ भागवत पुराण जकाँ सभ दिन किछु-ने-किछु लोककेँ नव विचारो आ नव जानकारियो दइते छैथ, तइमे अपने हूसै छी ते अनकर कोन दोख।

ओना, अपनो बुझल अछि जे जखने गिरिधारी भाय ऐठाम जाएब कि चाहक भाँड़ी भेटबे करत। अखनो ओ अपना ऐठाम बंगाली परिवार जकाँ चाहक भाँड़िये चलबै छैथ। मुदा तैयो मनमे भेल जे बिनु-बुझल समय अछि आ हमरा जाइसँ पहिनहि जँ दुनू परानी केतौ निकैल गेल होथि, तखन तँ ओहिना ने बानर जकाँ हएत जे फल पबै दुआरे डारिपर कुदलौं आ खसि पड़लौं निच्चाँमे! से नहि तँ अपना ऐठाम जे चाह पीब नेने रहब तखन जँ ओ भेँट नहियोँ हेता, चाह नहियोँ पीब तैयो ओत्ते हूबा मनमे रहबे करत किने जे डारिक चुकल बानर जकाँ मरब नहि...।

चाह पीब गिरिधारी भायसँ भेँट करए विदा भेलौं।

दरबज्जेपर गिरिधारी भाय एक गोरेसँ गप-सप्प करैत रहैथ। ओ एकटा जनाना छल। आन बात तँ नइ सुनि पेलौं मुदा गिरिधारी भाय फुसफुसा कऽ बजला-

"एहेन छुद्दर जे घरबला भेल आ अहाँ घरवाली भऽ कऽ मुँह तकैत रहलौं से अहाँ सन भेल?"

तैबीच दुनू गोरे चुप-चुपी लगा लेलैन। आन परिवारक नीक-बेजाए बात बिनु घरवारीकेँ कहने अनेरो बाजब नीक नहियेँ हएत। हमहूँ अनसुनू जकाँ भऽ गेलौं जे किछु सुनबे ने केलौं। ओना, मुँहक

चुहचुहीसँ गिरिधारी भाय मधुआएल जकाँ बुझि पड़ै छला, मुदा ई नहि बुझि रहल छेलौं जे गाछक मधुमाछीक छत्ताक मधुक चुहचुही छिऐन कि मधुआक मीठसँ जरल आमक मजरक टुकला छिऐन आकि जुआनीक मधु-मुस्कान...। खाएर जे छेलैन ओ गिरिधारी भाय जनता। सोझहे नामेटा अपन गिरिधारी रखने छैथ आकि कृष्ण जकाँ गोबरक ढेरीकेँ माथपर उठौनिहारो छैथ ओ तँ अपने ने जनता। ओना, दरबज्जापर पहुँचते आने दरबज्जादार जकाँ गिरिधारी भाय आगूए-सँ बजला-

"आबह! आबह बौआ!!"

तैबीच ओ जनाना उठिकऽ विदा भऽ चुकल छेली। गिरिधारी भाइक मुँहक 'आबह-आबह' सुनि किछु बजलौं नहि। नइ बजैक पाछू मनमे अपन लोभ छल। लोभ छल ई जे जँ मुहसँ किछु निकलत आ कहीं ओही बातक नाँगैर आकि मुहेँ पकैड़ जँ आगू मुहेँ बाजब शुरू करता तखन तँ पैछला बात तर पड़ि जाएत! तँए किछु ने बजलौं जइसँ गिरिधारी भाय ओही बातकेँ चीनीक बोरमे सुखाएल-टटाएल जिलेबीक रसभर बना आगू किछु बजता।

ओना, अपने मुहसँ ते किछु ने बजलौं मुदा डेगे-डेग ससैर कऽ गिरिधारी भाइक लगमे जा बैसलौं।

बैसलाक पछातियो गिरिधारी भाइक मुहेँ दिस तकैत रही जे हो-न-हो फेर ओही जनानाक बातकेँ पुनरावृत्ति करैथ, मुदा से भेल नहि।

गिरिधारी भाय ओहन जड़ियाएल विचारक लोक छैथ जे वृन्दावनक सोलह हजारसँ ऊपरेक राधिका सभकेँ तहिया-तहिया वेद-मंत्र जकाँ एक-एक कोठरीमे पुस्तकालयक ओहन आलमारीमे रखने छैथ जइमे एक्के पतियानीमे कोरानो आ गीतो सेरियाएल छैन,

जेकरा तकैकाल गिरिधारी भाइक हाथ ओहीपर पड़ै छैन जेकर खगता रहल।

गिरिधारियो भाय जेना ओइ जनानीक गप-सप्पकेँ मनमे पटाक्षेप कऽ लेलैन। बैसबे कएल रही कि दोहरा कऽ धाँइ-दे गिरिधारी भाय पुछलैन- “की हाल-चाल गाम-घरक अछि, सुधीर?”

अपन मन कनी-कनी बेपीड़ित तँ रहबे करए, बेपीड़ित ऐ दुआरे छल जे सोझा-सोझी सुनल बातकेँ धोइ-पोछिकऽ गिरिधारी भाय खा रहला अछि आ हमरा गरमो-मसालाक गन्ध नहि लागए दिअ चाहै छैथ! तँए, बिनु रूकाबटेक मुहसँ निकैल गेल-

“की हाल-चाल गाम-घरक रहत भाय साहैब, अपनो हाल-चाल बुझैक पलखैत नइ बँचैए..!”

जेना बिनु धीपल लोहाक चुट्टासँ गरम लोहाकेँ सुकमालतीसँ पकैड़, हथौरीसँ मुँह-कानकेँ थुरि-थुरि सोझ करैत कमार औजार बनबैए तहिना गिरिधारी भाय बजला-

“सभ मनुक्ख जहिना कोनो-ने-कोनो गुनगर काजक जुआकेँ कन्हेठ अपन-अपन भविस दिस तकैए तहिना ओही मनुक्खमे ने तोहू-हमहूँ छी।”

अपना जनैत गिरिधारी भाय की बजला से बुझलौं तँ नहि, मुदा कानसँ सुनलौं तँ जरूर। जइसँ कानक स्वरलहर जे मनकेँ पकैड़ लेलक ओ एकाएक बजा देलक-

“से तँ छीहे।”

हमर सहमत पेब गिरिधारी भाय बुझलैन आकि की, से तँ गिरिधारी भाय जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे अपनत्व जकाँ किछु बाजए चाहै छैथ। से ओहन बाल-बोध बच्चा जहाँति, जे सोझहे मुहेँ गुरुजीकेँ वा अपन अभिभावककेँ कहैए- ‘हमरा अ आ

छोड़ि दोसर खाँत नइ बुझल अछि।' ओना, एहेन विचारसँ एते तँ भइये जाइए किने ने जे नाह जकाँ जिनगीक ऐगला मांग ओकर किमहर अछि।

गिरिधारी भाय बजला- "ऐ बीचक अखबारो सभसँ भेँट भेलह हेन की नहि?"

गिरिधारी भाइक विचार कनी कठाइन लागल। कहू जे आजुक जुगमे अखबारो तँ एकटा आमदनीए भऽ गेल अछि। तीन रुपैआक छतीस पेजक अखबार छअ रुपैआमे रद्दी कहि बिकाइए, तैठाम जँ एकटा अपने कीन लेब आ जँ घरोवाली एकटा कीनलैन तँ अपना सिरसँ चाहक खर्च आ घरवालीक सिरे सिनुर-टिकुलीक भार तँ उतरिये गेल किने। मुदा बात तेतबे नइ छल, एकैसमी सदीमे हम सभ छी जे सुतलो-सुतल पढ़ि लइ छी आ जगलो-जागल नहि पढ़ि ओंघा जाइ छी। तैठाम अपनाकेँ अखबारोसँ कात राखब बुड़िपने ने हएत।

उत्साहित होइत कहलयैन-

"भाय, ऐबेर तँ अपन देश अजीब शिकार पकड़लक..!"

'अजीब शिकार' सुनि उत्सुक होइत गिरिधारी भाय मुँह बाबि पुछलैन- "से की सुधीर?"

हमहूँ अपन गोटी ओहिना लाल होइत देखलौं जहिना कोनो परीक्षार्थीकेँ अनेको प्रश्नमे पाँचक उत्तर देबाक रहल जे शुरूहेक पाँचो प्रश्नक उत्तर अपनामे पेब मन तिरपीत हुअ लगै छै जे एतबेसँ काज चलि जाएत। तहिना तुष्ट होइत बजलौं-

"भाय साहैब, अपन देश तँ न्यूजीलेंडकेँ छक्का छोड़ा देलक! खेलक शुरूहेक तीनू मैच जीत अपन जीत हाँसिल केलक, पछाइत आठ बिकेटसँ हारि सभ खेलबाड़ी एकजने सिरहाना पकैड़ लेलक।"

हमर विचार-प्रवाहकेँ गिरिधारी भाय रोकलैन तँ नहि, मुदा

मोड़ैक परियास करैत बजला- “हँ, से तँ भेल। मुदा...।”

‘मुदा’ कहि गिरिधारी भायकेँ ठमकैत देखि अपने उमकैत बजलौं- “भाय साहैब, समाचार-पत्रक की चर्च केने छेलिऐ?”

हमर बात सुनिते गिरिधरी भायकेँ गामक आजुक दशा देखि मनमे समोह लागए लगलैन। रेडियो-अखबार गामक कोन रूप देखि रहल अछि, ओकर वास्तविक रूपमे बिगड़ाउ आबि रहल अछि आकि सुधराउ, वएह ने ऐठामक लोककेँ नजैरपर चढ़ि रहल अछि। अखनो दिन-राति मिथिलाक धरतीपर जनकजी आ जगत जननी सीताक सम्बन्ध एकसुरे कानमे लॉडस्पीकरसँ तेना आबि रहल अछि जे काने झड़झड़ाउ भऽ रहल अछि, मुदा तैबीच देवाल बनि दिवालियापन केतए बीचमे अछि, ओइ तानक तानीकेँ केना तनिऔल जाएत से भक्कपर आबिये ने रहल अछि। जाबे ओकरा जीवनक तानी-भरनीसँ नहि तनिऔल जाएत, ताबे कन्हेठनहि की हएत।

आइक पीढ़ी नोकरी-चाकरी छोड़ि समाचार-पत्रमे किछु पढ़ए नहि चाहि रहल अछि, तैठाम गामक सम्पदाक सम्पादन केना हएत। भोजनक अन्नक[33] मामलामे आत्म-निर्भर भऽ गेलौं अछि, मुदा सन्तुलित भोजन भेटैमे बीचक की दूरी अछि, ओइ खगताकेँ पूर्ति करैमे खेत[34] सँ की सम्बन्ध छै, एकरा जानै-बुझैक खगता तँ अछिए किने। खाएर जे अछि तइसँ अपने आकि गिरिधारीए भायकेँ कोन बतलब छैन।

गिरिधारी भाय बजला- “सुधीर, ऐठामक किसानकेँ दू-गुणा जीवन-स्तर बनत, से समाचार अखबारमे पढ़लह अछि की नहि?”

---

[33] चाउर-गहुम

[34] भूमि-माटि

गिरिधारी भाइक प्रश्नक संग मोन पड़ि गेल महाभारतक एक नम्बर हीरोमे बर्बरी सेहो छल। नजैर ओकरे दिस चलि गेल, तँए महाभारतक रणभूमिक बर्बरीक स्वर कोणे-कोण मन तक पहुँचए लगल। बजलौं- "भाय साहैब, अहाँ ते ऐठामक एकटा समाचार-पत्र पढ़ै छी तइमे अदहासँ बेसी बनियाँ सबहक कारेबारक समाचार रहैए, मुदा हम तँ रंग-रंगक समाचार-पत्र नइ डेली तँ कहियो-काल देखिते छिऐ। आब साठि बर्खसँ ऊपरक किसान परिवारक दुनू परानीकेँ तीन-तीन हजार पेंशन माहवारी सेहो भेटतै।"

गिरिधारी भाय बजला- "वाह, वाह..!"

गिरिधारी भाइक 'वाह-वाही'केँ अपना सिरे बुझलौं जे गिरिधारी भाय सोल्होअना भक्त बनल आबि रहला अछि। ओही तानक तानीकेँ तानि बजलौं-

"भाय साहैब, किसान सभकेँ खेती करैले सेहो प्रति-एकड़ छह हजार देत। तँए आब किसानक बीच कोनो बाधा नहि रहत।"

हमर बात सुनि जेना गिरिधारी भाइक मन अकछाए लगलैन तहिना बुझि पड़ल। अपनो मन मानि रहल छल जे अकछाएल मनमे नीको-अन्न-तीमन अकछाएले सन बुझि पड़ै छइ। तँए चुपे रहब नीक। पुछलयैन-

"भाय साहैब, अपना दिसक की हाल-चाल अछि?"

गिरिधारी भाय बजला-

"गाम-गाम तँ एहेन चर्चा अछिए जे गामो आब बजारक बाट पकड़लक हेन।"

बजारक की बाट पकड़लक अछि तइ दिस नजैरिये ने गेल आ नजैर चलि गेल ओइठाम जेतए धरतीक पानिसँ अखनधरि गामक नीक परवरीस होइत रहल अछि, जे असान ढंगसँ उपलब्धो अछिए,

मुदा तैठाम लोक पानियोँ कीनियेँ कऽ पीबए आ आन-आन जरूरतक काज परिवारमे बाधित भऽ जाए..! बजलौं-

“से की भाय?”

गिरिधारी भाय बजला- “फागुन-चैतक बीच जहिना चारू दिसक बहवारि हवा बहने अन्हर-तूफानक सम्भावना सेहो भइये जाइए, तहिना ने हुअए।”

बजलौं-

“से की भाय साहैब?”

हमर जिगेसपन देखि गिरिधारी भाइक मनक उत्साह जेना जगलैन। अपने फुरने बजला-

“सुधीर, परसू अनुमण्डलक किसान भवनमे सरकारी स्तरपर सरकार आ जनगणक बीच किसानक दशापर विचार-विमर्श हएत...।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“ऐगला-पैछला किसानक केहेन स्थिति रहल आ आगू केहेन हएत तइ सम्बन्धमे?”

गिरिधारी भाय बजला- “हँ! मुदा...।”

‘मुदा’ कहि गिरिधारी भाय फेर चुप भऽ गेला। जहिना गजेरी गाजाक चीलममे सोंट[35] मारि मुँह बन्न कऽ घोंटए लगैए, तहिना मने-मन विचारकेँ घोंटलौं। घोंटला पछाइत मनमे उठल। सभठाम अपने बात-विचारकेँ अगुआएब नीक नहि, से नइ ते गिरिधारीए भाइक मुहेँ किए ने सुनब। पुछलयैन- “की कहए लगलिऐ आ बिच्चेमे ‘मुदा’ कहि मुँह बन्न कऽ लेलौं!”

---

[35] दम

हमर बात सुनिते-देरी जहिना बखारीक मुँह खुजिते तीसी छलछला-छलछला निकलए लगैए, तहिना गिरिधारी भाइक मुँह खुजिते निकललैन-

"कार्यक्रमक विषय तँ नीक अछि, मुदा ओ केते धरि क्रियाशील रूप पकड़त, मूल प्रश्न तँ ऐठाम ने अछि। मुदा कार्यक्रमोक आ किसानोक जे पैछला इतिहास रहल ओकरो तँ नजैरमे राखए पड़त किने।"

जहिना मन मसोसि कऽ संसद भवनमे 'ह्वीप' जारी भेला पछाइत सदस्य बन्हा जाइए, तहिना गिरिधारी भाइक विचारमे बन्हा गेलौं। किए तँ अनकर नोकरीमे जीवन बितौने अपन कुल-खुटक इतिहास बिसराइये गेल अछि। तैठाम जँ अपन प्रश्न उठत तखन तँ अपन विचारो ने राखए पड़त। माने, अपनो दिशा-दशा तँ बजै पड़त! बजलौं-

"भाय साहैब, गामक कहबियो छै जे 'जे पूत हरवाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल!' हम तँ सएह छी, मुदा अहाँ तँ से नहि छी। तुलसी बाबाक पकिया विचारक छी जे करसँ कर्म करू विधि नाना, मुदा सुरैत राखू जैठाम कृपा निधान बैसल-बैसल देखि रहला अछि।"

हमर बात नीक लगलैन आकि अधला से ओ जानैथ, मुदा जहिना साँप कटिते उनैट जाइए तहिना गिरिधारी भाय उनटैत बजला-

"परसूका बैसारमे हमहूँ आमंत्रित छी मुदा मनमे होइए जे अनेरे फुइसिक रग्गड़मे पड़ब नीक नहि, तँए नहियेँ जाएब नीक।"

अपना जनैत गिरिधारी भाय जइ रूपेँ बाजल होथि मुदा सुनैमे हमरा एक्कोरत्ती नीक नहि लगल। कहलयैन-

“भाय साहैब! सोहनगर अवसर अछि। कमसँ कम अपन विचारो तँ सार्वजनिक रूपेँ ऐबे करत किने।”

गिरिधारी भाय बजला-

“सुधीर, लोकक छल-छप्पन नइ बुझै छहक तँए सोझमतिया लोकक विचार जकाँ बजलह अछि, मुदा अपना सबहक जमीनी सच्चाइ जे रहल अछि तैठाम विचारकेँ जाइये नहि देमए जा रहल अछि। तैठाम तोहीं कहह जे..?”

गिरिधारी भाइक विचार नीक बुझि पड़ल, तँए पुछलयैन-

“से की भाय साहैब, जेते समस्या अछि तइसँ बेसी विचारो आ समाधानो तँ अछिए। मुदा दुनूक बीचमे भारी खाधि बनि गेल अछि, जेकरा लोक चाहैए जे हनुमानजी जकाँ एक्के डेगमे समुद्र जकाँ कुदिये कऽ टपि जाएब..!”

गिरिधारी भाइक विचार सुनिते मन रामायण दिस पड़ाएल, मुदा अपन रामायण वा समाजक रामायण आकि त्रेता जुगक वृतान्त लिखल तुलसी बाबाक रामायणिक बीच पहुँचते मनमे ओझरी लागए लगल। तँए रामायण दिससँ मन बहटारि कऽ अपन भाभटकेँ समटैत बजलौं-

“एहनो कहीं भेलैए भाय साहैब! जएह हनुमान एक्के डेगमे कुदि (समुद्र) गेला, सहए हनुमान ने अर्जुनक एहने प्रश्नक उत्तर देने रहथिन।”

मुदा तरे-तर मन औनाए लगल जे गिरिधारी भाय बुझि गेला जे सुधीर सन लोकक मुहेँ जे शब्द निकलल ओ सुधीरक डण्डी-तराजूक निकलल तँए अनेरे काट-मार करब नीक नहि। गिरिधारी भाय बजला-

“सुधीर, अपना सभ कोन जुगमे जीबै छिऐ से बुझल छह

किने?"

बुझल बातकेँ केना सोझहामे झूठ बजितौं। कहलयैन-

"कोनो कि अहाँ चोराएल जुगक गप बजलौं जे नइ बुझल रहत।"

"एकरा कोन जुग कहै छइ?"

अखन तक तँ कलजुगे बुझै छेलौं मुदा त्रेता जुगमे जे जनकजी अढ़ाइ बीतक लकड़ीक हर जोतलैन, जइ साल बड़का बरहबर्खा अकाल पड़ल रहै तेही बर्खक ने गप छी, सएह 'हरो' आ 'कलजुगो' बुझै छेलौं, तँए बजलौं-

"भाय, कलजुगे ने छी।"

गिरिधारी भाय बजला-

"यएह छी रग्गड़क जड़ि। मुदा रग्गड़क जड़िये छोड़ि देबै तखन देव-दानवक बीच समुद्र मथन केना हएत।"

तेना ने शास्त्र-पुराणक संग गाम-घरक चालि ओझरा गेल अछि, जे सामाजिक बैसारमे सेहो पाइये-कौड़ीक लेन-देन भऽ गेल अछि। तैठाम...। मुदा विचारकेँ मनेमे रोकि गिरिधारी भाय बजला-

"बौआ, बैसारमे जाइसँ मन एना हदिआइए[36] (सीमाबन्दी) जे अनेरे फुसिआही साँए-ले नीनो कामै केनाइ घटे हएत।"

गिरिधारी भाइक मन बिहुसलैन, जइसँ सुधीरकेँ सेहो मुहसँ हँसी निकलल। मुदा दुनू गोरे चुपे-चुप रहला।

जेहेन विचार (जइ स्तरक) गिरिधारी भाय बाजि रहल छला, से तँ अपने बुझि नहि रहल छेलौं। मुदा जोगिड़ाक शब्द-विन्यास

[36] सीमाबन्धी

लोक बुझै कि नहि बुझै मुदा स,र,र,र करिते अछि। मकानक छत ढलाइ करैकाल जहिना गोटे खुट्टा छोट भेने तेते ओछ भऽ जाइए जइसँ अकाजक बुझि ओकरा कातमे रखि देल जाइ छै तेहने अपनाकेँ बुझि पड़ल। बजलौं-

“भाय साहैब, जे मनमे आबए सएह करू।”

❑ शब्द संख्या : 2225, तिथि : 07 फरवरी 2019

उखमज

फागुन चढ़िते जहिना वसन्ती समैयक उखमजी रूप देखि पड़ैत तहिना ललितकेँ कौलेजक अन्तिम बर्खक अन्तिम समयमे भेलैन। देशक आजादीक सत्ता[37] बाहरी सत्तासँ देशवासीक बीच हाथमे आबि चुकल छल।

गाँधीजी अफ्रीकासँ अपन जीतल आन्दोलनक आन्दोलनी-चेहरा देशवासीकेँ भ्रमण करि देखा देलैन। जन-गणक बीच आशाक संचार भेल, आशाक संचार जहिना देव शक्तिक संचार करैए तहिना गाँधीजीक मुहसँ निकलल वाणीकेँ देशवासी देववाणीक रूपमे अंगीकार करए लगला।

देशक समस्या रहने देशवासी देश सेवाकेँ अपन कर्तव्य बुझि अपनाकेँ ओइ दिशामे बढ़ा लेलैन, जइसँ सघन लड़ाइ अंगरेजी सत्ताक संग भेल। ओना, 'सत्य-अहिंसा' नाओंसँ आन्दोलन ऐतिहासिक भेल अछि, तँए जन-गणक कुर्वान नइ भेल सेहो नइ कहल जाएत। वीर-सपूत देशक गुलामी मेटबैक संकल्प मनमे सिरैज हँसैत-हँसैत फाँसियोपर चढ़ला, जहलो गेला, कालापानी सेहो गेला, गोलियोक शिकार भेला आ बूटक चोटक संग लाठीक चोट नइ खेलैन सेहो बात नहियेँ अछि। खूब खेलैन। मुदा अपना संकल्पसँ पाछू नइ हटला।

वसन्तक आगमन होइते जहिना एक दिस आम-जामुन

[37] अंगरेजक सत्तासँ

मजरबो करैए तहिना फुलाइतो तँ अछिए। जोड़ लगा कऽ बाजब तुलनात्मक शैली, महान शैली छीहे तँए ऐठाम फरिछा लेब नीक हएत जे जहिना गाए-माएकेँ एक रंग-रूप मिलने 'गाए-माए'क जोड़ लगैए तहिना ऋृतुक संग रीतक जोड़ सेहो लगिते अछि। ओना, ऋृतु-रीतक सम्बन्ध एकरूपतो आ बहुरूपतो होइते अछि। मुदा से जानए आम आ जामुन। तेसर तँ यएह देखैए जे गाछोक आकार-प्रकार आ डारियो-पातक आकार-प्रकार एकरंग रहितो एकटा मजरैए आ दोसर फुलेबे करैए। से खाली आमे-जामुन टा नहि, मौसमक अनेक फल। जइसँ माछी-मच्छर, लुक्खी-बानरक आगमन सेहो होइते अछि। जे नचबो करैए आ मगन भऽ-भऽ गीतो तँ गबिते अछि। तहिना स्वर्गक अप्सराक स्वर-लहरीक संग कोयल-कोयलीक आगमन नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। अहिना ने जीवनो अछि जइमे जुआनीक उखमज सेहो उठिते अछि। कौलेज छोड़ैत-छोड़ैत ललितकेँ एक दुनियाँ–माने अपन दुनियाँ–क एक जिनगी बसबैक विचार मनमे जागि गेल।

मनुक्ख निर्माणक स्वर्ण जुगमे ललितक जन्म भेल छल। जइ जुगमे देश-भक्तिक भाव देशवासीक हृदयमे बसि चुकल छल। एक-सँ-एक उच्च कोटिक मनुक्खक निर्माणक दरबज्जा खुजिये गेल छल।

ओना, आइक परिवेशमे ललित अपन नाओं मेटा लेलक। पेटी-बक्साक कागजमे भलेँ ललितक नाओं जे होइ मुदा समाज तँ ललितकेँ 'लाल बच्चा', 'लाल भाय', 'लाल बौआ', 'लाल काका' इत्यादि नामक तेहेन ओढ़नी ओढ़ा देलक जे माए-बापक राखल अप्पन नाओं झँपा गेलइ। लोक अपन माए-बापक देल नाओंकेँ जोगबैले लाखक-लाख दान-पुन, भोज-भात करैए मुदा तेकर मिसियो भरि गम ललितकेँ नइ भेल आ ने मिसियो भरि तकलीफ

मनमे कहियो उठल। कियो जँ पुछबो करै छैन तँ सुपुट मुहेँ बजै छैथ जे माए-बाबू शोर पाड़ैले अपना मने 'ललीत' नाओं रखलैन मुदा आब तँ दुनूमे सँ कियो ने छैथ, तँए हमहूँ गयामे पिण्डदान करैत सभ किछु बिसैर गेलौं। समाजक देल नाओं 'लाल' अछि, तँए अपनाकेँ बेटा नहि 'लाल' बुझै छी। ऐसँ बेसी केकरो खगते की रहैए। एक तँ माइयक बेटा आकि बापक बेटा बनब कठिन अछि तैपर समाजक बनब तँ आरो महाग कठिन अछिए। ओना, एक तँ नव स्वतंत्र देश, तैपर विदेशी शासनसँ मुक्त भेने नोकरी-चाकरीक जगह कम छेलैहे, जइसँ औझुका जकाँ नोकरी करैक विचार लोकक संस्कारकेँ नहियेँ पकड़ने छल। गामो-घरक बोनिहार-गरीब अपन जिनगीसँ जुड़ल लूरि सीख किसानी जिनगीक अनुभव लऽ लऽ नेपाल, आसाम आ बंगालक संग अखुनका बंगला देशक राजधानी ढाका तक सालक दू मौसममे, एक खेप पटुआ काटैले आ दोसर खेप धान काटैले समूहक समूह बना-बना जाइते छला। जीवन-जापन लेल उपारजनो करै छला, तैसंग अपना बाप-पुरुखाक देल धएल धरोहर–खिस्सा-पिहानी, साज-बाजक संग नाच-गान–सेहो अपना संग नेने आनो-आन मुल्कमे देखैबते छला। पुरुखक संग महिलो जाइते-अबिते छेली। गाममे जिनगी बितबैक कोनो तेहेन साधन अप्पन नइ छेलैन जइसँ अपन मनो मानिते रहलैन, जहिना वनवासी राम दुनू परानी रने-बने वौआ-वौआ कहुना अपन जानो आ इज्जतो तँ बँचेबे केलैन...।

बोने-झाड़े, आड़ियें-मेड़े, धारे-धुरे छोट भाए–लक्ष्मण–केँ दुनू परानी रामक संग सेहो वौआए पड़ल रहैन, तहिना ने अपनो सभ छिऐ। यएह मिथिला छी, आ यएह ने मिथिलाक माटियो-पानि छीहे।

पनरह बीघाबला किसान परिवारमे ललितक जन्म भेल छल। भैयारीमे जेठ रहने ललितकेँ बी.ए. आनर्स तक अर्थशास्त्र विषयक

शिक्षा पेबामे कोनो तेहेन दिक्कत नहि भेल, जेना अधिकतर गरीब-गुरबा वा कम आँट-पेटबला किसान वा दबल-कुचलल परिवारक लगनशील विद्यार्थीकेँ होइत। आइक नजैरमे गामे-गाम प्राइवेट शिक्षण संस्था वा सरकारीए शिक्षण संस्था कम छल, माने नव-स्वतंत्र देश नवजात शिशु जकाँ तँ छेलैहे। गाम-घरक विद्यार्थीकेँ स्कूल-कौलेज तक पहुँचब, सभ खियालसँ, जेना दूरी रहने, सवारीक अभाव, तहिना रोड-सड़कक दशा, परिवारक आर्थिक तंगी इत्यादि-इत्यादि अनेको कारणे कठिन छेलैहे। ललितक गाममे शिक्षण संस्थाक नाओंपर खाली लोअर प्राइमरी स्कूल रहइ। ओना, समाजमे अपन सहमेलू परिवारमे कथा-कुटुमैती होइतो छल आ अखनो होइए, स्तरक हिसाबसँ। ललितक मम्मा गाममे मिड्ल स्कूल छल। बहुत सुभ्यस्त तँ नहि मुदा एते सुभ्ययस्त परिवर ललितक मामाकेँ छेलैन्हे जे बच्चा सभकेँ पढ़ा सकै छला। ममहरेमे पढ़ि ललित मिडिल पास केलक। तहियाक दरभंगा जिला आ अखुनका मधुबनीमे जहिना आँगुरपर गनल कौलेज छल तहिना आँगुरक गिरहपर गनल हाइ-स्कूल छल।

एक तँ ललितकेँ अपनो पढ़ैक जिज्ञासा जगि चुकल छेलै, दोसर मातो-पिताक धारणामे धएल विचार छेलैन्हे। तँए, एकरा शुभ संयोग सेहो कहले जा सकैए। घरसँ पाँच कोस हटल हाइ स्कूल रहइ, जैठाम छात्रावास सेहो छल। छात्रावासेमे रहि ललित सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलक।

जहिना दुनियाँमे चौमुखी हवा बहै छै तहिना देश-देशमे सेहो बहिते छइ। नव स्वतंत्र देश भारत, तँए वायुमण्डलमे स्वतंत्र देशक सुभिमानी[38] जीवन बनबैक हवा सेहो पसरले छल। ललितक मनमे

[38] स्वावलंबी

आबि चुकल छेलै जे हमरा सन लोककेँ मनोनुकूल नोकरी नहियेँ भेटत तँए अपने मनोनुकूल स्वाधीन जिनगी किए ने गढ़ि ली। लोहा-लक्कड़क कारखानाबलाक संस्कारमे लोहा-लक्कड़ रहैए मुदा खेत-पथारबलाक संस्कारमे खेते-पथारक धन्धा ने रहत।

अर्थशास्त्रक विद्यार्थी ललित तँए अर्थक आमद-खर्चक हिसाब बुझैक लूरि भइये गेल छेलइ। जइसँ मनमे उठि चुकल छेलै जे कोनो कारोबार ठाढ़ करैले अनेको तरहक साधनक जरूरत पड़िते छइ। मुदा ओकरा पुरबैमे अपने केते सक्षम छी।

ललित अर्थशास्त्रक विद्यार्थी तँए ललित अपन कारोबारक विचार करैले जखन तैयार भेल आकि मनमे समाजक संग देशो-दुनियाँ उठिकऽ ठाढ़ भेलइ। सबहक अपन-अपन समाजो छी आ देशो-दुनियाँ तँ छीहे। कियो शिखर-परागक पुड़िया बेचिकऽ सेहो जीवन ठाढ़ केने अछि, तँ कियो ताड़ी-दारू, गाँजापर सेहो ठाढ़ केनहि अछि। ओकरा कोन चिन्ता छै जे बाल-बोधकेँ नाश करै छी। खाएर जे अछि। 'पसन्द अपन-अपन, विचार अपन-अपन...।'

आर्थिक दृष्टिसँ ललित अपन समाजक सर्वे करए लगल। माने समाजक आर्थिक जालकेँ गिनती करए लगल। अनेको उपारजनक स्रोत ललितक आँखिक सोझमे नचल। मुदा सभ काज सबहक करैबला थोड़े होइए। अपनो स्तर तँ लोककेँ देखए पड़ै छइ।

मने-मन ललित अपन जिनगीक तारतम कइये रहल छल कि एकाएक जेना भक्क खुजलै। मनुक्खक मूल वस्तु छी भोजन। भोजनक की स्थिति अछि, तइ दिस जखन ललितक नजैर बढ़ल आकि घोराएल-मटियाएल पानि जकाँ देखि पड़लै। रसे-रसे मनमे विरागक जन्म हुअ लगलै जे अनेरे समुद्र उपछैक बात सोचै छी। भेल तँ सात गोरेक परिवार अछि, ओकरा भविसकेँ भविसक संग

मिलबैत चलैक अछि। तइले अनेरे मगजमारी करब बुड़िपना छोड़ि किछु ने हएत। किसानक बेटा छी 'किसानी जिनगी' बना, किसानक इतिहासकेँ ठाढ़ रखैक अछि।

एक तँ स्नातक तहूमे प्रतिष्ठित, माने बी.ए. आनर्स, तँए अर्थनीति बुझैमे ललितकेँ सजगता आबिये गेल रहइ। जइसँ आत्मबल मनोबलकेँ सेहो जगौलकै। मनोबल जगने ललितक स्वबल कर्मक्षेत्र दिस बढ़ल। ओना, बीच-बीचमे ललितक मनमे शंका सेहो जनैमिये जाइ जे औना-औना कखनोकाल मनमे उठै- जहिना हवा-बिहाड़िमे लग लगक गाछ डोलि-डोलि टकराइए तहिना ते ने अपनो मनक विचारक अश्वत्थ वृक्ष टकरा रहल अछि..!

टकराइत मनक बीच ललित निर्णय केलक जे रौद-बसातक निफाह[39] खेतमे काज करैसँ नीक, घरक छाँहमे पालि-पोसि माल-जालक उद्योग तँ कइये सकै छी। भेल तँ रूटिंगबद्ध काजक हिसाबे, जेना खेतसँ घासक जजातिकेँ आनि कुट्टीकट्टामे कुट्टी काटि गाए-मालकेँ दू बेर खाइले देबाक अछि, समयानुसार नहबैक अछि, सेहो सालक किछुए मासमे आ दू बेर दूहैक अछि, वएह दूध खेबो करब आ बेचबो करब।

'बेचब'पर नजैर पड़िते ललित गाम दिस तकलक। गाममे दू साए पौकेट किल्लौआ दूध लोक कीनैए, तहूमे बहुत एहेनो नोकरिया परिवार अछि जेकरा समयपर पाइ नइ रहने नगद उठौना छुटि जाइ छै आ रहने दोबराइयो कऽ लइते अछि। ओहो वौआएल खरीदबाल भेबे कएल।

गहिंकीपर सँ ललितक नजैर ससैर चाहक दोकानपर पहुँचल। चाहक दोकानपर पहुँचते महाभारतक जुआ पास जकाँ ललितक

[39] जेकरा ऊपर कोनो छाँही नइ छइ।

नजैर गामक उत्पादित दूधपर पहुँचल। कोनो गाए एक किलोसँ बेसी दूध देमएबला अखन धरिक समाजमे नहि अछि, आ महींस अढ़ाइ किलो। बकरी भलेँ पहाड़पर चढ़ि-चढ़ि किए ने बाजए जे हमर दूध गाए-महींससँ दोबर होइए। माने पौष्टिकतो आ दूधक मोटपन सेहो तेहेन होइए जइमे बरबैर पानि फेंटब तखनो गाए-महींसक दूधक बरबैर रहैए। मुदा बकरीक गिनती दुधारू पशुमे अछिए ने..! भलेँ बाल-बोधक मथदुक्खीमे साइयो बेर किए ने बकरी दूधक पट्टी साटने होइ।

सभ हिसाबकेँ मिलबैत ललितक मन आगू बढ़ल। गामक कोनो समस्या हुअए आकि देश-दुनियाँक, कियो अपने शक्ति भरि ने योगदान कऽ सकैए। जइ गाममे चाहोक खर्च-जोकर दूधक अपन आमदनी नइ अछि तइ गाममे जँ बाहरी बजार धक्का मारि अपन वाद बनबैए तैठाम सोझे कहलासँ हएत जे 'बजारवाद हमर जिनगीकेँ दूषित केने जाइए, हरदी-मसल्लाक बदला ईंटा-भट्ठाक अधपक्कू माटि खुआबैए..!'

गामक समस्याकेँ अपन जीवनसँ मिलबैत ललित पचीस किलो दूध पैदा करैक संकल्प श्रवण कुमार जकाँ अन्हराएल मातृ-पितृक भार अपन कन्हापर लऽ हरिहर क्षेत्रक मेलासँ तीनटा गाए अनलक। तीस किलो दूधक सनोह तीनू गाइक, जइमे पाँच किलो अपन नवसिखू जकाँ घटबी करैत ललित खुशी जे एहेन गाए गाममे आएल।

ओना, मनमे विचारक संकल्पकेँ रोपितेकाल ललित अपन दैनंदिनक क्रियाक समुचित आँकरा बना नेने छल, एते मन बदैलिये गेल छेलै जे गाए-ले घासक जरूरत सभ दिन अछि, तँए बरहमसिया खेती करए पड़त। गाए अनैसँ मास दिन पहिनहि दू कट्ठा घास बाउग

करि नेने छल आ दू कट्ठा आरो बाउग करैक तैयारीमे छल। तैसंग गाइक घर, ओकर थैर इत्यादि सभ कथुक बेवस्था पहिनहि कऽ नेने छल। किए तँ गाए अनैक दिन निसचित भऽ गेल छेलै जे कातिकक पूर्णिमा दिनसँ हरिहर क्षेत्रक मेला शुरू होइए।

ललितक तीनू गाए गाममे अबिते किसानक बीच जेना हल-चल उठि गेल। जे किसान एक किलो दूधक गाएसँ बेसी नइ देखने छला, तहूमे बुझल छैन्हे जे तीन मासक पछाइत गाए एकसंझू भऽ जाइए आ पाँच-छह मासमे बिसैक जाइए। तेकर पछातियो ऐगला आशा–ऐगला बिआनक–करैए। ओना, महींस बेसी दिन दूध दइ छै आ ओकर बाढ़िक प्रक्रिया सेहो अलग होइते छै, मुदा सबहक साधक काज महींस पोसब नइ छी। खासकऽ स्त्रीगण समुदायक लेल तँ असाध अछिए। गामक लेल नव किस्मक गाए, मुदा जइ जगहसँ अबैए तैठामक नव नहि, गाममे प्रवेश भेल। एक किलोक जगह दस किलो दूध पैदा करब, यएह ने प्रगतिक पथ भेल। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे समाज सेवा आ समाज सुधारक, दुनूक बीच जे विचारक संग काजोक दूरी अछि ओइपर विचार करब। राजा राम मोहन राय ‘बिधवा विवाह’क आन्दोलन चलौलैन। आंशिक सफलो भेल, मुदा की ई झूठ छी जे मिथिलाक धरती ‘विधवा विवाह’क नमहर इतिहासकेँ बहुसंख्य समाजक बीच रखनहि अछि। हँ! जइ समाजमे विधवा समस्या अछि तइ समाज-ले जरूरतो-बेगरता तँ अछिए, तँए विचारकेँ क्रियात्मक प्रयोग श्रेष्ठ भेबे कएल।

बाह रे गाम! बिना रेडियो-अखबारे ललितकेँ गाए अनैक समाचार राता-राती सौंसे गाममे पसैर गेल। आठ बजे भिनसुरका समय, गोपीलालक दरबज्जापर कचहरी लगि चुकल छल। सभरसी गोपीलालकेँ बापक देल तीस बीघा खेत आ तीन लाखक सुदिक

कारोबार चलैत। सभरसीक माने भेल जहिना खाइ-पीबैमे सभरसिया, माने दूधो खाएब आ माछो खाएब। भाय! जखन दुनूक शौकिन छी ते एकटाकेँ खाउ दोसरकेँ चाहेमे बेसीकऽ पीबू। तहिना गाँजा-भाँगसँ लऽ कऽ अन्त धरि–माने अफीम-चरस तक–क चस्की गोपी लालकेँ छैन्हे। खाइ-पीबैक अभाव नहि रहने जहिना चस्की तहिना चस्की बचावक उपाय सेहो छेलैन्हे।

सभा उसारक समय, माने कचहरी टुटैक बेर भऽ गेल छल, माने भिनसुरका बैसारक अन्तिम दौड़मे आबि गोपीलाल गाँजाक सोंट मारि मुँहमे धुआँ गुल-गुला फेकैत बजला-

“एकटा समाचार सुनलौं हेन जे ललितबा तीनटा पछबरिया गाए कीनि कऽ गाममे अनलक हेन।”

सरंगमे चढ़ल श्रृंगी ऋृषि जकाँ सिहेश्वर बाजल- “हौ भैया, जीबह ते की-की ने देखबहक!”

गोपीलाल- “अंगरेजिया गाए छी।”

सिंहेश्वर-

“अंगरेजिया गाए केना हएत, अपना सभ ऐठाम जेते रौद-वसात, जाड़-गरमीक बीच गाइयक पोस होइए तेहेन अंगरेजियाकेँ कहाँ छै, देखै नइ छहक ओसभ बारहो मास कोट पहिरैए।”

बैसारक उसारक समय भेने सभकेँ उपसंहार करैक विचार मनमे जगिये चुकल छेलै तँए विचार व्यक्त करैक अवसरो छेलैहे। गोपीलालो आ सिंहेश्वरोक गप-सप्पकेँ छीनैत गाँजा पार्टीक सरगना-रीतलाल बाजल-

“गोपी भाय, गाए अबैक बात सुनलौं हेन हमहूँ, इमहर-सँ-ओम्हरे होइत जाएब। कहाँदन तीनू गाए-मिला कऽ तीस किलो दूध होइ छइ!”

रीतलालक विचार सुनैत खुशीलाल बाजल- “रीतलाल भैया, साँझू पहर हम अपना आँखिसँ देखलिऐ। तीनू गाएकेँ दुहि ललित दस गोरेक बीचमे किलोक नापसँ पनरह किलो नपलक।”

नाक झाड़ैत छीतन बाजल- “अंगरेजिया गाइक जे दूध होइए से अपना ऐठाम पानि अछि। पानिसँ की बेसी गुनगर ओकरा गाइयक दूध हेतइ।”

बजारू विज्ञापन, जन-गणक मनकेँ झकझोरिये रहल अछि, पहिल साँझक दूध ललित अपन हीत-अपेछित, दियाद-वादकेँ परसाद-स्वरूप बाँटि लेलक। परात-भने सेहो ओहने बात। माने दूधक लेबाल कियो ने। ललितकेँ ऐ दुआरे खुशी रहैन जे अपन जहीनसँ जिनगीकेँ दहिन बना रहल छी। आइ जँ माए-बाबू रहितैथ तँ जरूर खुशी होइतैन। चाणको बाबा कहने छथिये जे ‘पुत्र सुपुत्र जँ रहत तँ ओकरा हमर खगता हेतइ।’ भने सबेर-सकाल भगवानक कीरतन-भजनमे लगि जइतैथ। मरैयो काल धरि जँ भगवानक नगर पहुँच जाएब, तैयो संतोखक मृत्यु हेबे करत। ने महाजनक कर्जा नेने रहब जे नरको तक ढेका खींचैले दूत तैयार रहत आ ने एक्को पाइक महाजनी अछि जे स्वर्ग जाइमे केतौ बाधा हएत। कियो अपना मने जे बुझैत होथु, मुदा किनको देनी किनको ऊपर नइ अछि। कर्मक बीच अहिना जीवन जाइत-अबैत चलैत रहै छइ। अही बीच ने कियो समुद्रमे हँसैत झिलहोरि खेलाइए, तँ कियो कनितो तँ खेलाइते अछि। हँसनी-कननी दुनू बहिन एहेन बहिना लगौने अछि जे आन लोकक मने केतए हँसैए आकि केतए कनैए आ अपना मने केतए हँसैए आकि कनैए से तँ अपने-अपने ने सभ बुझैए। अगम-अथाह दुनूक चालि अछिए। हँसैए आकि कनैए से बुझबे ने करबै। जहिना पाइबला सभकेँ देखब जे कुहैर-कुहैर तेहेन बोली निकालत जे अपनो मनक बात झूठ बुझि पड़ए लगत। मुदा ठीके कनै-कुहरैए

आकि हमरा मोन पतियबैए ई तँ...। तैसंग दुनूक अपन-अपन लीलाक संग रंगो-रभस आ रासो-लीला सेहो छइहे।

गाम तँ गामे छी, केतेको चौखड़ी, केतेको चबुतरा, केतेको दुआर-दरबज्जा आ केतेको माल-जालक घर[40] आ अँगनो सभ बैसार[41]क अड्डा छीहे।

ललितक गाइयक प्रस्ताव, गुलजारी भाय ऐठामक बैसारमे सेहो पहुँच गेल। पहुँचल तँ मुदा खिचड़ीक खिच-खिच रस्तासँ, माने पुरुखक मुहेँ सेहो आ स्त्रीगणक मुहेँ सेहो। मुँह तँ मुहेँ छी, कखन काने-कान भँसियाएत आ कखन आँखिये आँखि अँखियाएत से बुझब कठिन अछिए। एक तँ पुरुखोक बीच एहेन अछिए जे कखन कोन काजकेँ गपे-सप्पमे पुरबा-पछबा हवा जकाँ भँसिया देत आ कखन मारुख हवाकेँ हथिया लेत तेकर ठेकाने ने अछि। मुदा स्त्रीक जगतमे तँ सभ घरक स्त्रीगण हाकिम छथिये, तँए ईहो बात ओ नीक जकाँ बुझिते छैथ जे तीन-तेकठ झगड़ाक जड़ि छीहे। कोनो स्त्रीगणकेँ परिवारक दशा-दिशा देखैत चलब, जिनगीक धारक जीवन्तता छीहे।

गुलजारी भाय ऐठामक विचार गोष्ठीमे खखन एकसंगे पुरुख-नारीक नाड़ी पकैड़ बजला-

“ललित गामक पहिल बेटा भेल जे किलो भरि गाइयक दूधक गामकेँ दस गुणा उठा दस किलो दूधक गाए पोसैले तैयार भेल हेन तँ ओ प्रशंसनीय अछि।”

खखन भाइक विचारकेँ सुनि मखन भाय अपन विचार रखैत

---

[40] मालक घरक माने क्रियागत घरक

[41] बैसारक माने दू-चारि-पाँचसँ-दसो-बीस

बजला- "गाम तेहेन बेठेकान भऽ गेल अछि जे की नीक आ की अधला, से जहिना धिया-पुताक घुमड़ी नाच[42] नचनिहारकेँ होइए जे कखन केमहर ओंघरा जाएत तेकर ठेकाने ने रहैए, तेहने परिस्थिति बनि गेल अछि। नाचक बिपटा जकाँ 'खूब कहनती गे बुढ़िया खूब कहनती गे..! मुदा बुढ़ियो तँ पकठाएल बुढ़िया छेलैहे, ओ बाजै- 'चोर, बौआ चोर।'

'सीमा परहक लोक[43] ओ किम्हरो ने अछि! मुदा बीचमे रहि गाँजा-भाँगक टपान नइ करए तखन ने आ जँ से करत? तँए दुनू फेड़ो ने दुनू दिससँ ओकरे पड़ैए...।

रूपन भाय सहैम अपन सम्मति रखलैन-

"नचिकेता जकाँ जाबे यमराजसँ डटिकऽ सबाल-जवाब नइ करब, ताबे नचिकेता थोड़े बनि पाएब। नचिकेता बनैले नचिकेत रस्तो तँ पकड़ैये पड़त किने।"

भिनसुरका दूधक आमदनी देखि ललित गामक बजार दिस तकलक तँ अपनाकेँ झुझुआने कारोबारी बुझलक, मुदा ई मनमे एबे ने करै जे ठमकल दिशा आ चलन्त दिशामे अन्तर होइते छइ। कमो उत्पादन बजारोन्मुखी किए ने भऽ पाबि रहल अछि। मुदा लगले ललितक अपन मन कहलकै जे गाम तँ मात्र खेत-पथारक रूपमे मरन्त रूप पकैड़ अपन उचितो उपजमे पाछू मुहेँक बाट पकैड़ नेने अछि। एक तँ अविकसित अवस्था, तैपर विदेशी शासनक प्रभाव, जे देशेक हाड़-पाँजर तोड़ि देने अछि, तखन गाम-घर तँ गामे-घर भेल। जहिना अन्हारमे अन्हरजाली लागि आँखिक इजोतकेँ मरणशील

---

[42] घुमड़ी नाच भेल दुनू बाँहि पसाइर घुमैत रहब

[43] सीमा परक माने भेल, दू देशक बीच जे सीमा रेखा दुनूक अपन-अपन रहैए, तैबीच मे किछु जमीन बँचल रहैए, तइ बीच जे बसनिहार अछि।

बना दइए जइसँ ओ किछु देखि नहि पबैत तहिना ने भऽ रहल अछि। देशक आजादी, शाब्दिक रूपमे जरूर सुनि पड़ैए मुदा बेवहारिक रूपमे जखन दुनूक सीमांकन करै छी, तखन अपनाकेँ कहाँ केतौ देखि पबै छी। दिन-रातिक अन्हार-इजोतक खेल मानव समाजक बीच पसरले अछि। समाजक बीच जे सामाजिकताक रूप परतंत्र समाजक बीच पसारल गेल, ओ आरो नव-नव रूपमे पसैरिये रहल अछि, जे किछु-किछु समैयक गति-विधिक अनुकूल जरूर बुझि पड़ैए मुदा ओ अछि प्रतिकूल। ओना, समैयक संग अनुकूलो प्रतिकूल भऽ जाइए, मुदा ओकर रूप क्रमगत होइए। खाएर जे होइए, मुदा परतंत्र जनतंत्रसँ जुड़ल अछिए।

आगूमे राखल पनरह किलो दूध जे दुनू साँझमे तीस किलो भेल आ अपन आगूक जीवन देखि ललितक मनमे उठल- केना दुनियाँक लीला (गति-विधि) मे अपन लीलाकेँ समावेश करब। बाल मन ललितक तँए सिहरए लगल। मन वौआए लगलै। ओना, वौआएब दुनू रंगक होइते अछि। एकटा होइए देखल-जानल वौआएब आ दोसर होइए बिनु जानल-बुझल वौआएब। मुदा तेकरा 'अनभूआर वौआएब' कहलासँ काज चलि सकैए। ललितक मनमे कौलेज-जीवनक एकटा जीवन वृत्त नाच करैत आगूमे धमकल। धमककेँ ललित अकानए लगल।

बी.ए पार्ट वनक विद्यार्थी जखन ललित छल तखन एकटा नेपाली संगी भेटलैन। भेटलैन केतौ हरेलहा नहि, कौलेजमे पढ़ैत संगी। रामनवमीक मेला देखैले ललितकेँ हकार दऽ ओ मेलासँ, माने रामनवमीसँ पाँच दिन पहिने अपन गाम चलि गेल। जनकपुरसँ तीन कोस हटल गाम। गामक पताक संग जनकपुरोक पता दऽ देने छेलैन। विद्यार्थी ललितक मनमे आबि गेलै जे सम्बन्ध बनाएब जीवनक लेल धर्म अछिए। तहूमे धर्मस्थलक बीचक। अपनो सभ ते

गंगा-धारक बीच हाथक आँगुर भीड़ा दोस्तीक सम्बन्ध बनैबते छी।

रामनवमी मेलासँ एक दिन पूर्व ललितक मनमे उठल जे आइ जनकपुर विदा हएब अछि। मुदा लगले मनमे उठलै दूरक रस्ता अछि तँए जँ गोटे संगी भऽ जाए तँ बेसी नीक हएत। फेर लगले भेलै जे अनेरे लपौड़ीक फेड़मे पड़ि जाएब। भाय! मिथिला छी किने, आँगनमे लहास पड़ल रहैए आ दियाद-भाय सभ कहता जे जाबे मुँह फोरि घरबैया कहत नहि ताबे किए जाएब। जेकरा संगे चलए कहबै ओ अनेरे बकठाँइ रोपि देत जे हमरा हकार देबे ने केलक तँ हम अनेरे कुकुर जकाँ दौड़ल किए जाएब। यएह तँ छी समाज। असगरे ललित जयनगरक सीमा टपि पएरे संगीक गाम दिसक रस्ता धेलक। ओना, जनकपुरोक वएह रस्ता रहइ।

बेरुका समय, रस्तापर एकटा पाखरिक गाछ, ओइ पाखरिक गाछक निच्चाँमे एक आदमी अपन खेतक तीमन-तरकारी, माने सीम-भाँटा इत्यादि बेचैत रहइ। ओना, ललितक मनमे ईहो उठल जे खेतोसँ तँ बेपारी समान लइये जाइए। ऐठाम कनीटा बात बीचमे अछि। कियो बेपारी खेतक वस्तु बजार बेचैले गेल आ कियो गाछक निच्चाँमे बैस बजारक रूप ठाढ़ केलक। मुदा तइ सभसँ ललितकेँ कोन मतलब। अपन जिनगीमे अपन दुनियाँकेँ बसाएब छइ। किछु दूर जखन ललित आगू बढ़ल तँ गामक कातमे एकटा परतीपर एकटा हाट लगल देखलक। हाट केतेटा, एकटा चाह-पान-बीड़ीक दोकान, एकटा अन्न बेचनिहार, एकटा तरकारी बेचनिहार आ एकटा मनिहारी-लटखेनाक समान बेचनिहार। तीस-चालीस गोरे लेबाल। ललितक मनमे जिज्ञासा भेल ओ चाहबलासँ पुछलक-

“केते दिनसँ ई हाट लगैए?”

चाहबला जनपुरिया रस्ताक रहबे करए, ओ बुझि गेल जे ई

देशवाली छी। रामकेँ रबार दैत बाजल-

"जहिना तोहर राम जखन बोन दिस विदा भेलह आ चौदहे बर्ख बितबैले घर-दुआर बन्हैक ओरियान करए लगलह तखन हमरे लोमस बाबा रबारने रहैन कि नहि, जे केते जुगसँ हम लोहिया ओढ़ि जिनगी बितेलौं अछि आ हिनका चौदहे बर्ख बिताएब अबूह लगै छैन। तहिना ई हाट कहियासँ लगैए से कियो मंत्रीजी सँ उद्घाटन करा लगौलक अछि जे दिन ठेकान मन रहत। जहियासँ देखै छी तहियासँ अछिए। पहिने हमर बाबू बिनु कठघरे दोकान करै छला, पछाइत हुनकर मृत्यु भेलापर हम कठघरामे दोकान करै छी।"

गाममे बाहरसँ दू साए पैकेट दूध अबैए। पचास किलो चाहक चारू दोकान मिला खर्च अछि, तखन तीस किलो दूध जपाल बनि गेल अछि। भटकल बटोही जकाँ ललितक मन सेहो हटकल मुदा ओइठाम ओ अँटकल नहि, आगू बढ़ि अपनाकेँ समाजक बीच समर्पित जीवन बनबैक दिशामे आगू बढ़ल। आइ जेकरा हम बजारवाद कहै छिऐ, ओ खाली कहलासँ आकि दिवाली-भोरक सूप बजौलासँ थोड़े भागि जाएत। ओकरा ते ओहन प्रतियोगतामे आनए पड़त जइसँ पछरत। जँ से नहि तँ देखिते छी साले-साल केतेको देश उजैड़ रहल अछि। लूटिहाराक होड़ लागल अछि। तही बीचमे ने अपनो सभ छिऐ।

दूधकेँ ललित पत्नीक जिम्मामे सुमझा, उठिकऽ विदा भेल। गाम छी सबहक गाम छिऐ। गाममे ओते जरूरत अछिए जेते पुरबैक सामर्थ अपना रहितो बीरान बनल अछि।

ओना ललित अर्थशास्त्रक विद्यार्थी अछि, मुदा जनसंख्या नियंत्रणक वएह सिद्धान्त बुझैए जे हेजा-प्लेग औत आ जेते बेसियाएल लोक रहत ओ सभ ओइमे मरत। टाटा-बिड़लाक कल-

कारखाना तँ देखैए मुदा अपन कारखानाकेँ देखिते ने अछि। ओना, मनमे एकटा खुशी ललितकेँ अछिए जे नमूनाक[44] रूपमे जँ दू-चारि दिन बाँटि-बिलैह दिऐ तँ एक्केबेर महजाल जकाँ सौंसे पोखैर पकैड़ लेत, मुदा ओते तँ वस्तुओ ने अछि। तहूमे मिथिला छी किने देशक आँकड़ामे आनठामक महिला जेतेक पछुआएल हुअए मुदा मिथिलाक महिला अमेरिका सन देशमे बैसल-बैसल मिथिलानी बनि अपन टी.बी. रेडियो, मोबाइल, कम्प्यूटरमे ओहिना ॠृषिका सभ जकाँ एकाग्र भऽ सुनबे ने करै छैथ, जे सागो तोड़ि-तोड़ि खाएब, मुदा मिथिलानी छोड़ि मिथिआही नइ कहाएब...।

ललितक मन गुन-धुन कइये रहल छल जे आब की करब? तैबीच एकटा विचार मनमे उतरलै। उतरलै ई जे बजारो तँ दू-दिशिया अछिए। लोकेक आवश्यकता ने बजार ठाढ़ करैए। केनौं अछि आ आगूओ करबे करत। मुदा लगले ललितक मन अपन समाजक लोकक बीच पहुँच गेलइ। लोक काजकेँ लाजक धारमे भँसिया काजेसँ लजाए लगल अछि। ई बात जरूर जे गुणानुकूल काज रहलासँ मनोबल बढ़ै छै, मुदा जँ डॉक्टर साहैबक परिवारमे माए वा पत्नी बीमार पड़तैन, जैठाम रंग-बिरंगक सेवाक आवश्यकता अछि, तैठाम जँ डॉक्टर साहैब डॉक्टरसँ मनुक्खक दुनियाँमे पहुँच सहायकक काज अपने नइ करता तखन सम्बन्ध की आ सम्बन्धक फल की..?

अपने-आपमे ललित अपन समीक्षा अपने करए लगल। गाममे, अखन धरि गाए पोसैक इतिहास किसानो परिवार आ बोनिहारोक परिवारमे रहल अछि। अपन-अपन क्रियागत साम्यतो छै आ पूजीगत विषमतो छइ। माने ई जे सम्पैत-विहीन लोक पोसिंया

[44] वस्तुक जाँच-पड़ताल

रूपमे गाए पोसैए मुदा किसान परिवार किसानी जिनगीक एकटा अंग बुझि पशुपालन करैत आबि रहला अछि।

ललितक अपन आगूक जे समस्या छल ओ विचारमे कखनो तर पड़ि जाइ छल आ कखनो ऐ रूपमे ऊपर आबि जाइ जे दूध तँ कच्चा सौदा भेल, एकरा आमक अचार जकाँ तीनसल्ला कोहामे थोडे राखल जाएत। दूध दूध छी साग नहि, जे लगले सड़ि जाएत। ओना, पहिलुका हिसाबसँ सागोक जिनगीक हिसाब सुधरबे कएल अछि। पहिलुका हिसाबे अनेको नवीन विन्यास बनबैक कला सेहो आबिये गेल अछि। आब तँ दूधोक अनेको रूप एहेन अछिए जइमे बदैल दूधक क्षतिकेँ बँचौल जा सकैए। जेना- दूधसँ छेना, दही, घी इत्यादि-इत्यादि। मशीनक आगमनसँ दूधसँ घी बनबैक प्रक्रिया असान सेहो भइये गेल अछि।

दरबज्जासँ आगू बढ़िते ललितक मनमे उठल अड़ोसिया-पड़ोसिया तँ देखिये रहल छैथ जे ललितकेँ अपन परिवारसँ दस गुणा दूध फाजिल छैन। टोलक बीचमे चाहक दोकानो अछि। गाम-घरमे एहेन अछिए जे ताश खेलनिहार आ चाहक दोकानपर बैसनिहार दसटा लोको रहिते छैथ। चाहक दोकानपर ललितकेँ पहुँचते चाहबला दोकानदार बाजल-

“ललित भाय, सुनलौं अछि जे गाए पोसलौं हेन?”

अपन काजक चर्च होइकाल लोक अपन विचारकेँ काजमे (क्रिया) बान्हि जहिना नीक लोक बजैए तहिना ललित बाजल-

“हँ! काल्हि हरिहर क्षेत्रक मेलासँ तीनटा गाए अनलौं हेन।”

चाहबला-

“केते दूध होइए?”

ललित- “तीस किलोक सनोह करिकऽ जहिना अनलौं तहिना

अपनो खुटापर लगबो कएल अछि। अपन तँ सात गोरेक परिवार अछि, बेसी-सँ-बेसी पाँच किलो परिवारमे राखब।”

चाहबला- “हमरा दस किलो दूध प्रतिदिन खपत अछि। जे पौकेटबला दूध लइ छी। चालिस रुपैये किलो दइए।”

ललित मने-मन सोचलक जे एकठाम दस किलो दूधक खपत अछि। गाममे चारिटा चाहक दोकान अछि, एते दूध तँ पुराइयो ने सकब। मुदा लगले समाजक प्रति सिनेह सेहो मनमे नमड़लै। नमड़लै ई जे गाइक दूध छी, गाममे एको परिवार रोगसँ अबंच नहियेँ अछि। तैठाम जँ दूधक जरूरत हएत तँ पहिल प्राथमिकता ओकर भेल। मुदा, ललित बाजल-

“जइ दरमे पौकेटबला दूध कीनै छह तही दरमे हमहूँ देबह।”

दोकानदार बाजल-

“पौकेटबला दूध दइले दू बजे भोरेमे आबि जाइए, तँए आइ तँ कीनि लेलौं। काल्हिसँ दस किलो हमरा दिअ।”

दिनक चालीस प्रतिशत मुदा तत्काल दू-तिहाइक भार उतरैत देखि ललित बाजल-

“जरसी गाइयक दूधसँ गामक लोक अनभुआर छैथ, तँए रंग-रंगक विचार चलबे करत। कियो बजता जे फोकराइन लगैए तँ कियो बजता पानियोंसँ पातर दूध होइए। तँए, पाँच किलो दूध हम ओहिना दइ छिअ चुपचाप चाह बना, पीलाक पछाइत पुछियहक जे चाह केहेन भेल। बस भऽ गेल दूधक परीक्षा।”

अपन मेहनतक आश देखि ललित अपन जिनगी अपना हाथमे देखिते जहिना अपन-अपन कर्मक तृप्तिसँ सभकेँ खुशी होइ छैन तहिना ललितोकेँ भेल जइसँ रत भऽ अपन सफल जिनगीक कामना करैत वसन्तक कामनी फूलक फुलवारीमे भविस दिस देखए

लगला।

तीस बर्खक पछाइत ललित आइ अपन जिनगी अपना समाजमे देखि रहला अछि। स्वतंत्र देशकेँ, माने जे परतंत्र छल आ ओ स्वतंत्र भेल, ओइ देशक विकास-प्रक्रियाक की गति छी। दुनियाँक बीच सभ छीहे। कोन देशक लोक अपन स्वतंत्र साँसमे की पौलक आ की लिलसा छेलइ। गामक पुस्ताइनी सम्पैत बिरहा रहल अछि मुदा अपने ओही भाँजे देश-देश वौआ रहल छी। चलू आइ एतबे।

❑ शब्द संख्या : 3964, तिथि : 16 फरवरी 2019

एकभग्गू बेटा

सात दिनपर लहानसँ घुमल रही। ओना, गेल रही तीनियेँ दिन ठेकना कऽ मुदा लगि गेल सात दिन। सात दिन लगैक कारणो भेल। कारण ई भेल जे पिसियौत भाय आँखिक अपरेशन करबए गेल रहैथ, हुनके देखैले गेल रही। ओना, ओ (पिसियौत भाय) गामसँ निकलल रहैथ बुधे दिन आ अपने निकललौं वरस्पैत दिन, मुदा तैबीच ओहो लहान मात्र पहुँचले रहैथ। बेटो आ पत्नियोँ संगमे रहबे करैन। लहान पहुँचला पछाइत मात्र रहैक डेराटा ठीक करि तीनू गोरे अपन खाइ-पीबैक ओरियानमे लागल रहैथ।

बारह बजे दुपहरमे पहुँचते हमहूँ डेरापर गेलौं। कोनो महानगरक डेरा तँ छल नहि जे भेँटो होइमे समय लगैत। शहर-बजारक डेरा तकैमे परेशानी ऐ दुआरे होइए जे सघन आबादी रहने रहैक घरोक सघनता भइये जाइए। मुदा लहान तँ से छी नहि, खुलल जगहो अछि आ आबादियो कम छइहे। जहिना भौजी–माने पिसियौत भाइक पत्नी अनसुइया–अनाड़ी[45] तहिना भातिज सेहो अनाड़ीए, तँए अपन उपस्थिति दर्ज कराएब अनिवार्य छेलएहे। ओना, उपस्थिति दर्ज कराएब सेहो मात्र भाँजे पुराएब होइए, मुदा भाँज पुरबैबला उपस्थिति दर्ज कराएबो ओतबे महत् रखिते अछि जेते नइ कराएब, माने अनुपस्थिति रहब। कोनो उपस्थिति दर्ज करबैसँ पहिने विचारि ली जे जइ निमित्ते[46] जा रहल छी, ओइ

[45] अनाड़ीक माने ऐठाम डॉक्टरी क्रियासँ अछि

[46] काजक निमित्ते

क्रियामे हमर की भूमिका भऽ सकैए। ओना, भूमिको-भूमिकोमे अन्तर अछिए, मुदा अपना संग से नइ छल। अपन भूमिकाक मूलमे यहए छल जे लहानक आँखिक अपरेशनमे ई खेप चारिम छल आ आन-आन डॉक्टरी काजक किछु बेवहारिक जानकारी सेहो अछिए। केहेन रोगीकेँ केहेन डॉक्टर ऐठाम लऽ गेलासँ ओकर नीक इलाज हएत, केतए जाँच-पड़ताल होइए आ केतए-सँ दवाइ-दारू आनल जाइए इत्यादि...। तहूमे चारिम खेप रहने अस्पतालक चपरासीसँ लऽ कऽ डॉक्टर तक चिन्हारए जकाँ भइये गेल अछि। यएह जे मनुक्खक ऐना छी ओ शीशाक ऐनासँ भिन्न होइत अछि। शीशाक ऐनामे अपन नीक चेहरा देखला पछातियो बिला जाइए मुदा मनुक्खक ऐनामे बिसरा-भूला गेला पछातियो विलाइ नइए। तँए कखनो काल अपनो सभकेँ होइते अछि जे चेहराक रंग-रूपसँ तँ परिचित बुझि पड़ैए, मुदा ठौर-ठेकान बिसरा जाइए, आब अहीं कहू जे जैठाम चिन्हल चेहरा बिसरा सकैए तैठाम अनचिन्हारए नइ हएत तँ अहाँकेँ चिन्हनिहारे के हएत आ जखन कियो चिन्हनिहारे ने रहत तँ अहाँक गुण-धर्मकेँ के मटियाएल समाजसँ फरिछाएल समाजमे के आनत।

करीब तीन बजे बेरुपहरमे गाम पहुँचते देखलौं जे गामक रूखिये बदलल-बदलल सोहनगर बुझि पड़ि रहल अछि। जइ दिन गामसँ निकलल रही तइ दिन पोखरिक पानि जकाँ गामक पानि असथिर छल आ तैबीचमे कोन एहेन कोसी-कमलाक पह फुटि कऽ आबि गेल जे बाढ़ि जकाँ झलकीक रूप पकैड़ लेलक? एकर अनेक कारण भेल। पहिल, अपन परिवारमे मकानक छत ढलाएब, दोसर अछि जाइतिक बन्धनसँ बनल सामाजिक बेवहार, माने टोलमे एकटा ओहन बिआह छी जइमे परिवारक नइ सभ समांग तँ खुदरो पाँच समांगकेँ बरदाएब अछिए, तोहूमे दिनक भोज सेहो छीहे, जेकर

पहिल बिझो[47] भऽ गेल अछि।

एक तँ नेपलिया रस्ताक टुटल देह तहूमे नहाएल नइ छेलौं से मनक मोटा आरो भारी लगै छल। तैसंग गाममे गमगीन सेहो पसरल छल जइसँ वातावरणमे थीरता आबि चुकल छल। चारि दिन पहिने एकटा ओहन पढ़ल-लिखल नौजवान, जे साल भरि पूर्व मदरसाक शिक्षक बनले छला, ओ गाड़ीक दुर्घटनामे मरि चुकल छल। एक तँ ट्रकक एक्सीडेन्टसँ थौआ-थाकर भेल शरीर तैपर पोस्टमार्टम सेहो भेलइ। दुर्घटनाक चौबीस घन्टाक पछाइत लहास गाम पहुँचल। तैबीच समाजक लोक कियो दौड़-बरहामे लागल, तँ कियो सुर-पता लगबैमे। जेर बना-बना स्त्रीगणो आ पुरुखो घटनेक चर्चक पाछू बेहाल छल। उच्चकोटिक सामाजिक बेवहार अखनो समाजमे जीवित अछिए।

सभ समाचारकेँ मनमे थाम्हि पहिने नहाएब दिस बढ़लौं। संजोगो नीक छल जे भोजक बिझो सेहो भेले अछि। परिवारमे मकानक छत ढलाइ लिफ्टक माध्यमसँ होइ छल जइमे काज केनिहारोक भारीपन आ देखनिहारोक भारीपन छेलैहे। देहक कुरता-गंजी खोलैत छत लग पहुँचते सभ किछु देखि समांगसँ काजक गतिक जानकारी लैत नहेलौं। नहेला पछाइत बिआहक भोजो खाइक खियालसँ आ जिनकर बेटाक बिआह रहैन, ओ साल भरिसँ देहक हड्डी तोड़ा घरमे कुहैर रहल छैथ, तिनको जिज्ञासाक संग कुशलो-समाचार बुझैक खियालसँ विदा भेलौं। ऐठाम एकटा बात अछि, देहक हड्डी तोड़ाएब। कियो अपन विचारसँ देहक हड्डी तोड़बै छैथ तँ कियो अपन बिनु विचारो तँ तोड़ैबते अछि। ऐठाम यहए बात

[47] बिजो

अछि, माने दोसर। चारि बजे भोरमे फूल तोड़ए कनैल फूलक झाड़मे गेला, अन्हार रहबे करइ, हुनकर उमेरो पचाससँ टपले छैन, एकटा साँढ़ तेना कऽ हुरियाहा लेलकैन जे देहक हड्डिये तोड़ि देलकैन।

जहिना समाजक अलग-अलग परिवारमे पारिवारिक अलग-अलग बेवहारो अछि तहिना गतिशीलो तँ अछिए। पिताक ढलैत उमेरक सन्तान दयानन्द, ढलैत उमेरक सन्तानक माने भेल पचास बर्खसँ ऊपर उमेरक सन्तान, मुदा जीवन क्रियाशील रहलैन। ओना, छोट किसान परिवार रहितो दयानन्दक पिता–प्रेमानन्द–करीब पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच मुइलखिन। तैबीच दयानन्द बुढ़ बरदक बछबा जकाँ खेलैत-धुपैत मैट्रिक पास कऽ लेलैन। परिवारक एहेन स्थिति जे कहुना कऽ सालमे भोजनक संग रहैले माटि-खढ़क घरटा बना सकला। माने भीतपर खढ़क छार दऽ कऽ। ओना, खढ़क मतलब राड़ी-डबहारी सेहो होइए आ नार-पुआर सेहो होइते अछि। मुदा दयानन्दक घरक छार नारक अछि। गामेमे अधिकांश परिवारकेँ अपना खरहोरि नइ रहने राड़ी खढ़क छार कम आ धानक नारक छार बेसी अछिए। धानक नारक छारसँ राड़ीक छार नीको होइए आ मजगूतो होइते अछि। कोसी इलाकामे धानक उपज कम भेने आ भरना जमीनमे अनेरुआ खढ़क खरहोरि बेसी भेने ओम्हुरका घर-दुआर बेसी मजगूतो आ ठठगरो होइते अछि। ओना, बालु परहक घर जहिना प्रेमचन्दक अगलू आ जुम्मनक दोस्ती तहिना होइए मुदा जेतए बसी सहए सुन्दर देश भेल। अपन पारिवारिक स्थिति देखि दयानन्दोकेँ बाहरसँ कमा कऽ अनैक जिज्ञासा जगल आ मातो-पिता विचार देलकैन। ओना, गामक पढ़ल-लिखल लोकक बीच देखा-देखी ओहन भऽ गेल अछि जे क्रमश: पढ़ल-लिखल लोक–माने डिग्रीधारी बेकती–गाम छोड़ि बाहर जा नोकरी करिते छैथ। जहिना फाटल दूधमे छेना अलग भऽ जाइए आ दुधपानि अलग तहिना गामो

समाजमे अछिए। पढ़ल-लिखल लोक गाम छोड़ि भगबो केलाह आ भागियो रहले छैथ। ओना, आब ओहो सीमा नइ रहल। बिनु पढ़लो-लिखल लोक देशक महानगरक कोन बात जे बाहरो देश श्रमिकक रूपमे धड़ल्लेसँ जाइये रहल अछि।

दयानन्द अपन नोकरी-जीवनक शुरूआत एकटा मारवाड़ी-बेपारी ऐठामसँ केलैन। शुरूमे दरमहो कम रहैन मुदा गामक जे मजूरीक स्थिति छल तइसँ नीक जरूर छेलैन। ओना, जैठाम नोकरीमे भोजनो भेटैए तैठामक आकर्षण सेहो बढ़िते अछि। तहूमे मारवाड़ी परिवारक। जहिना, जही मारवाड़ी ऐठाम दयानन्द नोकरी शुरू केलैन तहिना सेवा-निवृत्तो ओहीठामसँ भेला। मारवाड़ीक नोकरी, तँए पेंशनक कोनो विधाने नहि। सभकेँ बुझले अछि जे समय चुकने माने समयकेँ बिनु चिन्हने, रेलबे स्टेशनक गाड़ी छुटबे करैए।

नहेला पछाइत नेपलिया थकान सेहो कमल आ मनो हल्लुक भेल। मन हल्लुक होइक कारण भेल अस्पतालक काजसँ निवृत्ति आ बिआहक काजक शुरूआत। जँ कहीं छौड़ा-मारेड़ नइ मानलक आ बरियाती लऽ गेल तखन तँ जहिना दिनुका भेल तहिना रौतुको हेबे करत। भरि राति हूलो-लो-लोए-मे चलि जाएत। बरियाती नइ जेबाक आन बहाना तँ तत्खनात् नइ फुरल मुदा एकटा बिनु सोचनहि फुरि गेल। ओ ई जे अस्पतालक जिनगीक दिन-राति केहेन होइ छै से तँ अस्पताल भोगनिहार बुझिते छैथ, तँए आन मानए वा नइ मानए दयानन्द तँ मानबे करता। मन हल्लुक भेल, बरियाती जाइसँ बँचैक गर भेटल। ओना, आधुनिक परिवेशमे जात-बरियातक भोजनक जे रूप-रेखा पकैड़ लेलक अछि, ओइमे एकरूपता जरूर बेसी भेल अछि। जेना पहिने इलाका-इलाकाक अपन भोजन-प्रक्रिया भिन्न-भिन्न छल आ किछु एकरूपतो छल, जइमे आर्थिक आधार मूल

रूपसँ छल। मुदा तहूमे कमी जरूर भेल अछि। समैयक बेस्तता सेहो बढ़बे कएल अछि। आब केकरा एते पलखैत छै जे तीन दिन तक दू समाजक लोक एकठाम बैस गारि-गरौबैल करता जे अहाँ गाममे चोर बेसी अछि, तँ अहाँ गाममे पौकेटमार बेसी अछि...। आब तँ लोक शौर्टकट जिनगी बना जीबए चाहैए। अपने जिनगीकेँ नोनी साग जकाँ तेते चतरा रहल अछि जे धरतीसँ उठबो कठिन भइये रहल अछि। तँए ने भोजो-भातक रूप बदैल एकरूपता दिस बढ़ि रहल अछि। भेल तँ जँ पुड़ी खुआबैक अछि तँ लालमोहन आ रसगुल्लाक ओरियान कऽ लिअ नइ तँ माछ-मांसक। भऽ गेल भोज।

दयानन्दक घर अपना ऐठामसँ दस डेगक दूरीपर अछि। माने एक किलोमीटरक चौथाइपर, तँए पहुँचैमे बेसी समय नइ लागल। दयानन्द ओसारक ओछाइनपर पड़ल, महाभारतक बर्बरी जकाँ ऊपरेसँ सभ किछु देखि रहल छला। मुदा ने हँसै छला आ ने कनै छला जेना महाजनसँ मुक्ति पबैकाल खौदकाकेँ मनमे खुशी होइए तहिना भरिसक दयानन्दो बेटाक रीनसँ उरीन भऽ रहल होथि तहिना भरिसक खुशी छैथ। अँगनाक डेढ़िया टपिते दयानन्दक नजैर हमरा ऊपर पड़ि गेलैन। बजला- “आउ-आउ भैया, केमहर सुर्ज उगल से नइ जाइन।”

अनचोकोमे आ चोकोमे कोनो वस्तुक चोट कपारमे जहिना ठाँइ-दे लगलापर होइए तहिना भेल। मन जहिना तिलमिला जाइए तहिना तिलमिलाए लगलौं। ई बात अखन तकक अनुभवसँ बुझल अछिए जे मारवाड़ीक दोकानपर रहने दसटा देबाल-लेबालसँ सदिकाल गप-सप्प होइते छइ, तेकरो अनुभव आ बच्चेसँ जे दयानन्दक बजैक लत पकड़लक ओ अखनो धरि छैन्हे। मनकेँ थथमारि दयानन्द लगमे जा कऽ बैसबे केलौं कि दयानन्द करेज फारि कानए लगला। कानब देखि धारक अथाह पानि जकाँ उगए-

डुमए लगलौं। ने थाह लेल हुअए आ ने अथाहेक भाँज चढ़ए जे की बाजि दयानन्दक नोर पोछि आगू किछु बाजी। मुदा लगले ईहो हुअए जे कनैतकेँ जँ झूठो-फुसि बाजि परतारि नइ देबइ सेहो केहेन हएत। बजलौं-

“दयानन्द, दिन-दिनक खेल छी। जइ दिन जेहेन जेकर मुहूर्त बनैए तइ दिन तँ...।”

ओना, बिआहक धुमसाही अँगनामे रहने दयानन्दोक मन चौचंग छेलैन, मुदा तैयो एते तँ बेवहारिक, बेपारक कारोबार केने, जीवन बनियेँ गेल छेलैन जे दर्जनो महाजन-गहिंकीक बीच गप-सप्पक क्रमक संग काजो निपटबैक लूरि भइये गेल छेलैन। दयानन्द बजला-

“भाय साहैब, सभ बेटा एकभग्गू भऽ गेल.!”

दयानन्दक विचार सुनि मनमे कोनो भाँजे ने चढ़ए जे एकभग्गू की भेल? केहेन बढ़ियाँ मुँह-कान, देह-दशा लम्बाइ-चौड़ाइ अछिए। मुदा तैयो दयानन्दक विचारकेँ धोपैत बजलौं-

“जिनगीमे अहिना होइ छइ।”

ओना, बजैक क्रममे बाजि गेलौं मुदा अपने मन दुतकारए लगल। दुतकारए ई लगल जे जे दयानन्द जिनगीमे धिया-पुताक प्रति एते केलक, ओ केना एकभग्गू भऽ गेलइ। फेर लगले मनमे उठि गेल जे अधला बाते कि काजे एकभग्गू हएब, सभटा अधले भेल सेहो केना कहल जाएत। गणेशोजी तँ एकभग्गूए देव छला। जहिना पेट सभसँ बेछप, तहिना साँसनली सूढ़ आ जहिना सुनैक कान सूप सन तहिना देखैक आँखि सेहो करिजनी सन लालो आ एतेक छोट किए भेलैन? अंगक शोभा तँ तखने ने जखन सभ अंग अपन-अपन ठौरे ठेकान धेने रहत। जहिना करिजनी सन आँखि तहिना सवारियो ने

रखने छैथ। जे माइये-बापक तिरपेखैन करैत दुनियाँ देखै छला।

'जिनगीमे अहिना होइ छै' सुनि दयानन्दक मन जेना ठमकलैन। ठमकैक कारण भेलैप जे अपनो सन आ आनो-आन सन परिवारक लीला देखिये सुनि रहल छला। भाय, पृथ्वीपर जहिना रंग-रंगक धारो अछि तहिना ने धारक घाटो अछिये। जीवनोक धार तँ तहिना ने सभरंगा अछि जेना गंगा घाट, कमला घाट, कोसी घाट, वैतरणी घाट, मुक्तिबोधनी घाट इत्यादि-इत्यादि अनेको धारक संग घाट सेहो अछि। मुदा से भेल नहि, दयानन्द बजला-

"भाय साहैब, केकरा-ले जिनगी भरि खून-पसेना एक केलौं।"

एक तँ ओहिना दयानन्दक पहिलुका बात 'एकभग्गू बेटा' मनकेँ घोर-घोर केनहि छल तैपर जिनगी भरिक 'खून-पसेना एक केलौं' सुनि आरो मनकेँ घोरसँ धोर-मट्ठा कऽ देलक। घोराएले मनमे खीझ उठल जे अखनो धरि दयानन्द बनियौटी बोली नइ बिसरला अछि। जे बजैक छैन से मुँह खोलि कऽ ने बजता आकि अदहा बाजब आ अदहा पेटेमे राखब। एना जे अधखिज्जू बात सुनि पिता-पुत्रक बीच किछु बाजी सेहो तँ दब-उनार हेबे करत किने। जखने से हएत तखने ने राम-दशरथ जकाँ रमायण बनि जाएत। मुदा प्रश्न जेहने उठत तेहने ने तेकर जवाबो हेतइ। बजलौं-

"दयानन्द, जखन मनुक्ख खून-पसेनाक सम्बन्धक महत् बुझबे ने करत तखन ते..!"

दयानन्दकेँ विचारमे जेना सह भेटलैन तहिना बजला-

"भाय साहैब, जँ अहाँ नइ रहितौं ते दू साल पहिनहि हम मरि गेल रहितौं।"

अपने बिसैर गेल रही दू साल पहिलुका घटना। बिसरबो केना ने करब। दिन-दिनक लीलाक बीच एहेन सदिकाल होइते रहैए। ओइ

दिनक जे काज छल से ओइ दिन भेल, आजुक जे काज अछि ओ आइ हएत। फेर मनमे उठल जे हमर कोन एहेन योगदान दयानन्दकेँ जिनगीमे भेटलैन जे दू साल जिनगी बढ़ा देलकैन? जिनगी तँ ओहन नाह परहक सवारी छी जे कखन डुमि जाएत तेकर ठेकानो ने अछि। तैठाम दू सालक विचार आबि रहल अछि..! मुदा लगले मन कहलक अपने तँ करता भऽ कऽ बिसरियो गेलौं मुदा से मन राखैक काज यमराजक ने छिऐन तइले अपने किए चिन्ता करब। बजलौं-

"दुनियाँ छी किने, रंग-रंगक गुण-अवगुणसँ भरले अछि तइले अनेरे अपना सभकेँ ठिकौती अछि जे...।"

हम की कहए चाहै छेलिऐन आ मुहसँ की बजा गेल से अपनो ने बुझि पेलौं। दयानन्द फुटि कऽ कानि पड़ल-

"भाय साहैब! जँ अहाँ ऐठाम नइ पहुँचतौं तँ हम ओही दिन मरि गेल रहितौं। कहैले चारिटा बेटा अछि, सभ घर छोड़ि पड़ा गेल आ हमरा हँसेरी आबि ओध-बाध कऽ मारि माटिपर पाड़ि देने छल।"

दयानन्दक बात कानमे पड़िते धक्-दे मोन पड़ल। मुदा तेकरा छोड़ि विचारकेँ बदलैत बजलौं-

"गाम-समाजमे सभ रंगक परिवार अछि, समांगोक दृष्टिसँ आ सरो-सेठक दृष्टिसँ, तँए कोनो शिक्षित, कोनो अर्द्ध शिक्षित, कोनो साधारण शिक्षित आ कोनो सोल्होअना अशिक्षित सेहो अछिए। तइमे आँखि गरा ने देखए पड़त जे केहेन काज केहेन परिवारमे होइए।"

दयानन्द अपन चारू बेटो आ एकटा बेटियोकेँ उच्च शिक्षाक अर्जन अपन कमाइसँ करौलैन। गाम-समाजमे शिक्षाक (डिग्री शिक्षा) दृष्टिसँ उच्च कोटिक परिवार भेल, तैठाम विचारणीय प्रश्न अछिए। ओना, स्कूल-कौलेज शिक्षाक संग डिग्री सेहो दइते अछि।

मुदा जिनगीक लेल केहेन शिक्षा चाही तइमे अन्तर अछिए। दुनूक भाव-भूमि सेहो अलग-अलग होइते अछि। एक भेल ‘धरतीक सत्य’ आ दोसर भेल- ‘अकास गंगीक सत्य।’ ओना, जिनगी छी! हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछिए। होइत एलै हेन आ होइत रहतै, मुदा जइ परिवारक बीचक समस्या छी ओइ परिवारक समीक्षा तँ हेबे करत किने। मन ठमैक गेल, ऐठामसँ किछु बजबो करब तँ ओ दहाइये जाएत, तइसँ नीक जे दयानन्दकेँ अपन शुभकामना किए ने दिऐन। बजलौं-

“दयानन्द, बेटाक कर्जसँ उरीन भेल जिनगीकेँ अपना आँखिसँ देखि लेलह, ई नान्हिटा काज थोड़े भेल।”

परिवारपर नजैर पहुँचते दयानन्दक हृदय जेना फाटए लगलैन। बजला-

“भाय साहैब, ने अपने कहियो ठीकसँ बुझलौं जे नोकरीसँ हटब आ ने...। बचल स्त्री आ धिया-पुता। अपने दुनू परानी कहुना जीब लेब, धिया-पुताकेँ ओते पढ़ा-लिखा दइये देलिऐ जे अपना पैरपर ठाढ़ भऽ दिवस गुदस कऽ रहल अछि। मुदा...।”

दयानन्दक सोझ-साझ विचारो आ काजो देखि मन मानियेँ रहल छल जे एक पिताक जे दायित्व होइ छैन ओ इमनदारीसँ दयानन्द निमाहबे केने छैथ, तखन कनैक नौबत किए? कोनो उपाय (रस्ता) नहि देखि बजलौं-

“दयानन्द, आइ परिवारमे शुभ लग्न आएल अछि तँए कानू नहि। हँसीक दिन छी हँसू।”

मुदा मन हरखित तखन ने हँसीक गीत। जँ मने बेपिरीत तखन सुरीति गीत केना निकलत। दयानन्द हमर बातमे की देखलैन आ की सुनलैन से किछु बजबे ने केलाह जे बुझितौं। मुदा नजैर गरा कऽ

देखए जरूर लगला। तैबीच घरवारी दिससँ आग्रह भेल जे आब पंच सभ भोजन करए बैइसै जाइ जाउ।

आठ दिनसँ ने खाइक ठेकान रहल आ ने सुतैक, तँए मन भँसियाइत सेहो रहबे करए। दयानन्द लगसँ उठि पंचक पतियानीमे जा कऽ बैसलौं।

❑ शब्द संख्या : 2286, तिथि : 19 फरवरी 2019

Notes